ऑडिट दिवस विशेषांक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बयालीसवां अंक (अक्टूबर–दिसम्बर, 2022)



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124



उप–राष्ट्रपति महोदय द्वितीय आडिट दिवस पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बयालीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका

(अक्टूबर–दिसम्बर, 2022)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124



सरकारी कामकाज हिंदी में करना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे आपको लगने लगेगा ये तो बहुत ही आसान है।





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बयालीसवां अंक (अक्टूबर–दिसम्बर, 2022)

अनुक्रमणिका

		पृ.सं.
	पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
	पाठकों के नाम संदेश	6
	आपके पत्र	7

लेख

1.	लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता *मेहरबान सिंह नेगी*	10
2.	ऑडिट वीर *वेद प्रकाश फोन्दणी*	16
3.	लेखापरीक्षा पैरा में उपयुक्त पैरा शीर्षक का महत्व *सुश्री आरती शर्मा*	18
4.	आडिट दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता *बी.एस. चौहान*	20
(i)	आडिट दिवस पर पुरस्कृत हिंदी निबंध	
(1)	श्री सारंग मुकेशभाई पटेल – प्रथम	22
(2)	सुश्री साक्षी जैन – द्वितीय	24
(3)	सुश्री माधुरी चंद्रकर – तृतीय	26
(ii)	आडिट दिवस पर पुरस्कृत अंग्रेजी निबंध	
(1)	श्री हर्ष – प्रथम	28
(2)	श्री अंकेश – द्वितीय	30
(3)	श्री केथावथ कुमार नाइक – द्वितीय	32
(4)	श्री ब्रह्मभट्ट योगीराज हितेश कुमार – तृतीय	34
5.	लेखापरीक्षा तथा उसका महत्व *सुश्री सं.ग. श्रीमती*	36
6.	हिंदी के लिए सकारात्मक भावना की आवश्यकता *विनोद कुमार शर्मा*	39

		पृ.सं.
7.	आजादी का अमृत महोत्सव : स्वप्न और चुनौतियाँ *डॉ. लाखा राम*	41
8.	'वीरबाला तिलू रौतेली' – पुस्तक समीक्षा *हीरा बल्लभ भट्ट*	45
9.	जीवन में सफलता के लिए ध्यान देने योग्य बातें *सुश्री मीना भारद्वाज*	49
10.	आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान *महेश एम. जयसिंघानी*	53
11.	लोकतंत्र (Democrary) : एक आदर्श विचार *संदीप कुमार*	55
12.	मोटा अनाज (मिलेट्स) *श्रीमती मोनिका चौहान*	58
13.	केदारनाथ व अन्य केदारों के दर्शन *ललित कुमार वर्मा*	60
14.	चेहरे..... *सुश्री वंदना एस*	68
	कहानी	
15.	आशीर्वाद *सुश्री सोनिया बाफिला*	72
16.	मनसुख का दुर्भाग्य *श्रीमती राजकुमारी शर्मा*	74
17.	अनुभूति *बी.एस. चौहान*	78
	कविताएँ	
18.	इस समय में उस समय की बात नहीं *सुश्री पूनम शर्मा*	80
19.	चलो कुछ पेड़ लगायें *कुमार भास्कर*	81
20.	गजल *धर्मवीर भारती*	82
21.	महंगाई *सुश्री मीना कुमारी*	83
22.	सदाचार *डॉ. प्रवीण सोनी*	84
23.	मेरा पेट मेरी शान *आकाश त्रिवेदी*	85
24.	आज़ादी की कहानी *नवीन 'एकान्त' दैया*	86
	यात्रा वृत्तांत	
25.	आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग–5) *कमलजीत सिंह रामुवालिया*	87

स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ बयालीसवां अंक
(अक्टूबर–दिसम्बर, 2022)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री रीमा प्रकाश
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

रचना चयन समिति

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी

सुश्री रेखा
सहायक प्रशासन अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
जी–194, सेक्टर–2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट– पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।



संपादकीय

विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का 142वां (एक सौ बयालीसवां) अंक आपके कर कमलों में है। इस पत्रिका से जुड़े विभागेत्तर व विभागीय रचनाकारों ने अपने नवीनतम लेखों, कहानियों व कविताओं के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचार आप तक पहुंचाने का प्रयास किया है। आशा है आप इन रचनाओं से लाभान्वित होंगे।

हमारा सदैव यह प्रयास रहा है कि पत्रिका प्रकाशन द्वारा निहित लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति हो तथा पत्रिका की गुणवत्ता बनी रहे। हम यथा सम्भव नए रचनाकारों की नवांकुरित रचनाओं को स्थान देकर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। कुछ रचनाकारों की नव रचनाओं को पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी पंक्तिबद्ध कर दिया गया है।

हमारा यह भी प्रयास रहता है कि पत्रिका में सम्मिलित लेख, कहानियां, कविताएं आदि प्रबुद्ध पाठकों की रूचि के अनुरूप हों। रचनाकार भी जिस तत्परता और निष्ठा से बिना किसी स्वार्थ के जो अपना योगदान देते हैं, वह भी सराहनीय हैं। मुख्यालय की पत्रिका होने के नाते हम सबका यह दायित्व है कि इस पत्रिका में सम्मिलित समस्त सामग्री और इसकी रूपरेखा ऐसी हो जो दूसरे कार्यालयों के लिए एक मिसाल बन सके ताकि वो इसका अनुसरण कर सकें और मैं समझता हूँ कि पत्रिका परिवार, और सभी रचनाकार अपने इस दायित्व को बखूबी निभा रहे हैं।

आप जानते हैं कि विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी पढ़ाई जाती और हिंदी जानने वाले विदेशी नागरिकों की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। हिंदी फिल्मों, गीतों, संगीत, कला, योग व संस्कृति ने भी विदेशियों को आकर्षित किया है। आज हर क्षेत्र में हिंदी का अपना एक बड़ा बाजार है जिससे युवाओं को इस क्षेत्र में रोजगार के भी विभिन्न अवसर मिल रहे हैं।

'आपके पत्र स्तम्भ में पाठकों की प्रतिक्रिया हिंदी के पठन–पाठन में पाठकों की बढ़ती अभिरूचि के संकेतकों के साथ–साथ राजभाषा के प्रति अथाह प्रेम व राष्ट्रीय चिंतन का द्योतक है। आपकी दक्ष लेखनी से निकली समालोचनात्मक भाषा शैली, शब्दों का चयन व अपनी भाषा में अभिव्यक्ति की कुशलता सराहनीय है। इसी स्तम्भ में जहाँ एक ओर हम यह निर्धारित करते हैं कि किस प्रकार की कविताएं, कहानियां, लेख आदि पाठकों को अच्छे लगते हैं वहीं दूसरी ओर आपके पत्रों में समाहित शब्दों में सम्मिलित भावों से रचनाकारों को निरंतर ऊर्जा भी मिलती है। अतः हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि पत्रिका में पाठकों और लेखकों की रूचि निरंतर बढ़ती रहे।

आपका शुभाकांक्षी
भवानी शंकर
प्रधान संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम संदेश

प्रिय पाठकवृन्द,

त्रैमासिक गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ बयालीसवां अंक आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे आत्मीय आनन्द की अनुभूति हो रही है।

हमें अपनी वस्तुस्थिति इतिहास, भूगोल, संस्कृति और अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने में समर्पित भाव से काम करना है। इन्हीं कार्यों में राजभाषा हिंदी व भारतीय भाषाओं को भी ससम्मान आगे बढ़ाना है।

अखिल भारतीय स्तर की इस पत्रिका के लिए सामग्री समूचे भारत में फैले विभाग के क्षेत्रीय कार्यालयों में वांछनीय ही नहीं वरन् अपेक्षित है – इसी में इसका प्रतिनिधित्व निहित है। हमारे विभाग में प्रतिभा की कमी नहीं है जिसके कारण हम विवशता महसूस करें। विवशता तो मात्र पर्याप्त मात्रा में स्तरीय अपेक्षित सामग्री न मिल पाने की है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि पूरा विश्वास है कि आप सब मनसा–वाचा–कर्मणा से इसके उत्थान में निःस्वार्थ सहयोग देंगे।

आप पत्रिका के स्वरूप से परिचित हैं। अतः आशा करता हूँ कि उसके अनुरूप उपयुक्त स्तरीय सामग्री अर्थात लेख, कहानी, कविता आदि समय पर उपलब्ध कराकर पत्रिका की नियमितता, निरंतर व स्तरीयता बनाए रखने में अपना सतत योगदान देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

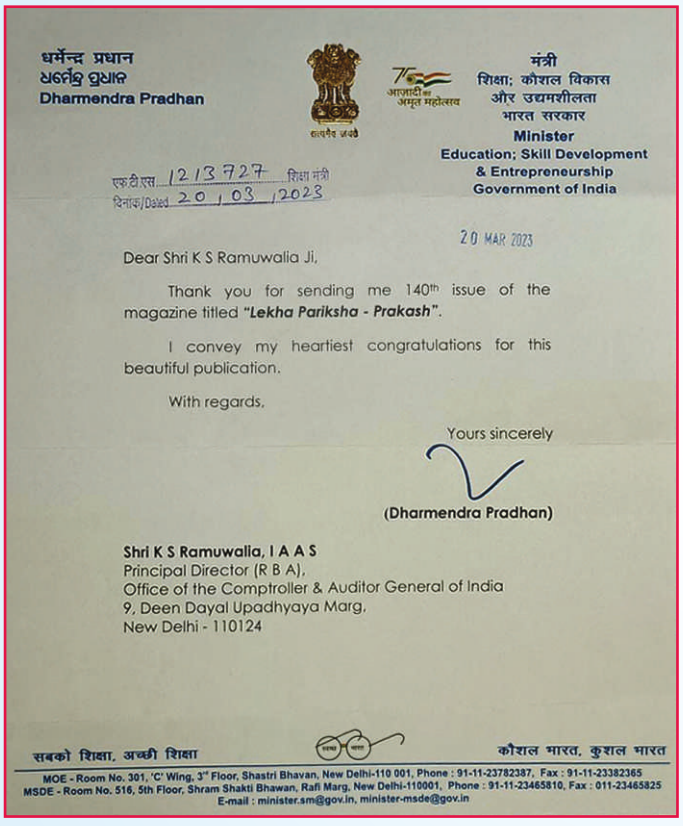
आपका शुभाकांक्षी

(अनिल कुमार पिलानी)

संपादक

नई दिल्ली





धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development & Entrepreneurship
Government of India

एफ.ई.एस. 213727 शिक्षा मंत्री
दिनांक/Dated 20/03/2023

20 MAR 2023

Dear Shri K S Ramuwalia Ji,

Thank you for sending me 140th issue of the magazine titled **"Lekha Pariksha - Prakash"**.

I convey my heartiest congratulations for this beautiful publication.

With regards.

Yours sincerely

(Dharmendra Pradhan)

Shri K S Ramuwalia, I A A S
Principal Director (R B A),
Office of the Comptroller & Auditor General of India
9, Deen Dayal Upadhyaya Marg,
New Delhi - 110124

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा — कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उक्त अंक में बाबासाहेब आंबेडकर जी के सभी पहलुओं से अवगत करवाया है, इसके माध्यम से बाबासाहेब आंबेडकर जी के बारे में और उनसे जुड़े जीवन के हर पहलू के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। पत्रिका के इस अंक को दिया गया वाक्य 'एक ऐसे युग पुरुष जिन्हें आप नहीं जानते होंगे' इस अंक को चरितार्थ करता है कि वाकई, सही अर्थों में पत्रिका का यह अंक बाबासाहेब आंबेडकर जी के जीवन के उन सभी अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालता है, जिनसे अभी तक हम वास्तव में परिचित नहीं थे। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर अंकित बाबासाहेब जी का चित्र भी सुंदर है, जो पत्रिका के मुख पृष्ठ को बहुत ही आकर्षक बनाता है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर अंकित दीक्षा भूमि नागपुर का चित्र भी सुंदर है, जहाँ बाबासाहेब ने अपने लाखों अनुयायियों के साथ 14 अक्तूबर 1956 को बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। सदी के इस महापुरुष, समाज में सभी मानवों को समानता के आधार पर एक मानने वाले महानायक को कोटि–कोटि नमन। समाज में सामाजिक उत्थान के इस जनक को सदैव ही याद करने के साथ–साथ उन्हें एक प्रेरणास्रोत के रूप में भी सदैव ही जाना जाएगा। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
गुजरात, राजकोट

पत्रिका के आवरण पृष्ठ तथा इसमें समाहित छाया चित्र अत्यंत आकर्षक है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक जो बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर को समर्पित

विशेषांक है, की एक प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु सादर धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ तथा इसमें समाहित छाया चित्र अत्यंत आकर्षक है। साथ ही समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं विषय अनुकूल हैं, विशेषतः, रेहान फजल की कवर की कवर स्टोरी 'ऐसे युगपुरुष बाबासाहेब आंबेडकर, जिन्हें आप नहीं जानते' अत्यंत प्रशंसनीय हैं। यह कार्यालयीन पत्रिका का हिंदी के प्रयोग में वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसके सफल प्रकाश हेतु शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा पूर्व तट रेलवे,
ओडिशा, भुवनेश्वर

इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं।

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ चालीसवां अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं। श्री रेहान फजल की 'बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर जिन्हें आप नहीं जानते होंगे', 'एक आइकन का पुनरुत्थान', 'दुनिया जब मार्टिन लूथर किंग की चर्चा करें', सुश्री रेखा की 'नहीं जानते होंगे भारत के आर्थिक विकास में डॉ. आंबेडकर का आधारभूत योगदान' एवं श्री परमजीत सिंह की 'कैसे दी बाबा साहेब ने श्रमिकों को इज्जत की जिंदगी' रचनाएं विशेषरूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
पंजाब, चण्डीगढ़

युगपुरुष बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर को समर्पित यह अंक अत्यंत ही ज्ञानवर्धक है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक की ई–प्रति लिंक के माध्यम से प्राप्त हुई है, तदर्थ धन्यवाद। युगपुरुष बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर को समर्पित यह अंक अत्यंत ही ज्ञानवर्धक है। सभी रचनाएं डॉ. आंबेडकर के संपूर्ण जीवन की झांकी प्रस्तुत करती है। श्री रेहान फजल की प्रस्तुति पत्रिका की कवर स्टोरी 'ऐसे युगपुरुष बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर जिन्हें आप नहीं जानते होंगे' उनके जीवन के कुछ ऐसे पहलुओं से परिचित कराती है जिससे अधिकांश लोग अनभिज्ञ हैं। सुश्री पूनम रानी की प्रस्तुति 'वह महिला जिसके बलिदान ने 'भीमराव' को डॉ. आंबेडकर में बदल दिया – रमाबाई', बाबासाहेब के व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डालती है। श्री हीरा बल्लभ भट्ट की प्रस्तुति 'भारत रत्न डॉ. आंबेडकर ज्ञान के अथाह समुंदर' में बाबासाहेब द्वारा रचित रचनाओं के विवरण दिये गये हैं जोकि बाबासाहेब को एक विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। डॉ. आंबेडकर के विशाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पत्रिका के रूप में सहेजने हेतु पत्रिका के संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। रचनाओं के साथ प्रकाशित ऐतिहासिक छायाचित्र भी अत्यंत प्रभावपूर्ण हैं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

युगदृष्टा, उदारवादी एवं बौद्धिकता और बहुआयामी प्रतिभा के धनी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पर केन्द्रित विशेषांक अत्यंत ज्ञानप्रद है।

त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक के ई–संस्करण की प्राप्ति हुई। पत्रिका के सफल प्रकाशन पर आपको तथा संपादक मंडल को बहुत–बहुत बधाई। हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय के मुख पृष्ठ के रूप में विद्यमान है। इसमें समाहित समस्त रचनाएं सारगर्भित, समसामयिक एवं नवीन पहलुओं से आबद्ध और ज्ञान–विज्ञान से सिक्त हैं जो हमें विभिन्न प्रकार से अभिप्रेरित करती है। पत्रिका का कलेवर अत्यंत ग्राह्य एवं आकर्षक है। युगदृष्टा, उदारवादी एवं बौद्धिकता और बहुआयामी प्रतिभा के धनी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पर केन्द्रित विशेषांक अत्यंत ज्ञानप्रद है। आशा है, इसी प्रकार आगे भी यह पत्रिका हम सभी को प्रेरित और आह्लादित

करते हुए राजभाषा के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने का माध्यम बनेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला

अब तक की प्रकाशित अंकों से इतर यह अंक बिल्कुल ही अलग विषय हम लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें ई–संस्करण अंक की प्राप्ति हुई। अब तक की प्रकाशित अंकों से इतर यह अंक बिल्कुल ही अलग विषय हम लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है। यह अंक इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस अंक में एक ऐसे व्यक्ति के जीवन की चर्चा की गई है जिन्होंने भारत की दशा और दिशा बदलने के लिए अपना पूरा जीवन झोंक दिया। पत्रिका में प्रकाशित बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के जीवन के विभिन्न आयाम ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेषतौर पर सिर्फ पानी ही नहीं, 'इंसान होने के हक' की लड़ाई : महाड़ सत्याग्रह, कैसे दी बाबासाहेब ने श्रमिकों को इज्जत की जिंदगी श्रम कानून सुधारों में उनका योगदान, क्यों भारतीय महिलाओं को डॉ. आंबेडकर का आभारी होना चाहिए, ऐसे युगपुरुष बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर जिन्हें आप नहीं जानते होंगे, पंच तीर्थ, भारत रत्न डॉ. आंबेडकर ज्ञान के अथाह समुंदर आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
मध्य प्रदेश, भोपाल

इस अंक में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को सजीवता से चित्रित किया गया है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। युगपुरुष डॉ. आंबेडकर को समर्पित पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका का प्रत्येक अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अंक में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को सजीवता से चित्रित किया गया है। संक्षेप में यह डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की संक्षिप्त जीवन है जो बहुत ही ज्ञानवर्धक है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यशस्वी वक्ता, ओजस्वी लेखक एवं विपुल प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। इस अंक में सम्मिलित सभी लेख हमारे संविधान निर्माता के जीवन के ऐसे पहलुओं/घटनाओं से अवगत कराते हैं जिनसे हम अभी तक अनभिज्ञ थे। उनके जीवन से जुड़ी हर छोटी–बड़ी घटना का वर्णन किया गया है। इस अंक को रोचक एवं आकर्षक बनाने के लिए गहन अनुसंधान किया गया है, साथ ही चित्रकारी भी उत्कृष्ट है। सच्चे अर्थों में हमारे संविधान निर्माता को श्रद्धांजलि है। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता
(लेखापरीक्षा की भूमिका)



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड 191 (एफ 2), सेक्टर 4, वैशाली
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश–201010

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश ही नहीं बल्कि लोकतंत्र की जननी है। लोकतांत्रिक राष्ट्रों के लोक प्रशासन पर मुख्यतः बजट आकलन, सरकारी नीतियों के अंतर्गत विभिन्न विकास योजनाओं का निर्माण, कार्यान्वयन, नियत लक्ष्यों की प्राप्ति, सामान्य शासकीय कार्यों का निष्पादन, राष्ट्र की कानून व सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने, विदेश नीति, आदि की जिम्मेदारी होती है।

लोकतंत्र – विश्व के देशों का शासन पूर्वकाल में राजतंत्र अर्थात राजाओं की इच्छा से चलता था। आज कई देशों में लोकतंत्र है जिसमें आम जनता का, आम लोगों के लिए तथा आम लोगों के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासन होता है। सरकारी कार्यों का जिम्मेदारी पूर्वक और पारदर्शिता से निष्पादन के लिए संबंधित विभाग के प्रशासनिक अधिकारी संसद/विधान पालिका के प्रति उत्तरदायी होते हैं। लोकतंत्र में संसद/विधान पालिका जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। यही लोकतंत्र होता है।

विभागीय स्तर पर समस्त सरकारी कार्यों के परिचालन हेतु एक निर्धारित प्रक्रिया होती है। विकास योजनाओं और अन्य प्रशासकीय कार्यों के किफायती, कुशलता एवं प्रभावकारिता सहित ससमय निष्पादन के लिए प्रशासनिक अधिकारी अपने अधीनस्थ अधि–कारियों से प्राप्त सामयिक प्रगति प्रतिवेदनों, निरीक्षणों तथा प्रगति की समीक्षा बैठकों के माध्यम से नियंत्रण रखते हैं। यदि परियोजना कार्यान्वयन के सामयिक प्रतिवेदनों के प्रशासनिक स्तर पर समीक्षा के दौरान अथवा मध्यावधीय समीक्षा में ऐसा प्रतीत हो कि योजनाओं के कार्यान्वयन में किसी प्रकार की ढ़ील बरती जा रही है या किसी प्रकार के सुधारात्मक उपाय करने की आवश्यकता है तो यथाशीघ्र समुचित दिशानिर्देशों के साथ सभी स्तरों पर यथोचित कदम उठाए जाते हैं तथा उच्च स्तर पर प्रगति की सामयिक मॉनीटरिंग तथा समीक्षा की जाती है।

प्रायः हर मंत्रालय/विभाग का आंतरिक नमूना लेखापरीक्षा एकांश भी अपने सांवधिक निरीक्षणों के दौरान विभागीय कार्मिकों द्वारा किए गए कार्यों में बरती गई लेखांकन आदि की त्रुटियों को उजागर

करता है और संबंधित प्रशासनिक अधिकारी उन टिप्पणियों पर आवश्यक उपचारात्मक कार्यवाही करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ खुफिया विभाग, अन्य सरकारी संस्थाएं और सर्वोच्च लेखापरीक्षा विभाग उनके कामकाज तथा लेखा–जोखा पर निगरानी रखते हैं।

लोक प्रशासन – लोक प्रशासन दो शब्दों का एक शब्दपुंज है जिसका अर्थ है जनता का प्रशासन। लोकतांत्रिक सरकारों का समस्त सरकारी कार्य विभिन्न विभागों में बंटा होता है। अपने विभाग के अंतर्गत ग्राम सभा, ग्राम पंचायक, जिला पंचायत, नगर पालिका, महानगर पालिका, नगर निगम व राज्य तथा केंद्र सरकार के सरकारी विभागों के द्वारा किए जाने वाले लोक महत्व के कार्यों के लिए संबंधित विभाग के प्रशासनिक अधिकारी जवाबदेह होते हैं। इसके अलावा कुछ अर्द्ध सरकारी विभाग/निगम/उपक्रम/परिषद भी सरकारी खर्च पर या सरकारी अनुदान से कुछ योजनाओं में अपनी भागीदारी निभाते हैं। आजकल तो सरकार और जनता की सहभागिता से भी कुछ सरकारी कार्य निष्पादित किए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में संबंधित विभागों के अतिरिक्त लेखापरीक्षक की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

पारदर्शिता – पारदर्शिता का अर्थ यह है कि समस्त सरकारी काम विधिसम्मत, भ्रष्टाचार रहित एवं लोकतांत्रिक तरीके से ससमय प्रभावकारिता से सम्पन्न हों। सूचना क्रांति के युग में अंतरनेत्र पर विकास परियोजनाओं की सामयिक प्रगति अंकित कर दी जाती है ताकि समस्त पणधारी कार्यान्वयन की वस्तुस्थिति से अवगत हो सकें।

सूचना प्रसारण की क्रांति के युग में लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ – प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र) व दूसरे समाचार माध्यम भी लोक महत्व के विकास कार्यों पर अपनी पैनी दृष्टि रखते हैं तथा इन माध्यमों से प्राप्त डाटा व अन्य जानकारी भी लेखापरीक्षा विभाग एकत्र करता है और उसे विभागीय सांवधिक लेखापरीक्षा के दौरान उपयोग में लाता है। कुछ सरकारी विभाग जो योजनाओं को कार्यान्वित करते हैं उनके संबंध में लेखापरीक्षा विभाग के पास डाटा होता है कि अमुख विभाग आमतौर पर किस प्रकार की गलतियां दोहराता है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकारों के आय–व्यय का लेखा–जोखा भी भारतीय लेखापरीक्षा व लेखा विभाग रखता है। जहां लेखापरीक्षक को अनियमितता की आशंका हो उन आंकड़ों को साथ ले जाता है ताकि लेखापरीक्षा के प्रयासों को सही दिशा में लगाया जा सके। योजनाओं आदि पर सबसे अधिक खर्च करने वाले विभागों की लेखापरीक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

सामान्यतः लेखापरीक्षक भी पुलिस कर्मियों की तरह शक्की स्वभाव के होते हैं और दूसरों पर आसानी से विश्वास नहीं करते हैं। पुलिस के तंत्र में कुछ अकार्मिक इनफॉर्मर होते हैं जो उन्हें क्षेत्र में होने वाली असामाजिक घटनाओं से अवगत कराते रहते हैं। वे प्राप्त जानकारी को गोपनीय रखते हैं, कुछ सूचना देने वालों को तो पारिश्रमिक भी देते हैं और उचित कार्यवाही करते हैं। आजकल जब लेखापरीक्षक दल लेखापरीक्षा एकांश में जांच के लिए जाता है तो उस एकांश के कुछ ईमानदार और जागरूक कार्मिक मिल जाते हैं जो उस विभाग में होने वाली

अनियमितताओं की सूचना उन्हें दे देते हैं और इन पर भी ध्यान दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त भारत में सूचना अधिकार अधिनियम पारित होने के बाद आर.टी.आई. कार्यकर्ता संबंधित विभागों से सूचना प्राप्त करते रहते हैं अथवा संसद सदस्य/विधान परिषद के सदस्य संसद/विधान मंडल में तारांकित या अतारांकित प्रश्नों के माध्यम से प्रश्न पूछते रहते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि समस्त नागरिक और जन प्रतिनिधि जागरूक हों।

सरकारी तंत्र के लिए यह आवश्यक है कि विभागीय प्रक्रिया, आंतरिक नियंत्रक प्रणाली, आंतरिक लेखापरीक्षा एकांश, सतर्कता विभाग और लेखापरीक्षा की कार्य प्रणाली सुदृढ़ हो। ये सब संस्थाएं संसद के प्रति भी उत्तरदायी होते हैं तथा संसद द्वारा वित्तीय नियंत्रण और ससमय कार्यान्वयन में सहायता प्रदान करते हैं। लोक लेखा समिति और लोक उपक्रम समिति इस कार्य में संसद/विधायिका की मदद करती हैं। यदि लेखापरीक्षक अपने निरीक्षण के दौरान विभागीय प्रक्रिया, नियमों, आंतरिक नियंत्रण प्रणाली में कमी पाता है तो उसे भी अपनी रिपोर्ट में अंकित करता है ताकि समुचित कदम उठाए जा सकें।

लेखापरीक्षा – लेखापरीक्षा विभाग एक स्वतंत्र विभाग है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा–परीक्षक एक शक्तिशाली अधिकारी होता है जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है और वह राष्ट्रपति के प्रति जिम्मेदार होता है। कहते हैं कि लेखापरीक्षक करदाताओं का मित्र होता है और लेखापरीक्षा का कार्य न्याय के समकक्ष होता है। लेखापरीक्षक ऑडिट करते समय नियमों की व्याख्या करता है। विभागीय प्रक्रिया अथवा आंतरिक नियंत्रण प्रणाली में यदि कमी पाता है तो अपनी रिपोर्ट में सम्मिलित करता है ताकि इस विषय में उचित कार्यवाही हो। कई बार लेखापरीक्षक की रिपोर्ट के आधार पर इन विषयों पर आवश्यक संशोधन हुए हैं।

लेखापरीक्षा का कार्य सरकारी आय की प्राप्ति या खर्च हो जाने के बाद प्रारम्भ होता है। यह कार्य एक प्रकार से विभाग के आय–व्यय के दस्तावेजों, वाउचरों तथा लेखों का पोस्टमार्टम जैसा कार्य है। लेखापरीक्षा विभाग कई तरह से और कतिपय स्तरों पर लेखापरीक्षा व लेखाओं का प्रमाणन करता है। कुछ संस्थाओं का ऑडिट अन्य ऑडिटर करते हैं लेकिन भारत का सर्वोच्च लेखापरीक्षा विभाग उनके लेखाओं का सुपर इम्पोज्ड ऑडिट करता है अथवा अन्य लेखापरीक्षक की रिपोर्ट पर टिप्पणी सम्मिलित करता है। लेखापरीक्षक लोक लेखा समिति व लोक उपक्रम समिति के माध्यम से वित्तीय नियंत्रण में संसद/विधायिका की मदद करता है।

लेखापरीक्षक अपनी टिप्पणियों के लिए स्वतंत्र होता है। जहां तक लेखापरीक्षक के कार्य क्षेत्र का संबंध है वह लेखापरीक्षा का कार्य हाथ में लेने से पहले अपनी संतुष्टि के लिए परियोजना, इसके लक्ष्यों व कार्यान्वयन योजना के दस्तावेजों के गहन अध्ययन के अतिरिक्त जिन बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित करता है उनमें से निम्न प्रमुख हैं –

1. क्या विभागीय कार्यप्रणाली सुदृढ़ है और कार्मिकों व अधिकारियों द्वारा इसका पालन किया जा रहा है;

2. क्या संबंधित नियमों, अधिनियमों और विनियमों का पालन हो रहा है;

3. क्या कार्यान्वयन की मॉनीटरिंग सही तरह से की जा रही है;

4. क्या आंतरिक नियंत्रण प्रणाली सुदृढ़ और प्रभावी है;

5. क्या समस्त विभागीय गति–विधियों में समन्वय है तथा सभी एकांश अपनी जिम्मेदारियों का सही तरह से तथा समय के अंदर निर्वाह कर रहे हैं;

6. क्या विभिन्न अधिकारियों व आंतरिक लेखापरीक्षा आदि द्वारा उठाए गए प्रश्नों/टिप्पणियों पर समुचित कदम उठाए जा रहे हैं; और

7. क्या कार्यान्वयन प्रभावकारी है तथा सामयिक लक्ष्यों की प्राप्ति हो रही है?

लेखापरीक्षक यदि स्थानीय लेखा परीक्षा के दौरान गणना आदि में या इन प्रक्रियाओं में कमी पाता है तो गहराई में जाता है और अपने धारदार हथियारों जैसे लैपटॉप, लेखनी और टूलकिट में लाई गई सामग्री को उपयोग में लाता है तथा आंकड़ों का विश्लेषण करता है लेखापरीक्षा दल नमूना लेखापरीक्षा के दौरान पाई गई कमियों के साक्ष्य एकत्रित करता है तथा उन्हें अपनी स्थानीय लेखापरीक्षा की टिप्पणियों में सम्मिलित करता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय महत्व की योजनाओं की समीक्षा लेखापरीक्षा अपनी ई.सी.पी.ए. रिपोर्ट में सम्मिलित करता है। लेखापरीक्षक अपनी टिप्पणियों के लिए साक्ष्य एकत्र करता है तथा साक्ष्यों के आधार पर की गई अपनी टिप्पणियों के लिए स्वतंत्र होता है।

इसके अतिरिक्त नमूना लेखापरीक्षा में ऐसी भी जांच करनी होती है कि विकास कार्यों के निष्पादन में कई प्रकार के कार्यों में समन्वय की आवश्यकता होती है ताकि समयबद्ध तरीके से कार्यान्वयन सुनिश्चित हो। उदाहरण के लिए मशीनों को स्थापित करने से पूर्व कार्मिकों को समुचित प्रशिक्षण दिया जाता है। कहीं ऐसा न हो कि मशीनें तो स्थापित हो गई पर प्रशिक्षित कर्मियों की अनुपस्थिति में विकास परियोजना प्रारम्भ होने में विलम्ब हो रहा है। इसी प्रकार जहां समन्वय की आवश्यकता है उन कार्यों को समन्वय से न किया जा रहा हो तो इसे भी टिप्पणियों में सम्मिलित करता है।

संविदा (ठेके) पर करवाए जाने वाले कार्यों के संबंध में कान्ट्रैक्ट की शर्तों का सावधानी से अध्ययन होता है। पी.पी.पी. मॉडल पर किए जाने वाले कार्यों की लेखापरीक्षा में योजना को गहराई से समझने व ध्यान देने की आवश्यकता है। लम्बी अवधि के ठेकों के संबंध में एक शर्त यह अवश्य होनी चाहिए कि सरकार यदि आवश्यक समझे तो कान्ट्रैक्ट तोड़ भी सकती है ताकि सरकार का इस पर मातहत रहे।

भारत सरकार ने एक नीति अपनाई है जिसमें सबका साथ, सबका प्रयास, सबका विकास और सबका विश्वास के मूल मंत्र को अपनाया है। सर्वविदित है कि सरकार ने आर्थिक विकास के लिए लक्ष्य नियत किए हैं ताकि भारत एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर सके। सरकारी लेखा–जोखा की विश्वसनीयता के लिए अन्य संस्थाओं के साथ लेखापरीक्षा का प्रयास भी सम्मिलित है जो सरकारी लेखाओं पर आम जनता की विश्वसनीयता बढ़ाता है।

लोक महत्व की सरकारी विकास योजनाओं को सुचारू रूप से परिचालन के लिए मूल जिम्मेदारी प्रशासनिक अधिकारियों की होती है लेकिन इसमें दूसरे विभाग भी अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं

और लेखापरीक्षक यह सुनिश्चित करता है कि करदाताओं से प्राप्त धन का उपयोग सामान्य सरकारी कार्यों अथवा विकास कार्यों में मितव्ययी तरीके से एवं बुद्धिमता से किया गया है।

भारत के संविधान के प्रावधानों, अधिनियमों व नियमों के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों के अनुसार सर्वोच्च लेखापरीक्षा विभाग भी एक महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली विभाग है।

आजकल भारत में कई प्रकार की विकास योजनाएं चल रही हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि विकास योजनाओं की संख्या और वर्षानुवर्ष उन पर होने वाले व्यय में वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय महत्व के विकास कार्यों के लिए निर्मित योजनाओं और दूसरे सरकारी कार्यों में होने वाले बढ़ते व्यय पर नियंत्रण रखने के लिए तथा योजनाओं का समयबद्ध व प्रभावकारिता से कार्यान्वयन के प्रति लेखापरीक्षक की भूमिका बढ़ गई है। अतएव इस दिशा में और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है और अपने प्रयासों को इस दिशा में बढ़ाने की भी आवश्यकता है।

वैसे तो भारतीय लेखापरीक्षा विभाग में सक्षम असैनिक जनरल के अधीन अनुभवी लेखापरीक्षकों की एक फौज है जिसने भारत सरकार, राज्य सरकारों व अन्य संस्थाओं की लेखापरीक्षा में अपनी गहन दृष्टि का परिचय दिया है। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ की लेखापरीक्षा में भी अपनी लेखनी की धार का अच्छा परिचय दिया है और धाक जमाई है। लेखापरीक्षा विभाग अपने लेखापरीक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है और विश्व के अनेक देशों के लेखापरीक्षकों को भी प्रशिक्षण देता है तथा अपना अनुभव भी बांटता है। लोक महत्व की विकास योजनाओं से संबंधित कुछ ऐसी योजनाएं हैं जिनकी लेखापरीक्षा के लिए सूचना प्रणाली व अन्य तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है। ऐसी योजनाओं की लेखापरीक्षा के लिए कुशल लेखापरीक्षकों की आवश्यकता होती है। स्वाभाविक है कि लेखापरीक्षा विभाग को इस ओर और भी अधिक ध्यान देना होगा ताकि सरकारी धन के दुरुपयोग पर पूर्ण नियंत्रण हो सके।

आजकल यह देखने में आया है कि भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रखने वाली संस्थाएं कर्तव्यों के पालन में पूरे जोर–शोर से जुटी हुई हैं तथा अपनी उपस्थिति का एहसास भी करा रही है जिसमें पुलिस विभाग, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो, प्रवर्तन निदेशालय, आदि सम्मिलित हैं। लेखापरीक्षा विभाग भी कहां पीछे रहने वाला है।

एक आम धारणा है कि जैसे भ्रष्ट आचरण करने वाले पुलिस से डरते हैं वैसे ही खजाने में अपने तरीके से डाका डालने वाले भ्रष्ट कार्मिक भी लेखापरीक्षकों से डरते होंगे। वे यह भी भली भांति समझते हैं कि इन विभागों की आवश्यकता है। यह सही बात है। वे ऐसा समझते हैं कि ये विभाग स्वयं भी खर्च करने वाले विभाग हैं लेकिन उनकी धारणा गलत है। यदि इस संबंध में आपकी धारणा भी सामान्य लोगों की तरह है तो उसे ठीक करने की आवश्यकता है।

वैश्विक स्तर पर प्रायः यह माना जाता है कि लेखापरीक्षा विभाग का खर्च सभी लेखा परीक्षितियों के कुल खर्च का 1 से 1.5 प्रतिशत तक होना चाहिए जो एक आदर्श स्थिति है। लेखापरीक्षा विभाग

लेखापरीक्षिती एकांश के लेखा–जोखा का लगभग 10 प्रतिशत तक नमूना जांच करता है। लेकिन यदि गलतियों की संभावना अधिक हो तो गराई में जाता है। भारत में इस पर खर्च बहुत कम पाया गया है। भारतीय लेखापरीक्षा विभाग पर जितना सरकारी खर्च होता है उससे कई अधिक धन राशि को विभाग सरकारी खाते में जमा करवाता है या बचता है। अतः यह विभाग सरकार पर बोझ नहीं है क्योंकि यह विभाग लेखापरीक्षिती एकांशों पर होने वाले खर्च का केवल लगभग 0.5 प्रतिशत से भी कम खर्च करता होगा। लेखापरीक्षा जिस प्रकार सरकार की सेवा करता है उसके कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निम्न हैं :

1. लेखापरीक्षा विभाग का लेखापरीक्षिती एकांश के कार्मिकों के मन में ऐसा भय होता है कि वे हिसाब–किताब में गड़बड़ी करने से डरते हैं।

2. लेखापरीक्षक की रिपोर्टों के आधार पर जो राशि कंपनियों, नागरिकों, ठेकेदारों, कर्मचारियों, आदि से प्रतिवर्ष उगाही जाती है उसकी मात्रा बहुत होती है। यहां तक कि लेखापरीक्षा विभाग पर साल भर में खर्च से भी अधिक राशि की प्राप्ति होती है।

3. लेखापरीक्षा विभाग यू.एन. ऑडिट से जो फीस लेता है उसकी राशि बहुत होती है।

4. लेखापरीक्षा विभाग कुछ परिषदों, लेखापरीक्षा एकांशों, आदि से लेखापरीक्षा फीस लेता है।

5. लेखापरीक्षा विभाग की अन्य आय।

6. नियम, कार्य प्रणाली, आंतरिक नियंत्रण प्रणाली, आदि के संबंध में टिप्पणियों के फलस्वरूप किए गए सुधार।

विभाग में अपने अनुभव के आधार पर जहां तक व्यक्तिगत राय का संबंध है तो मेरा मानना है कि नमूना लेखापरीक्षा का कार्य क्षेत्र यदि लगभग 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 या 20 प्रतिशत कर दिया जाय तो सरकार को लेखापरीक्षा के परिणामस्वरूप की जाने वाली वसूली के तौर पर बहुत अधिक लाभ प्राप्त होगा। इस नीति को चयनित लेखापरीक्षिती इकाइयों में प्रयोग के तौर पर भी अपनाया जा सकता है। इसके लिए या तो लेखापरीक्षकों को प्रोत्साहित किया जा सकता है या उनकी संख्या में वृद्धि की जा सकती है। मेरा अनुभव कहता है कि राजस्व लेखापरीक्षा जो लेखापरीक्षा अधिकारी रिसीप्ट ऑडिट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद करते हैं उन्हें एक वेतन वृद्धि मिलती है। यदि इसी प्रकार का प्रावधान सूचना प्रणाली लेखापरीक्षा के लिए भी हो जाय तो अच्छा रहेगा क्योंकि अब संगणकों का उपयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है तथा आगामी समय में ऐसे कर्मियों का योगदान महत्वपूर्ण होगा।

ऐसा विश्वास है और ऐसी आशा भी है कि लेखापरीक्षा विभाग राष्ट्र के विकास के लिए अपनी स्थापित उच्च परंपराओं के अनुक्रम में और भी प्रयत्नशील रहेगा तथा अपनी उसी सत्यनिष्ठ विश्वसनीयता एवं बढ़े प्रयासों के साथ भागीदारी का निर्वाह करता रहेगा एवं नए से नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। विभाग से ऐसी भी आशा है कि विकास परियोजनाओं की लेखापरीक्षा पर अतिरिक्त ध्यान देगा ताकि इन योजनाओं के ससमय, पारदर्शी व प्रभावकारी ढंग से कार्यान्वयन में अपनी बढ़ी हुई भूमिका का निर्वाह कर सके।

ऑडिट वीर
(प्रेरणा गीत)



वेद प्रकाश फोन्दणी, स.ले.प.अ.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय व्यय, नई दिल्ली–110002

मुख्यालय की सरपरस्ती में, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय, नई दिल्ली के प्रांगण में, दिल्ली के सभी लेखापरीक्षा तथा लेखा कार्यालयों एवं नोएडा स्थित आईसीसा केंद्र के लगभग 1500 अधिकारियों/कर्मचारियों की सहभागिता के साथ आयोजित – द्वितीय, अद्वितीय ऑडिट दिवस और ऑडिट सप्ताह समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत, दिनांक 20.11.2022 को 'वॉक फॉर ऑडिट अवेयरनेस' का संदेश लिए हुए एक विशाल व भव्य वॉकथॉन (WALKATHON) का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में, केन्द्रीय संस्कृति राज्य मंत्री, माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी की सक्रिय उपस्थिति काबिल–ए–गौर रही।

इस अवसर पर, आशुकवि श्री वेद प्रकाश फोन्दणी – जिन्होंने उक्त कार्यक्रम में मंच संचालन की भूमिका भी बखूबी निभाई – द्वारा कार्यक्रम वाले ही दिन प्रातः घर से कार्यालय आते–आते उक्त प्रेरक–गीत के प्रथम दो पद्यों की रचना कर, इसे कार्यक्रम में संचालन के दौरान बहुत ही जोशपूर्ण अंदाज में जब उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के मध्य गाया तो मानो समूचा कार्यालय प्रांगण वॉकथॉन हेतु जोश–ओ–खरोस से ओतप्रोत हो गया। अनंतर, श्री फोन्दणी ने तीन और पद्यों से इस प्रेरक गीत को पोषित कर, भारत भर के समस्त लेखापरीक्षा–वीरों/ऑडिट–वीरों को समर्पित करने के उद्देश्य से लेखापरीक्षा प्रकाश पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज दिया। गीतकार को इस प्रासंगिक, सार्थक एवं मधुर रचना के लिए बहुत–बहुत साधुवाद।

– संपादक

आओ संवारें देश की तकदीर हम।
लेखा अरु लेखापरीक्षा – वीर हम।।

लोकहित में सत्यनिष्ठा वाले हम
लोक–हिय में सुप्रतिष्ठा वाले हम।
अंत्योदय का लक्ष्य हासिल होने तक –
मिल सभी, अनथक चलाएं तीर हम।।
लेखा अरु लेखापरीक्षा – वीर हम

लोकधन पर कुनज़रों का काल हम
भरत–भारत–भारती का भाल हम।
चलो चलें करें जागरुक जन–मन सभी
आओ फैलाएं उजाला, धीर हम।।

लेखा अरु लेखापरीक्षा – वीर हम

चढ़ रहे, नित निखर, ऊंचे शिखर हम
छा रहे बन तेजोराशि प्रखर हम।
करें शिखर से शिखरों तक की यात्रा
अनवरत चलें तमस छाती चीर हम।।
लेखा अरु लेखापरीक्षा – वीर हम

नहीं, नहीं किंचित् नहीं हैं अधीर हम
हाँ, मगर बन जाएं ऐसी नजीर हम।
कर दें ऑडिट सकल 'जे एण्ड के' का भी
गर बना दें कलम को शमशीर हम।।
लेखा अरु लेखापरीक्षा – वीर हम

आओ करें कर्तव्यों से श्रृंगार हम
भारती का हृदय से सत्कार हम।
लेवें सभी प्रण, प्राण जब तक देह में –
"होने देंगें मैली नहीं तसवीर हम"।।
लेखा अरु लेखापरीक्षा – वीर हम



- *शिक्षा का परिणाम एक मुक्त रचनात्मक व्यक्ति होना चाहिए, जो ऐतिहासिक परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध लड़ सके।*
- *कोई भी जो स्वयं को सांसारिक गतिविधियों से दूर रखता है और इसके संकटों के प्रति असंवेदनशील है वास्तव में बुद्धिमान नहीं होता।*
- *यदि मानव दानव बन जाता है तो ये उसकी हार है, यदि मानव महामानव बन जाता है तो ये उसका चमत्कार है, यदि मनुष्य मानव बन जाता है तो ये उसकी जीत है।*



डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

लेखापरीक्षा पैरा में उपयुक्त पैरा शीर्षक का महत्व



सुश्री आरती शर्मा
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या. महानिदेशक लेखापरीक्षा
(कृषि, खाद्य व जल संसाधन)
नई दिल्ली–110002

हमारा गौरवशाली लेखापरीक्षा विभाग, प्रति वर्ष 16 नवंबर, ऑडिट दिवस के रूप में मनाता है। लेखापरीक्षा एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसमें एकत्र किए गए अभिलेखों की जांच किये जाने के बाद, उस जांच के निष्कर्ष को एक उपयुक्त लेखापरीक्षा पैरा का आकार देकर विकसित किया जाता है।

लेखापरीक्षा रिपोर्ट में पाठक का ध्यान पैरा की विषय–वस्तु की ओर आकर्षित करने के लिए उपयुक्त पैरा शीर्षक का चयन अति महत्वपूर्ण है। एक उपयुक्त ऑडिट पैरा शीर्षक, ऑडिट पैरा में तत्काल अंतर्दृष्टि देने में सहायक होता है। ऑडिट पैरा/अनुच्छेद शीर्षक सरल, स्पष्ट, स्पष्ट और कम से कम शब्दों में लिखा होना चाहिए ताकि पाठक का ध्यान आकर्षित किया जा सके।

यह लेख कंप्लायंस/ट्रांसक्शन ऑडिट/लेखापरीक्षा के दौरान विभिन्न लेखापरीक्षा निष्कर्षों की एक उदाहरणात्मक सूची देने का प्रयास करता है जिसके आधार पर मसौदा लेखापरीक्षा/ऑडिट पैरा का प्रयास किया जाता है और निरीक्षण रिपोर्ट में शामिल किया जाता है।

इस आलेख में लेखापरीक्षा के दौरान लेखापरीक्षक के सामने आने वाले विभिन्न प्रकार के मुद्दों के लिए उपयुक्त पैरा शीर्षकों को संकलित करने का प्रयास किया गया है। यह आशा है कि इस लेख में दिए गए विभिन्न पैरा शीर्षकों के संकलन से लेखापरीक्षक को अपने लेखापरीक्षा पैरा के लिए एक उपयुक्त शीर्षक प्रदान करने में मदद मिलेगी ताकि पाठक की पैरा पढ़ने में रुचि शुरू से अंत तक बनी रहे। इस संकलन को संबंधित तालिकाओं में पाँच श्रेणियों में विभाजित किया गया है जिनका उल्लेख नीचे किया गया है।

उपयुक्त ऑडिट पैरा शीर्षक की निदर्शी सूची हिंदी में (Suitable audit para heading in hindi - Illustrative list)

टेबल ए – विषय – परिहार्य व्यय

"परिहार्य व्यय" के पैरा शीर्षक से शुरू होने वाले कुछ उदाहरण

1. निपटान प्रक्रिया में निर्णय लेने में अत्यधिक विलंब के कारण परिहार्य व्यय।

2. समय पर उचित आरक्षित मूल्य निर्धारित करने में विफलता के कारण परिहार्य व्यय।

3. हैंडलिंग और परिवहन अनुबंध को अंतिम रूप देने में देरी के कारण परिहार्य व्यय।

4. बिजली आपूर्ति के अवास्तविक आकलन के कारण परिहार्य व्यय।

5. कोडल प्रावधानों के अनुसार अनिवार्य एन.ओ.सी. प्राप्त करने में विफलता के कारण परिहार्य व्यय।

टेबल बी – विषय – कॉन्ट्रॅक्टर्स (ठेकेदारों) को अनुचित लाभ

"कॉन्ट्रैक्टर्स (ठेकेदारों) को अनुचित लाभ" के पैरा शीर्षक से शुरू होने वाले कुछ उदाहरण

1. परिसमापन हर्जाने का गैर आरोपण के कारण कॉन्ट्रैक्टर्स/ठेकेदारों को अनुचित लाभ।

2. समाप्त अनुबंधों के संबंध में गलत भुगतान के कारण कॉन्ट्रैक्टर्स/ठेकेदारों को अनुचित लाभ।

3. अनुबंध की शर्तों के उल्लंघन में ठेकेदारों को अनियमित भुगतान के कारण कॉन्ट्रैक्टर्स/ठेकेदारों को अनुचित लाभ।

4. रॉयल्टी का अनियमित समावेश के कारण कॉन्ट्रैक्टर्स/ठेकेदारों को अनुचित लाभ।

5. निविदा शर्तों के उल्लंघन में भुगतान की शर्तों में परिवर्तन के कारण कॉन्ट्रैक्टर्स/ठेकेदारों को अनुचित लाभ।

टेबल सी – विषय – अस्वीकार्य प्रभारों/भत्तों का भुगतान

"अस्वीकार्य प्रभारों/भत्तों का भुगतान" के पैरा शीर्षक से शुरू होने वाले कुछ उदाहरण

1. मंत्रालय के आदेशों के उल्लंघन में अस्वीकार्य प्रभारों/भत्तों का भुगतान।

2. मौजूदा सरकारी आदेशों के उल्लंघन में अस्वीकार्य प्रभारों/भत्तों का भुगतान।

3. दिहाड़ी मजदूरों के लिए अस्वीकार्य प्रभारों/भत्तों का भुगतान।

टेबल डी – विषय – अधिक भुगतान

"अधिक भुगतान" के पैरा शीर्षक से शुरू होने वाले कुछ उदाहरण

1. उच्च दरों पर एच.आर.ए. का भुगतान के कारण अधिक भुगतान।

2. सेवा शुल्क दरों का गलत आवेदन के कारण अधिक भुगतान।

3. सातवें वेतन आयोग के प्रावधानों का पालन न करने के कारण अधिक भुगतान।

टेबल ई – विषय – राजस्व का कम विक्रय

"राजस्व का कम विक्रय" के पैरा शीर्षक से शुरू होने वाले कुछ उदाहरण

1. मौजूदा सरकारी आदेशों के अनुसार लाइसेंस शुल्क में संशोधन न करने के कारण राजस्व का कम विक्रय।

2. अस्थायी पुनरीक्षण शुल्क की संशोधित दरें आरोपित करने में विफलता के कारण राजस्व का कम विक्रय।

सारांश

एक उपयुक्त ऑडिट पैरा शीर्षक, पैरा में ऑडिट निष्कर्ष को उजागर करने के लिए अति आवश्यक है, जिसे इस लेख ने विभिन्न शीर्षकों के संकलन के माध्यम से विनम्रतापूर्वक पाठक के समक्ष लाने का प्रयास किया है।

आडिट दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता



बी.एस. चौहान
मीडिया सलाहकार
1809, महागुन मेपल, प्लॉट एफ–26, सेक्टर–50, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) के निर्देश पर पिछले वर्ष ऑडिट दिवस समारोह के भाग के रूप में एक राष्ट्रीय ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसका उद्देश्य राष्ट्र के युवाओं तक पहुंचने और एक स्वतंत्र लेखापरीक्षा प्राधिकरण के रूप में संस्थान के सार्वजनिक कार्य और गतिविधियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के सीएजी के प्रयास को लक्षित करना था।

''भारत के सीएजी, श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने पुरस्कार समारोह में कहा कि ''पुरस्कार विजेता निबंध सीएजी के संवैधानिक दृष्टिकोणों की समझ की एक गहरी भावना को दर्शाते हैं''। उन्होंने यह भी कहा कि ''इस वर्ष के निबंध का विषय 2047 में सीएजी की भूमिका पर केंद्रित है, जिसमें उस वर्ष भारत स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करता है, और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए यह क्या कर सकता है''।

राष्ट्रीय विकास, वैश्विक चुनौतियों और सीएजी की भविष्य की भूमिका वाले बड़े सवालों के इर्द–गिर्द तीन विषयों को अधिसूचित किया गया था। प्रतियोगी दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लिख सकते हैं। तीन विषय थे – (1) सीएजी : भारत को पंचामृत उपलब्धि प्राप्त करने में मदद करना – जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पांच अमृत तत्व, (2) सीएजी : संविधान के दृष्टिकोण को साकार करना, आजादी का अमृत महोत्सव, (3) 2047 में सीएजी : कल्पना करें कि आप वर्ष 2047 में भारत के सीएजी हैं तो संस्था के लिए आपकी क्या रणनीति होगी?

पुरस्कार विजेता निबंधों का चयन तीन सदस्यीय मूल्यांकन समिति द्वारा मौलिकता, स्पष्टता, शैली और रचनात्मकता के आधार पर किया गया था। एक विशेषज्ञ समिति द्वारा पुरस्कार विजेताओं की पात्रता, मूल्यांकन और अंतिम निर्धारण की जांच के लिए तीन चरणों की प्रक्रिया का पालन किया गया था। पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार राशि प्राप्त हुई। पहले पुरस्कार विजेताओं को 30,000 रुपये का चेक मिला। दूसरे और तीसरे पुरस्कार विजेताओं को क्रमशः 20,000 रुपये और 15,000 रुपये के चेक मिले।

प्रतिष्ठित संस्थानों और विश्वविद्यालयों के सात प्रतियोगियों ने हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में अपने असाधारण निबंधों के लिए प्रतियोगिता जीती। हिंदी

भाषा श्रेणी में पहला पुरस्कार गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय के सारंग मुकेशभाई पटेल को दिया गया जबकि कोटा विश्वविद्यालय की साक्षी जैन को दूसरा पुरस्कार मिला। तीसरा स्थान रायपुर के सरकारी डी.बी. गर्ल्स पीजी ऑटोनॉमस कॉलेज की माधुरी चंद्रकर ने प्राप्त किया।

हर्ष, जो रायपुर में हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री प्राप्त कर रहे हैं, ने अंग्रेजी में अपने निबंध के लिए पहला पुरस्कार प्राप्त किया। दूसरा स्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी के केठावथ कुमार नाइक और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय ओडिशा के अंकेश के बीच बराबर था। अहमदाबाद स्थित आदित्य सिल्वर ओक इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के ब्रह्मभट्ट योगीराज हितेशकुमार ने तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया।

15 सितंबर, 2022 को समापन तिथि पर शाम 5 बजे तक कुल 1329 निबंध प्राप्त हुए। इनमें से 422 निबंधों को मूल्यांकन के लिए पात्र के रूप में संक्षिप्त सूची तैयार की गई थी। 180 उम्मीदवारों ने द सीएजी : भारत को पंचामृत उपलब्धि प्राप्त करने में मदद करना – जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पांच अमृत तत्व, पर लिखा; सीएजी पर 132 प्रतियोगियों ने संविधान के विजन को साकार करना, आजादी के अमृत महोत्सव पर लिखा और 110 प्रतिभागियों ने 2047 में सीएजी : कल्पना करें कि आप वर्ष 2047 में भारत के सीएजी हैं; संस्था के लिए आपकी क्या रणनीति होगी? पर अपनी प्रविष्टियां भेजी।

422 पात्र प्रतियोगियों में से अंग्रेजी भाषा प्रतियोगिता की प्रविष्टियां 353 थीं, जिनमें से 245 महिलाएं और 108 पुरुष थे। हिंदी निबंधों में प्रतियोगिता के लिए, कुल 69 पात्र प्रविष्टियों में से 34 महिलाएं थीं और 35 पुरुष थे।

प्रविष्टियों को ऑनलाइन प्रस्तुत करने की शुरुआत तब हुई जब प्रतियोगिता 16 अगस्त को खोली गई और 15 सितंबर, 2022 को बंद हो गई। भारत में अध्ययन करने वाला किसी भी विश्वविद्यालय का छात्र और 25 वर्ष से अधिक का नहीं भाग लेने के लिए पात्र थे।



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार



श्री सारंग मुकेशभाई पटेल

20 वर्षीय श्री सारंग मुकेशभाई पटेल गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय से प्राकृतिक चिकित्सा और योग विज्ञान के छात्र हैं। उनका निबंध '2047 में सीएजी: कल्पना कीजिये कि आप वर्ष 2047 में भारत के सीएजी हैं। संस्था के लिए आपकी क्या रणनीति होगी?' विषय पर था।

विषय - 2047 में सीएजी : आप 2047 में CAG हैं। संस्था के लिए आपकी क्या रणनीति होगी?

लॉर्ड एक्टन का प्रसिद्ध कथन है - शक्ति भ्रष्ट करती है, और असीमित शक्ति असीमित रूप से भ्रष्ट करती है। आज के प्रशासक राज्य ने मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में - पालने से कब्र तक - अपना हस्तक्षेप बढ़ाया है।

इसके 2 कारण हमें 20वी शताब्दी में मिलते हैं।

1) गत शताब्दी में ही कल्याण राज्य की अवधारणा का विकास हुआ। जिसके चलते कानून और व्यवस्था संभालने की अपनी पारंपरिक भूमिका का विस्तार करके राज्य ने नागरिकों के जीवनस्तर को ऊंचा उठाने की जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ली। अतः उसके क्रियाकलापों में और अंततः लोक व्यय में वृद्धि हुई।

2) गत शताब्दी ने विश्वभर में लोकतंत्र का अभूतपूर्व विस्तार देखा। लोकतंत्र के आने से प्रशासन पर नियंत्रण रखने की जिम्मेदारी संसद के ऊपर आई। अत: वर्तमान प्रशासनिक राज्यों के विविधीकृत कार्यकलापों के कारण प्रश्न उपस्थित हुआ प्रशासन के आर्थिक पक्ष पर नियंत्रण किसका हो? अ-विशेषज्ञ जनप्रतिनिधियों का या फिर उन विशेषज्ञों का, जो जनप्रतिनिधि नहीं हैं? इन दोनों अंतिम ओर से भिन्न और श्रेष्ठ मार्ग हमारे संविधान निर्माताओं ने बताया, अनुच्छेद 148 के अंतर्गत भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) के पद का सृजन । जहां पर आर्थिक मामलों का विशेषज्ञ प्रशासन के व्यय पक्ष पर निगरानी रखता है, और अंतिमत: संसद के प्रति उत्तरदायी होता है।

भारत जैसे, सापेक्षतया नव-लोकतांत्रिक देश में, जहां अभी तक नागरिक समाज पूर्णत: विकसित नहीं है, प्रशासन पर आर्थिक निगरानी रखने का कार्य CAG का है। अतः डॉक्टर आंबेडकर ने CAG को संविधानांतर्गत सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी माना था।

अतः यदि 2047 में मुझे CAG जैसी संस्था का नेतृत्व करने मिले, तो मेरी भूमिका निम्नलिखित क्षेत्रों में सुधार की रहेगी।

1) <u>प्रशासन और ऑडिट विभाग में मित्रभाव विकसित करना</u>

पोल एपलबीने इस संस्था की सख्त आलोचना की है। वे CAG को साम्राज्यवाद की विरासत मानते हैं। जब कि सभी मान्य प्रजातंत्रों में लेखा परीक्षण को आवश्यक बुराई के रूप में नहीं, परंतु प्रशासन का मूल्यवान मित्र समझा जाता है। भारत में यह भावना अभी तक विकसित नहीं हुई है। विभागों में अभी भी ऑडिट को भय से या घृणा से देखा जाता है। इससे बाहर लाने हेतु ही भारत सरकार ने गत वर्ष से 16 नवंबर को ऑडिट दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। CAG के रूप में प्रशासन के साथ मित्रभाव बढ़ाने के लिए मैं प्रशासन की समस्याओं को पूर्ण रूप से समझने का प्रयत्न करूंगा। मेरी भूमिका - छिद्रान्वेषण की न होकर तथ्यान्वेषण की बने, मैं प्रशासन पर प्रहारी न बनकर संविधान का और कोष का प्रहरी बनूँ, ऐसा मेरा प्रयत्न रहेगा।

2) <u>राज्यों में अकाउंटंट जनरल को अधिक स्वायत्तता एवं वैधानिकता प्रदान करना</u>

वास्तव में सभी संघीय राज्यतंत्रों में प्रांतो के ओडिट अधिकारियों (AG) को स्वायत्तता प्राप्त होती है। जबकि भारत में ऐसा नहीं है। वैधानिक संरक्षण प्राप्त न होने से अकाउंटंट जनरल्स अप्रिय सत्य उजागर करने पर अनेक बार मुख्यमंत्रियों के कोपभाजन बनते हैं। केंद्र में CAG के पूर्णत: आधीन होने से महत्वपूर्ण मुद्दा उठाने के लिए AG को CAG की हर बार अनुमति लेनी पड़ती है।

<u>प्रतिष्ठा -</u> संविधान निर्माता राज्यों के AG को उचित प्रतिष्ठा देने की आवश्यकता से अवगत थे। इसीलिए डॉक्टर आंबेडकर ने संविधान के मसौदे में राज्यों के लिए ऑडिटर-इन-चीफ के पद का प्रावधान किया था। लेकिन किसी कारणवश संविधान के अंतिम रुप में संमिलित न हो सका।

2002 में संविधान के क्रियान्वयन की समीक्षा हेतु गठित आयोग (NCRWC) ने भी प्रांतों में AG को उचित प्रतिष्ठा, स्वायत्तता और संरक्षण प्रदान करने की अनुशंसा की थी।

<u>स्वायत्तता</u>: विश्व में जहां भी संघीय लोकतंत्र है वहां प्रांतों के ऑडिटर्स को स्वायत्तता प्राप्त है।

UK में CAG केवल केंद्र सरकार का ऑडिट करते हैं।

US में भी हर राज्य के लिए स्वतंत्र AG होता है, जो राज्य विधायिका के प्रति उत्तरदायी होता है।

अतः 2047 में CAG के तौर पर मैं प्रांतों में AG को अधिक स्वायत्तता प्रदान करने का और उनके पद को HC के न्यायाधीश के समकक्ष प्रतिष्ठा दिलाने का प्रयत्न करूंगा।

3) <u>समूह निर्णय निर्माण के लिए ऑडिट कमीशन</u>

प्रतिवर्ष CAG संसद में 35-40 रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। और राज्य विधानसभाओं में 80-90। रिपोर्ट में प्रस्तुत सूचना को सदन समक्ष रखने से पूर्व CAG को उसे पूर्णत: देखना होता है। जो केवल एक व्यक्ति की क्षमता से बाहर है।

इसीलिए NCRWC ने ऑडिट बोर्ड के गठन की अनुशंसा की थी।

विश्व के अन्य लोकतंत्रों में भी यह व्यवस्था विद्यमान है।

<u>फ्रांस</u> में सात चेंबरवाली Cour de Comptes होती है। प्रत्येक चेंबर अपने अध्यक्ष के आधीन सरकार के निश्चित विभागों/ क्षेत्रों का ऑडिट करती है, जैसे संरक्षण, राजस्व, व्यापारिक उपक्रम आदि।

जापान में तीन सदस्यीय ऑडिट आयोग होता है। रिपोर्ट संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय इन्हीं के द्वारा लिए जाते हैं।

स्वीडन ने रिक्सरिविझनेन नाम की अपनी ऑडिट संस्था का 2003 में पुनर्गठन किया, और एक के स्थान पर तीन ऑडिटर जनरल लाए गए।

भारत में भी चुनाव आयोग के मामले में हम ऐसा कर चुके हैं। 1993 में हमने ECI का पुनर्गठन कर के 3 सदस्यों वाला बनाया, जिससे उसकी कार्यक्षमता में स्वाभाविकतया वृद्धि हुई है।

4) **ऑडिट वंचन**

CAG के रूप में मैं उन संस्थाओं को मेरे क्षेत्राधिकार में लाने का प्रयत्न करूंगा, जो राज्य के कोष से निर्वाह करती हैं, लेकिन स्वायत्त होने के बहाने CAG का ऑडिट टालने का प्रयत्न करती हैं। वैश्वीकरण और उदारीकरण के चलते निजी-लोक भागीदारी के माध्यम से सरकार आज बहुत सारे क्रिया कलाप करती हैं। लेकिन उनका ओडिट सीएजी नहीं कर सकते।

नोईडा, नोईडा यमुना द्रुतगति मार्ग प्राधिकरण इसका उदाहरण है। स्वायत्त होने के तर्क का आधार देकर वे CAG के ऑडिट से बचते रहे हैं। वास्तव में, राज्य के कोष से संचालित, या राज्य का जिसमें महत्वपूर्ण भाग हो, ऐसी संस्थाओं का प्राथमिक और पूरक ऑडिट करने का CAG को अधिकार मिलना चाहिए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 2014 में टेलीकॉम सेवा प्रदाताओं के केस में अपना यही मत व्यक्त किया था।

विदेशों में, जैसे जर्मनी और जापान में सर्वोच्च ऑडिट संस्था (SAI) को उन सभी संस्थाओं का ऑडिट करने का अधिकार है, जिसमें सरकार की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है, भले ही बहुमत हिस्सेदारी न हो।

जबकि भारत में BALCO और हिंदुस्तान जिंक में सरकार का महत्वपूर्ण भाग होने के बावजूद, उसके बोर्ड ऑफ डिरेक्टर्स में अपने प्रतिनिधि होने के बावजूद, कंपनी की नीतियों पर प्रभाव डालने की सरकार की क्षमता होने के बावजूद, CAG के ऑडिट क्षेत्राधिकार में यह कंपनियां नहीं आती है।

5) **ऑडिट अधिकारियों को शक्ति प्रदान करना**

कई बार तथ्यान्वेषण के समय ऑडिटर्स को स्पष्टीकरण मांगने की आवश्यकता पडती है। जिसे विभागीय अधिकारी टालने का प्रयत्न करते हैं। दोष पकडे जाने पर उसे सुधारने के बजाए, सही ठहराने का प्रयत्न करते हैं। जिससे पत्राचार लंबा होता जाता है। और अंततः कुछ भी सुधार हुए बिना ही फाइल बंद हो जाती है।

एक CAG के रूप में, इस विषय में, मेरी रणनीति होगी:

- निर्धारित समय में स्पष्टीकरण ना देने वाले अधिकारियों को अर्थदंड देने का अधिकार मेरे आधीन कर्मचारियों को देना, जैसा RTI अधिनियम अंतर्गत CIC को होता है।
- आर्थिक हानि पकड़े जाने पर संबंधित अधिकारी को शपथ पर वक्तव्य देने के लिए समन करने का अधिकार देना

विश्वभर में SAI को जांच और अधिनिर्णयन की सत्ता प्राप्त है।

ऑस्ट्रेलिया में ऑडिटर जनरल किसी भी व्यक्ति से सूचना मांग सकता है। गलत सूचना देने पर 12 मास तक के कारावास का प्रावधान है।

फ्रांस में Cour de Comptes बिल्कुल कोर्ट की तरह काम करता है।

6) **CAG को उत्तरदायी बनाना**

भारतीय संविधान CAG को स्वतंत्र बनाता है। अनुत्तरदायी नहीं। अंतिमतः वह भी संसद के प्रति उत्तरदायी होता है। और अपने आप को शासन की शीर्षविहीन शाखा घोषित नहीं कर सकता। इस संदर्भ में NCRWC ने टिप्पणी की थी, कि CAG संस्था का संघ और राज्य दोनों स्तर पर बाह्य संस्था द्वारा ऑडिट होना चाहिए।

दूसरी बात, CAG को लोक लेखासमिति (PAC) को साथ में रखकर प्रशासन पर नियंत्रण रखना होता है। लेकिन वास्तव में, PAC और CAG के बीच तालमेल का अभाव देखने मिलता है। CAG 150-200 पृष्ठों वाले 35-40 रिपोर्ट सदन में प्रस्तुत करते हैं। जिसमें अंकों की मायाजाल ही रहती है। कई रिपोर्ट में तो हर वर्ष क्लिष्ट भाषा और शब्दों को यथातथ रखकर केवल आंकडे ही बदल दिए जाते हैं, और ऐसी ही रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी जाती है।

एक CAG के रूप में मेरा कर्तव्य इस स्थिति को परिवर्तित करना होगा। मैं रिपोर्ट की भारी मात्रा के बजाए गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करूंगा। अंकों की मायाजाल में जनप्रतिनिधियों को उलझाने के बजाए सीधे, स्पष्ट शब्दों में प्रशासन के आर्थिक दोष स्पष्ट करूंगा।

संक्षेप में, CAG के रूप में कर्तव्य निर्वहन करते समय मैं ध्यान में रखूँगा कि जब तक भारत राष्ट्र में लोकतंत्र परिपक्व नहीं हो जाता, नागरिक समाज का पूर्णत: निर्माण नहीं होता, तब तक प्रशासन के आर्थिक पक्ष पर निगरानी रखने का कर्तव्य CAG की संस्था का है।

क्योंकि नेपोलियन के शब्दों को पुनः दोहराते हुए - - -

"किसी भी राष्ट्र की संस्थाएं ही उसके भाग्य का निर्धारण करती हैं।"



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

द्वितीय पुरस्कार



सुश्री साक्षी जैन

18 साल की साक्षी जैन कोटा विश्वविद्यालय से बीए की पढ़ाई कर रही हैं। उन्होंने इस विषय पर अपना निबंध लिखा 'सीएजीः संविधान के दृष्टिकोण को साकार करते हुए, आजादी का अमृत महोत्सव।'

<u>विषय:- सीएजी: संविधान के मूल उद्देश्यों को साकार करना, आजादी का अमृत महोत्सव को जीवंत बनाना।</u>

भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संविधान पर वाद-विवाद के दौरान नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के पद पर टिप्पणी की थी कि **"नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक संविधान का सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी है जो लोकतांत्रिक व्यवस्था के रक्षकों में से एक साबित होगा"** उपर्युक्त पंक्तियां सीएजी की भूमिका को सटीक और संक्षिप्त तरीके से प्रदर्शित करती है।

भारतीय संविधान का भाग-5 {संघीय सरकार} के अनुच्छेद 148-151 नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक से संबद्ध है जिसमें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के पद, कार्य व शक्तियों का उल्लेख किया गया है, भारतीय संविधान में उल्लिखित नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक को **लोक वित्त का संरक्षक** के साथ ही देश के **संपूर्ण वित्तीय व्यवस्था का नियंत्रक** माना जाता है।

भारत के प्रथम नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक श्री **वी. नरहरि राव** से लेकर वर्तमान में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक श्री **गिरीश चन्द्र मुर्मू** जी कार्यकाल तक देश में एक भी बार संविधान के **अनुच्छेद 360 {वित्तीय आपातकाल} का प्रयोग नहीं** किया गया है जो नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेहिता के बिना होना असंभव सा प्रतीत होता है,यह कहीं न कहीं भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है,जो देश की संपूर्ण वित्तीय साख की सुरक्षा कर लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करता है।

<u>संविधान के मूल उद्देश्य और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की भूमिका:-</u>

1. **<u>कल्याणकारी राज्य {Welfare State} का आदर्श</u>** - संविधान का अनुच्छेद 38 भारत को एक कल्याणकारी राज्य के आदर्श के रूप में स्थापित करता है, वित्त राज्य की संपूर्ण व्यवस्था की रीढ़ माना जाता है, **कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में भी "कोष"** को स्थान प्रदान किया गया है।
2. **<u>वित्तीय स्वायत्ता {Financial Autonomy}</u>** - संविधान का अनुच्छेद 150 संघ एवं राज्य के लेखों के प्रकार व अनुच्छेद 151 नियंत्रक व महालेखा परीक्षक के अंकेक्षण प्रतिवेदन से संबद्ध है जो केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा किए गए आय-व्ययों का कुशल प्रबंधन सीएजी द्वारा किया जाता है, वर्तमान में **भारत का पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** बनना सीएजी की वित्तीय पारदर्शिता को सुनिश्चित करता है।
3. **<u>केन्द्र-राज्य संबंधों {Centre-State Relations} में सामंजस्य</u>** - भारतीय संविधान के भाग 12 में अनुच्छेद 268-293 तक केंद्र-राज्य वित्तीय संबंधों की चर्चा की गई है, नियंत्रक व महालेखा परीक्षक संघ और राज्य सरकारों के लेखों का परीक्षण करता है और केन्द्र व राज्य के मध्य वित्त का उचित आवंटन वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायता करता है।
4. **<u>न्यायपूर्ण समाज {Fairer Justice} की परिकल्पना</u>** - संविधान की प्रस्तावना में सामाजिक और राजनीतिक न्याय के साथ ही **आर्थिक न्याय** की परिकल्पना की गई है जो राष्ट्र के समस्त नागरिकों में न्यायपूर्ण समाज के आदर्श को दर्शाता है और अमीर-गरीब के अंतर को कम करता है।
5. **<u>कराधानों {Taxation} का उचित आवंटन</u>** - संविधान के अनुच्छेद 279 के तहत नियंत्रक व महालेखा परीक्षक देश की **"शुद्ध आगम/आय"** {Net Proceeds} का आंकलन करता है इसके बाद अनुच्छेद 280 के तहत गठित **वित्त आयोग** केंद्र और राज्य के मध्य वित्त का आवंटन करता है।
6. **<u>अंतर्राष्ट्रीय संबंधों {International Relations} में सुधार</u>** - संविधान का अनुच्छेद 51 भारत की विदेश नीति का आधार है, भारत के सीएजी को संयुक्त राष्ट्र संघ के बाहरी लेखा परीक्षकों की 13 देशों की समिति का चेयरमैन नियुक्त किया गया है, हाल ही में,अमेरिका व मालदीव जैसे देशों के वार्ता के अलावा बाली {इंडोनेशिया} में SAI20 जैसे वृहद् सम्मेलनों में सहभागिता कर भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को शांति और सुरक्षा के स्तर पर सशक्त किया है।
7. **<u>वित्तीय समितियों {Financial Committees} को सहयोग</u>** - भारत की संसद के द्वारा वित्तीय संसदीय समितियों का गठन किया जाता है जिसमें लोक लेखा, प्राक्कलन और सार्वजनिक उपक्रम समितियां प्रमुख है, नियंत्रक व महालेखा परीक्षक को **"लोक लेखा समिति का मित्र और मार्गदर्शक"** कहा जाता है।
8. **<u>संविधानिक निधियों {Constitutional Funds} का प्रबंधन</u>** - संविधान के अनुच्छेद 266 में संचित और लोक निधि तथा अनुच्छेद 267 के तहत आकस्मिक निधि का किसी न किसी स्तर प्रबंधन का दायित्व संभालता है क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से **संसद के प्रति उत्तरदायी** होता है।

<u>उपर्युक्त सभी बिंदुओं के माध्यम से नियंत्रक व महालेखा परीक्षक की भूमिका को **"संविधान के मूल उद्देश्यों को साकार करने"** में व **"सार्वजनिक धन के संरक्षक"** के रूप में स्थापित भूमिका को भली-भांति समझा जा सकता है।</u>

<u>आजादी के अमृत महोत्सव की जीवंतता और नियंत्रक व महालेखा परीक्षक की भूमिका:-</u>

भारत सरकार द्वारा **"आज़ादी के अमृत महोत्सव के 5 स्तंभों की परिकल्पना"** की गई है उसमें नियंत्रक व महालेखा परीक्षक की संभावित भूमिका या योगदान का निम्न बिंदुओं के माध्यम से अवलोकन कर सकते है।

1. **<u>स्वतंत्रता संग्राम</u>** - भारत के प्रथम सीएजी वी. नरहरि राव अपनी महनीय सेवा देने के कारण उन्हें तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था यही नहीं नियंत्रक

एवं महालेखा परीक्षक की 2017-18 रिपोर्ट में स्वतन्त्रता सेनानियों हेतु रेल यात्रा में विशेष रियायतों संबंधी प्रावधान किए गए थे ।

2. **75 वर्ष पर विचार** - भारत के प्रथम नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक वी० नरहरि राव की नियुक्ति 1948 में हुई थी तब से वर्तमान में 14वें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक अपनी महनीय सेवाएं देश को प्रदान कर रहे है, आजादी से आज तक "वित्तीय आपातकाल" {अनुच्छेद 360} लागू न हो पाना भारत की वित्तीय संप्रभुता और स्वायत्ता का अनुपम उदाहरण पेश करता है

3. **75 वर्ष पर उपलब्धियां** - भारत की स्वतन्त्रता के 75 वर्ष 15 अगस्त 2022 को पूर्ण हो चुके है, भारत के 11वें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक **श्री विनोद राय** ने **2G स्पेक्ट्रम घोटाला और कोयला घोटाला** को देश के समक्ष रखकर भ्रष्टाचार के प्रति **"जीरो टॉलरेंस की नीति"** को सुदृढ़ता प्रदान की है ।

4. **75 वर्ष पर संकल्प** - भारत को "**2024-25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था**" बनना और "**2047 तक विकसित राष्ट्र**" के रूप में विकसित करने में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करने हेतु विशेष संकल्प ले सकता है ।

5. **75 वर्ष पर कदम** - भारत **क्रय शक्ति समता {PPP} के लिहाज़ से विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था** और **सकल घरेलू उत्पाद {GDP} में पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था** बन चुका है लेकिन आज भी भारत में बैंकिंग और कॉर्पोरेट सेक्टर में घोटालों को उजागर बहुत ही कम मात्रा में किया जाता है, सीएजी इस क्षेत्र में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर सकता है ।

उपर्युक्त बिंदुओं व तथ्यों के माध्यम से भारत सरकार के महत्वाकांक्षी मिशन **"आज़ादी के अमृत महोत्सव"** में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के संभावित योगदान का आंकलन किया जा सकता है ।

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियां और सीमाएं :-

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का पद एक **संवैधानिक पद** है लेकिन बदलते परिदृश्य के अनुसार इस पद को लेकर कुछ विशेषज्ञों ने अपनी चिंताएं व्यक्त की है-

1. **औपनिवेशिक विरासत का पद** - ब्रिटिश सरकार के द्वारा महालेखाकार कार्यालय 1858 में वायसराय लॉर्ड कैनिंग के समय स्थापित किया गया था इसके पश्चात् में 1884 इसका पदनाम परिवर्तित कर भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के रूप में फिर से नामित किया गया था।

2. **महालेखा {Auditor} की भूमिका तक सीमित** - नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक भले ही पद का नाम है लेकिन उसे वास्तविकता में नियंत्रक की भूमिका प्रदान नहीं दी गई है अर्थात् **कैग का भारत की संचित निधि से धन निकासी पर किसी तरह का नियंत्रण नहीं है** लेकिन ब्रिटेन में उसे नियंत्रक की भूमिका भी प्रदान की गई है ।

3. **राजनीतिक दबाव {Political Pressure} का प्रभाव** - भारत "बहुदलीय व्यवस्था" वाला विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है यहां पर कई नियुक्तियों में सरकार का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान रहता है ।

4. **गुप्त सेवा व्ययों {Secret service charges पर लेखा परीक्षा** - नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक पर विधि और विनियामक लेखा परीक्षा तो बाध्यकारी है जबकि औचित्य लेखा परीक्षा विवेकानुसार है वहीं **गुप्त सेवा व्ययों पर सीएजी को किसी भी प्रकार की शक्ति नही दी गई है ।**

5. **निजी लेखा परीक्षकों का बढ़ता वर्चस्व** - वर्तमान समय में भारत की सम्मानित संस्थाओं रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया और भारतीय जीवन बीमा निगम की लेखा परीक्षा पूर्णत: निजी लेखा परीक्षकों की ही भूमिका रह गई है ।

उपर्युक्त आलोचाओं के बावजूद भारत में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने अपनी सकारात्मक भूमिका को रेखांकित किया है लेकिन **"भारत के 11वें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक श्री विनोद राय"** ने भी कुछ सुझाव प्रस्तुत किए थे -

1. सीएजी के दायरे में सभी निजी-सार्वजनिक सहभागी,पंचायती राज संस्थान और सरकार द्वारा वित्तपोषित संस्थानों को लाना चाहिये।
2. कैग अधिनियम,1971 में संशोधन किया जाना चाहिये ताकि शासन में बदलाव से ताल-मेल स्थापित हो सकता है ।
3. कैग के चयन हेतु के लिये एक कॉलेजियम जैसा तंत्र स्थापित किया जा सकता हैं।

मद्रास हाई कोर्ट ने भी केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो {CBI} पर टिप्पणी करते हुए कैग की तरह ही स्वायत्त संस्था बनाने की बात कही थी जो भारत में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की स्वायत्तता को सभी के लिए विशेष बनाता है ।

इस तरह भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक **संविधान निर्माताओं के द्वारा प्रस्तावित मूल उद्देश्यों को साकार करने** में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है वहीं **आज़ादी के अमृत महोत्सव की जीवंतता को निखारने** में भी अपना महनीय योगदान प्रदान कर सकता है इसके लिए **नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की कार्यप्रणाली में सुधार और नवाचार जमीनी स्तर पर अपेक्षित है** ।



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

तृतीय पुरस्कार



सुश्री माधुरी चंद्राकर

20 वर्षीय सुश्री माधुरी चंद्राकर छत्तीसगढ़ के रायपुर के राजकीय डी/बी गर्ल्स पीजी ऑटोनॉमस कॉलेज से बीए कर रही हैं। उनका निबंध इस विषय पर था '2047 में सीएजीः कल्पना कीजिये कि आप वर्ष 2047 में भारत के सीएजी हैं। संस्था के लिए आपकी क्या रणनीति होगी?'

2047 में सीएजी : कल्पना कीजिए की आप वर्ष 2047 में भारत के सीएजी हैं। संस्था के लिए आपकी क्या रणनीति होगी?

प्रस्तावना :-

भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (Comptroller and Auditor General of India) मुख्यतः भारतीय लेखा परीक्षण और लेखा विभाग का मुख्या होता हैं। यह लोक वित्त का संरक्षक होने के साथ - साथ देश की सम्पूर्ण वित्तीय व्यवस्था का नियंत्रक होता हैं। भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षा का प्रमुख कार्य एवं कर्तव्य होता हैं कि भारत के विधि के तहत वित्तीय प्रशासन को संभाले। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की विशेष बात हैं कि इसका नियंत्रक राज्य एवं केंद्र दोनों पर होता हैं। यह मूलतः भारत के रक्षको में से प्रमुख होता है जो कि देश की वित्तीय व्यवस्था का नियंत्रण करता हैं।

किसी भी देश की संचित विधि, राज्य की संचित निधी के व्यय संबंधी लेखा परीक्षा का उचित नियंत्रण देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं और देश की आर्थिक व्यवस्था योजना एवं दूरदर्शिता तय करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

यदि मैं वर्ष 2047 में भारत का CAG होती हूँ तो एक अधिकारी के रूप में मेरी पहली प्राथमिकता होगी की इस प्रमुख संस्था कि

1. नीतियों एवं कार्य प्रणाली में पारदर्शिता हो।
2. कार्य प्रणाली में तकनिकी का समावेश हो।
3. CAG भ्रष्टाचार को रोकने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

वित्तीय प्रबंधन का महत्व :-

व्दितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक प्रबंधन की परंपरागत विचारधारा के अंतर्गत वित्तीय प्रबंधन का कार्य संस्था के लिए उचित शर्तो पर पूंजी प्राप्त करना था, परन्तु आधुनिक विचारधारा के अनुसार वित्तीय प्रबंधन का कार्य केवल पूंजी प्राप्त करना नहीं हैं बल्कि पूंजी का अनुकूलतम उपयोग, पूंजी का दुरुपयोग रोकना और पूंजीगत भ्रष्टाचार में लगाम लगाना हैं। साधारण व्यवसायिक संगठनो में और निगमित व्यवसायों में वित्तीय प्रबंधन का कार्य सरल होता है लेकिन शासन स्तर पर पुरे देश में निगमित उपक्रम और गैर निगमित उपक्रम का वित्तीय प्रबंधन और नियंत्रण का कार्य कठिन होता हैं और इसी कठिन कार्य के लिए CAG की आवश्यकता होती हैं। CAG का सीधा संबंध देश के वित्तीय प्रबंधन से हैं।

वित्त सामाजिक और आधुनिक ओद्योगिक व्यवस्था का जीवन रक्त है यह समस्त क्रियाओ का आधार है। इसके आभाव में न तो किसी भी उपक्रम और योजना का आरम्भ किया जा सकता है और न ही उसे सफलतापूर्वक संचालित किया जा सकता है आवश्यकतानुसार पर्याप्त वित्त की व्यवस्था और उसका प्रबंधन किसी भी देश की प्रगति का घोतक है। जिस प्रकार एक इंजिन को चलाने के लिए कोयले अथवा बिजली की आवश्यकता होती है उसी प्रकार प्रत्येक शासकीय और शासकीय योजनाओ के क्रियान्वयन के लिए कुशल वित्तीय प्रबंधन की आवश्यकता होती है। हस्बैंड एवं डोकरे के अनुसार "विभिन्न आर्थिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों को एक सूत्र में बांधने के लिए वित्तीय प्रबंधन की आवश्यकता होती है"। प्रोन सोलमन ने वित्तीय प्रबंधन का अर्थ बताते हुए लिखा है कि " वित्तीय प्रबंधन आज केवल वित्तीय साधन संकलित करने की एक विशेषज्ञ क्रिया मात्र नहीं है, अपितु संपूर्ण प्रबंधनीय विज्ञान का एक अभिन्न अंग बन गया है" वित्तीय संसाधन एकत्रित करने के साथ साथ वित्तीय प्रबंधन उत्पादन, विपणन और उपक्रम में प्रत्येक निर्णयात्मक क्रिया से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित रहता है।

वर्ष 2047 में CAG की भूमिका :-

पूर्व में "CAG बनाम सरकार" व्यवस्था की सोच थी लेकिन वर्ष 2047 तक मेरा दृष्टिकोण ऐसा रहेगा की इस तरह की सोच पूर्ण रूप से बदल जाये और CAG की वेल्यु एडिशन का एक अहम हिस्सा माना जाए। वेल्यु एडिशन एक महत्वपूर्ण शब्द हैं, जिसमे सुचिता और पारदर्शिता समाहित हैं अतः मेरे दृष्टिकोण में CAG की भूमिका एक स्वतः पारदर्शी नियंत्रण की होगी जो की पुरे शासन तंत्र के लिए "मारल बूस्टर" का कार्य करे। पारदर्शिता के अलावा CAG की जवाबदेही भी मैं सुनिश्चित करूँगा। इन सभी चीजों का सिधा असर भ्रष्टाचार को रोकने में होगा।

वर्ष 2047तक मेरी कोशिश होगी की सभी लंबित मामलो को CAG निपटा ले और यह तभी संभव हैं जब आज से सुनिश्चित किया जाये की हर हफ्ते कुछ घंटे लंबित मामलो के निपटारे के लिए तय किये जाए। साथ ही साथ लंबित मामलो की निगरानी मैं नियमित आधार पर करूँगी। भविष्य में हर स्तर पर अधिकारियो को CAG के ऑब्जरवेशन की अहमियत के बारे में जागरूक करने का सकारात्मक प्रयास करूँगी ताकि सिस्टम में सुधार के उपायों को समयबद्ध तरीके से लागु किया जा सके।

सन् 2047 तक मेरा दृष्टिकोण होगा की CAG शासन के सभी मंत्रालयों एवं विभाग को अधिकतम पूँजीगत व्यय बढाने का निर्देश दे ताकि न केवल ग्रोथ को बढ़ावा मिले बल्कि अधिक रोजगार सृजित मिल सके। मेरी कोशिश होगी की भारत को अपनी आजादी के 100 वें वर्ष तक शीर्ष - 3 वैश्विक अर्थव्यवस्थाओ में शामिल कराने और एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित हो। यह स्थिति पाई जा सकती हैं इसमें कोई संदेह नहीं है। कुछ आर्थिक नीतियों का CAG व्दारा संयोजन कर निर्देशित करना होगा। जैसे केपेम्स बढ़ाकर और पूंचिगत व्यय की लगातार निगरानी कर सुनिश्चित करूँगी की यह अनुमानित जरूरतों के मुताबिक हो।

वर्ष 2047 में भारत की CAG के रूप में संस्था के लिए मेरी निम्नलिखित रणनीति होगी :-

1. देश प्रदेश एवं संघशासित प्रदेश के सभी व्यय संबंधी लेखाओ की पारदर्शिता के साथ लेखा परीक्षण करना।
2. माननीय राष्ट्रपति को केन्द्र एवं राज्य के लेखा एवं लेखा परीक्षण के लिए नवीन प्रारूप का प्रस्ताव देना, जिसमे डिजिटल लेन - देन पर जोर हो।

3. प्रत्येक राज्य की आकस्मिकता विधि को बढ़ाना ।
4. प्राकृतिक विपदा के लिए विशेष फंड की व्यवस्था कर उसके लेखा परीक्षण के लिए अलग प्रारूप बनाकर इसे कर मुक्त करना ।
5. देश की वित्तीय व्यवस्था में पारदर्शिता लाने के लिए सूचना एवं संचार तकनीक का सौ फीसदी धारण एवं उपयोग करना ।
6. AI (Artificial Inteligence) की सहायता से लेखा परीक्षा और लेखा विभाग में कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाने के साथ - साथ हर प्रमुख विभाग से सुगमता के साथ जोड़कर प्रत्येक आर्थिक लेन - देन का त्वरित लेखा-जोखा रखना ।
7. भारत के CAG को विश्व मानचित्र पर प्रमुख नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के रूप में स्थापित करना। जिस प्रकार UN (United Nation) का सफल वित्तीय परीक्षण किया गया उसी प्रकार वैश्विक पटल पर स्थित अनल अंतराष्ट्रीय संस्थाओ के वित्तीय लेन देन का परीक्षण कर CAG का वैश्विक संस्था के रूप में स्थापित करना ।
8. भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक पैसा खर्च होने के बाद खातो का लेखा जोखा करता है, जिसे पोस्ट - फैक्ट कहते हैं। नई रणनीति ऐसी होनी चाहिए की अनेक परिस्थितियों में CAG के मंजूरी के बिना खजाने से कोई पैसा निकाला ही ना जा सके। इस प्रकार के रणनीति से संस्था व्दारा पैसो को खर्च करने से पहले और बाद में वित्तीय लेन देन का ब्यौरा को व्यवस्थित करने में आसानी होगी और भ्रष्ट्राचार को बहुत हद तक रोका जा सकता हैं ।
9. CAG की स्वायत्ता का हमेशा सम्मान होना चाहिए इस बात पर जोर देना ।
10. CAG के रूप में सार्वजनिक - निजी सहभागी परियोजनाओ के ऑडिट को बढ़ावा दूंगी जिससे शासकीय एवं अन्य खर्च के अनियमित उपयोग को रोका जा सके ।
11. IT एक्ट के तर्ज पर IA & AD (Indian Audit and Accounts Department) को संविधिक निकाय के रूप में मान्यता देने और शक्तियां प्रदान करने से ऑडिट की गुणवत्ता में सुधार की गुंजाईश करुँगी । इससे अधिकारियो एवं कर्मचारियों व्दारा किये गए कार्य की गुणवत्ता बढ़ेगी ।
12. देश की वित्तीय व्यवस्था में पारदर्शिता लाने और भ्रष्ट्राचार रोकने के लिए समस्त पंचायती राज संस्थान को CAG के दायरे में लाना उचित होगा ।
13. भारत सरकार व्दारा वित्तियोजित संस्थाओ को भी CAG के दायरे में लाना उचित होगा क्योकि कोई भी संख्या स्वायत्ता की आड़ में शासन से अर्जित धन का दुरूपयोग न कर सके और सभी प्रकार के लेन - देन का विस्तृत विश्लेषण रखे ।
14. CAG के लिए शासकीय संस्था, पंचायती राज संस्था सरकार से वित्त पोषित संस्था, और सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओ में समरूप मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) अपनाऊँगी ।
15. CAG को GST के उचित क्रियान्वयन और नियंत्रण के लिए प्रशिक्षित पारंगत अपनाऊँगी ।
16. देश के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए CAG को देश की रक्षा श्रेणी में प्रथम पंक्ति में रखूंगी ।

CAG का महत्व और उपयोगिता :-

CAG देश की वित्तीय व्यवस्था का नियंत्रक हैं। यह देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतीक उन्नति एवं स्थिरता के लिए आवश्यक है । CAG के महत्व और उपयोगिता निम्नलिखित क्षेत्रो में हैं -

1. उपक्रम की सफलता का आधार
2. साधनों का अनुकूलतम आबंटन एवं उपयोग
3. वित्तीय प्रभावों को पूर्वानुमानित करके देशहित में उचित निर्णय
4. कार्य निष्पति एवं कुशलता का मापन
5. नियोजन, समन्वय एवं नियंत्रण का आधार
6. राष्ट्रीय महत्व और राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार
7. व्यवसायिक प्रबंधनो में उपयोगिता
8. विनियोक्ताओ के लिए उपयोगिता
9. वित्तीय संस्थाओ में उपयोगिता

उपसंहार/ सारांश :-

आर्थिक नियोजन एवं नियंत्रण से किसी भी देश का सर्वांगीण विकास होता हैं। आर्थिक नियोजन एवं नियंत्रण विपत्तिकाल में देश को दिवालिया होने से बचाता हैं। यह उदाहरण हमने कोरोना काल में देखा हैं जब कई देशो की स्थिति दिवालियापन के कगार में आ गई क्योकि जब स्थिति सामान्य थी तब उन देशो ने अपने देश का वित्तीय लेखा जोखा सही ढंग से नहीं रखा । आर्थिक अनियमितता एवं आर्थिक दिवालियापन से बचने के लिए CAG पारदर्शिता एवं भ्रष्ट्राचार निरोधक कानून को हथियार के रूप में उपयोग कर सकता हैं। परिस्थितियों एवं देश काल के अनुसार CAG को अपने नीतियों एवं उसके क्रियान्वयन में लगातार वांछनीय परिवर्तन करते रहना चाहिए। संघीय ढाचे में संसोधन में भी नहीं हिचकना चाहिए। मेरे विचार से प्रजातान्त्रिक व्यवस्था की मूल में CAG के माध्यम से आर्थिक समानता और आर्थिक शिक्षा का बोध करना श्रेयस्कर होना यह व्यवथा देश के आर्थिक निति निर्धारक और भविष्य के योजनाओ के क्रियान्वयन में सहायक होती हैं । आर्थिक शिक्षा को बढ़ावा देने से किसी भी देश की पूंजी और पूंजी को जमा करने की क्षमता विकसित होती हैं । इसका प्रभाव यह होगा की CAG के लिए जो आवश्यक उद्देश्य है वह पुरे होंगे । 2047 में CAG के लिए संस्था का डिजिटालाईजेसन, भ्रष्ट्राचार पर लगाम, पारदर्शिता, सुचिता आदि महत्वपूर्ण करक होंगे और निश्चित रूप से इन्हें मैं पूर्णरूपेण से नीतियों के तहत लागु करने का प्रयास करुँगी। जिससे देश का सर्वांगीण विकास हो सके और हम आर्थिक रूप से सुद्रिड होकर विश्व गुरु के रूप में बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की परिकल्पना को साकार कर सके ।



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार



श्री हर्ष

श्री हर्ष, 20 वर्षीय, हिदयातुल्ला नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़ के छात्र हैं, जहां वह बीएएलएलबी (ऑनर्स) की पढ़ाई कर रहे हैं। ''सीएजीः भारत को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पंचामृत– पांच अमृत तत्व प्राप्त करने में मदद'' विषय पर उनके निबंध ने उन्हें प्रथम पुरस्कार दिलाया।

MR. HARSH – ENG – 1ST PRIZE

THE CAG: HELPING INDIA ACHIEVE PANCHAMRIT-FIVE NECTAR ELEMENTS TO DEAL WITH CLIMATE CHANGE

In the autumn of 2021, the Prime Minister of India addressed a summit in Glasgow, Scotland. The speech was delivered at COP-26, which brought together dignitaries from across the world. It was in the midst of this "global brainstorming on climate change"[1] that the Prime Minister presented to the world the *Panchamrit* – five nectar elements to battle climate change. This was not mere sophistry but comprised an ambitious plan of action. The goals announced during the address included an increase in the non-fossil energy capacity and a significant reduction in the country's carbon emissions. The most zealous announcement was regarding the target of carbon neutrality by 2070. Needless to say, translating the action plan into groundwork would require several policy initiatives.

Even before the COP-26 summit, the government of India was running several climate-change programmes, *inter alia,* the National Solar Mission, the National Mission for Enhanced Energy Efficiency, the National Mission on Sustainable Habitat, and the National Water Mission. The threat from climate change is imminent. Notwithstanding the urgency, the progressive aspirations expressed at the global conference would only add to the list of active government projects. Heightened government activity in any area spells the increased role of the office of the *Comptroller and Auditor General (CAG),* as the implementation of any scheme involves the allocation and utilization of funds. The CAG must conduct audits of the expenses of the National and State governments to gauge the economic efficiency and effectiveness. Since the finances available to the state are sourced from the general public, the role of the CAG becomes indispensable to the democratic process. This is true for all public expenditure and *a fortiori* those which involve schemes to combat climate change.

At this juncture, it would be appropriate to elaborate on the mechanism through which the CAG discharges its functions regarding climate action. The CAG has, at its disposal, several tools to execute its mandate, and none is an instrumental as the *Environmental Audit (EAs)* in the context of climate action. To begin with, the World Bank defines an environmental audit in the following words:

> *"A methodical examination of environmental information about an organization, a facility or a site, to verify whether, or to what extent, they conform to specified audit criteria."*[2]

In other words, it refers to an assessment of the performance of a programme based on environment-related criteria. The criteria that the above explanation speaks of might be based on local, national or global standards. Taking into account the enormous quantum of funds infused into climate-change policies, the instrumentality of Environmental Audits becomes exceedingly clear. The 2022 budget, for example, allocates Rs 1,500 crore ($200 million) to the Renewable Energy Sector alone. The *Climate Change audit guidelines (2013)* published by the office of the CAG make a very similar claim-

> *"The allocation of substantial amounts of public funds for implementing environment programmes and schemes in the annual budgets enhances the scope of environmental audit."*[3]

Environmental audits perform two-fold functions. They inform the general public of the adequacy of government efforts in protecting the environment, whilst also aiding the government in dealing with the climate crisis. The role of the CAG, in this framework, is to verify the information provided by government organizations about their activities and the related environmental impact. The precise objective of each audit will vary depending on the type of audit performed.

There are three primary subsets of Environmental Audits, i.e., *financial audits, regulatory and compliance audits,* and *performance audits.* Financial audits ensure that an identified financial reporting framework gets followed for all project implementation. The framework should account for "environmental costs, obligations, impacts and outcomes."[4] Compliance Audits, on the other hand, evaluate whether governmental actions are carried out in conformity with

[1] Ministry of External Affairs, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/34466 (last visited 1st September, 2022)

[2] The World Bank, http://web.worldbank.org/archive/website01541/WEB/0_-1137.HTM (last visited 1st September, 2022)

[3] The Comptroller and Auditor General of India, *Environment and Climate Change- Audit Guidelines,* Pg. 41 (2013)

[4] Ibid. at Pg. 42

pertinent environmental laws and standards. Lastly, Performance Audits provide assure the economy, efficiency, and effectiveness of Environmental Programmes. This involves investigating intended and latent, direct and indirect effects of programmes. An aggregate study of the three evaluation methods describes the degree to which a programme has achieved its goals. Before an Environmental Audit is carried out, the auditor should have a clear picture of its aims and purview. In addition to the standard dimensions (financial, compliance, and performance audits), there may be other environment-related audits.

The office of the CAG regularly submits reports to the President of India under Article 151(1) of the constitution. Such reports investigate the adequacy and effectiveness of programmes and interventions related to Pollution Control, Afforestation, Biodiversity, Environmental Education, etc. One such report was the *Environmental Compliance Report (2009)*. At the onset, the project makes clear its objective of creating "awareness and urgency"[5] about conservation and protection of the environment. An incident of such audits is the evaluation of nodal agencies in charge of the subject area of the audit. For example, a report on the afforestation programmes would also shed light on the workings of the *Ministry of Environment and Forests.*

INTOSAI[6] has also drafted a set of working guidelines to usher in Auditing-led climate action. The body maintains that all Auditors must exercise "due care and concern" in complying with the *INTOSAI* auditing standards. These standards include the recruitment of qualified and competent personnel, provision of proper training to employees, and regular issuance of audit manuals. Auditing Institutions also have to review the effectiveness of their internal standards and procedures. In addition to the general rules, the body has also framed some field guidelines. These are the research rules which the auditor must follow as a seeker of evidence to carry out a high-quality audit. Conformity with these guidelines is a *sine qua non* for extracting maximum utility from the tool of Environmental Audit.

The past 20 years have witnessed heightened global awareness of environmental issues, leading to a rethinking of the roles and duties of the government. A major incident of the expansion in climate literacy is the demand that organizations be held liable for actions that adversely impact the environment. As noted by *INTOSAI*, the climate crisis cannot be reversed overnight by *Supreme Audit Institutions (SAIs).* Nevertheless, tools like Environmental Audits could form a part of the solution. The general public has confidence in the objectivity of the workings of the Comptroller and Auditor General. The following passage from the *Audit Guidelines, 2013* (cited above) fittingly illustrates this point.

> *"Considering the growing concern over environmental degradation and climate change across the world, the findings and conclusions of the SAI...will have increasing acceptance and are sure to influence the process of decision making at national and regional levels."*

The SIA plays a crucial role in sensitizing policy makers by highlighting the existing deficiencies and encourage them to view environmental challenges holistically. The performance of entities and schemes (and their conformity with established laws) can only be reliably assessed by the conscientious efforts of the CAG. Such an assessment is indispensable for combating environmental degradation. This endeavour should include testing the availability, effectiveness, and compatibility of an Environment Management System (EMS) with international standards. In conclusion, "Trends towards environmental degradation can be slowed and even reversed by active governmental interventions. In this context, public auditors must play a greater role in the evaluation of governments' efforts in conservation and protection of the environment."[7]

[5] Comptroller and Auditor General of India, *Report No. 17 of 2010-11, https://cag.gov.in/en/audit-report/details/3213*

[6] The International Organization of Supreme Audit Institutions is an intergovernmental body consisting of Apex Auditing Institutions of several. The Comptroller and Auditor General of India (CAG) and the Indian Audit and Accounts Department (IAAD) comprise the Supreme Auditing Institutions of India.

[7] The Comptroller and Auditor General of India, *Environment and Climate Change- Audit Guidelines*, Pg. 1



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

द्वितीय पुरस्कार



श्री अंकेश

श्री अंकेश, 20 वर्षीय, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, ओडिशा से बीएएलएलबी की पढ़ाई कर रहे हैं। इन्होंने ''सीएजीः भारत को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पंचामृत– पांच अमृत तत्व प्राप्त करने में मदद'' विषय पर अपना निबंध लिखा।

Mr. Ankesh – ENG – 2nd PRIZE (SHARING)

Auditing Climate Change: Panchamrit

One thing which has been constant in the past few decades has been Climate Change, which is being triggered by a variety of causes around the world. The governments across the globe from late 1960s has been keenly working to put a reasonable control to the causes, so that we as a collective are ready for a better future. The first conference on Climate Change which was held in Stockholm in 1972 was an eye-opener conference for the entire world. This event had touched some aspects in the area of Climate Change which were rarely discussed earlier, and it has been continued till date for its exceptional discussions on the topic, with the latest one being scheduled in the year 2022 itself. Auditing reports on Climate Change was one such aspect which has been the prominent features of these conferences. The government of India also, through its various wings emphasises on the importance of Audit in tackling Climate Change issues. In a general sense, organisations, be it Public or Private generally claim certain things through reports and assessment of functioning of their organisation. These claims however should not go unchecked, and therefore this idea of Auditing these reports per se. In addition to this auditing also helps in making activities of these organisations, a bit transparent, which in theory affects the Public Perception as and such.

The latest climate conference which was held in 2021 (COP-26), Indian Prime Minister Mr. Narendra Modi had on behalf of India, has introduced Panchamrit, or the five nectar elements to tackle the issues of Climate Change. These five elements were the basic goals of the country with respect to the functioning of organisations or Individuals, which would help the India in achieving a better future for its citizens.

The five goals which would help India and the world, to tackle the problem in hand comes at the time where every country on the planet is working and brainstorming ideas for a sustainable future. India plans to reach the non-fossil energy capacity to 500 Giga Watts by the end of year 2030. In addition to this India bets very high on the renewable energy and its sources. The government plans to make around 50% of its energy requirements from these renewable sources only. In addition to this India also has planned to reduce the carbon emissions significantly by around one billion tonnes by the year 2030. Also, by 2030, India will reduce the carbon intensity of its economy by less than 45 percent. The fifth target that is given, is to achieve a net zero Carbon Emissions. The deadline for this is set to be by the year 2070. These actions if fulfilled would be of significance importance to the world, and a major contribution by India, to tackle a very important problem, which we as a collective of this country, this world face.

The setting up of these goals, however would not signify much, if they are not achieved within the time limits. Not only the government has to work in a time prescribed manner but organisations, such as companies, who are involved in activities resulting in carbon emissions, or use of energy sources from different sectors have to come together to achieve this. The government has to set up guidelines for fulfilment of certain activities, but this is just one part of it, a bigger chunk of the problem has to be fulfilled by the citizens of the country, and that's where the role of office of Comptroller and Auditor General would come into picture.

The CAG has generally set up guidelines for the audit of the reports and the contribution of performance of governance to the overall effect. By comparing the organisation's performance to established standards and performance benchmarks, audit criteria assist in evaluating the performance of the entity. If there is a national policy or law addressing climate change, the criterion may also be international, particularly if the nation has ratified international conferences of Climate Change. Since various ministries in the government and agencies of the central and state governments must take action on climate change, audit criteria may also be in the areas of good governance and good management. A lack of coordination and opaque decision-making may hinder the implementation of climate change policies.

The ratifications of Kyoto Protocol, which was under the UNFCCC (United Nations Framework Convention on Climate Change), also gave rise to India's own plan on climate change: National Action Plan on Climate Change (NAPCC). These would ideally work alongside the Panchamrit, to achieve the goal of a sustainable future, especially with respect to Climate Change. The new goals set in the COP-26 conference could be audited under the same guidelines as it were done before. This would be an easy transition for people actually working on these projects, and if and when guidelines are issued by the government to the organisations, defining an

actual road-map for fulfilling these conditions, it would be easier to find non-compliances under the reports.

A significant component of any audit effort is the compliance audit, which can serve as the initial assessment of how well the government's acts and regulations are being followed. However, India currently has no-legislations specifically dealing with the Climate Change policies. India lacks a legal framework or policies to regulate emissions or any other actions that contribute to climate change. Additionally, it has no laws, rules, or regulations pertaining to climate change. There are no solutions to climate change—just strategies, plans of action like the NAPCC, and sectoral strategies. Additionally, India has not made any pledges to reduce emissions in accordance with the UNFCCC. However, India has benefited from numerous Clean Development Mechanism (CDM) initiatives as a result of the Kyoto Protocol. As a result, compliance audits can be performed to examine if project goals and CDM criteria are being met, as well as targets and action plans outlined under NAPCC. These guidelines are present within the Comptroller and Auditor General's office, however, whether these guidelines or the blueprint to guidelines could be suitable to regulate audits under the Panchamrit project has to be seen.

The projects which would be undertaken to fulfil these goals, since being of important in nature would also be under greater risks. This would mean that these projects should be undertaken with care and compliances should be also be maintained. In absence of compliances, a general checklist as discussed above could also be used. The risks associated with climate change make it particularly important for auditors. These include dangers associated with achieving goals, using policy tools, and openness. Consequently, auditors may significantly contribute to helping governments improve their performance and management by auditing their reactions to the climate change.

The very first step in direction would be to ensure a separate compliance guideline for these newer reports. The flagship journal ASOSAI also talks about this is an issue where the need for such provision is required. The mechanism for such audit could be based on many factors, and would take into account the various steps undertaken to reach the goal. The Supreme Audit Institution works with the CAG to fulfil the requirements of the audit. At present, a financial auditing would give a very decent picture of how a particular organisation has tried to work for achieving their side of the compliance. Once a clear guideline is set for the organisation to follow, it would be easier for auditors to make sure that those are followed. The current guidelines have checklist which looks into the work done by the government in furtherance of issuance of goals. The objective is to look for whether the government has identified the source of carbon emissions, and the effect of such emissions, whether the government's plan of action is working or not, and how adaptive they are. Along with this the working of Clean Development Mechanisms projects are working at the required pace or not, and finally assess that whether the government's plans actually led to reduction of emissions or not. However, for ascertaining the goals of renewable energy (50% by the year 2030), different organisations would also have to be involved. Certain private sector companies which are leading in this area would need to show their developments in accordance with the government guidelines.

The goal of setting net zero carbon emissions would mean that India would be a step ahead in being a carbon neutral economy. The balance between the amount of greenhouse gas created and the amount removed from the environment is known as "net zero emissions." Guidelines would also be needed to achieve this as there would be a need to control the growing number of industries in a particular sector, in order to strike the balance. The audit of organisations would be the reasonable check to ensure proper functioning of the economy which would be on its way to achieve goals as set in the COP-26 by the Prime Minister.



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

द्वितीय पुरस्कार



श्री केथावथ कुमार नायक

श्री केथावथ कुमार नायक, 24 वर्षीय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी में एम.ए. के छात्र हैं। इनका निबंध ''सीएजी: भारत को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पंचामृत– पांच अमृत तत्व प्राप्त करने में मदद'' विषय पर था।

Mr. Kethavath Kumar Naik – ENG – 2ND PRIZE (SHARING)

The CAG: Helping India achieve Panchamrit - five nectar elements to deal with climate change

In Conference of Parties (CoP)26 held in Glasgov, Scotland, the Honorable Prime Minister of India delivered the India's vision (National statement) to tackle the climate change. The PM termed the five-point agenda as 'Panch Amrit Tattva' or 'Panchamrit'. Briefly they are follows:

1. Non fossil fuel energy capacity to 500 GW by 2030.
2. 50% of India's energy requirements from renewable sources by 2030.
3. Reduction of total projected carbon emissions by 1 billion tons by 2030.
4. Reduction of carbon intensity of India's economy by less than 45%.
5. Net Zero carbon emissions by 2070.

On its determination to achieve the targets India has already ratified or upgraded the Nationally Determined Contribution (NDC). The west, which was predominantly industrialized earlier than south Asia, has contributed the major chunk of global carbon emissions. However, it was the poor & developing nations, Island nations that became vulnerable to the historic process of Industrialization in the west. According to world bank data the Indias CO_2 per capita emissions was 1.8 tons in 2019 which is 8.15x less than the United States of America (USA). Despite its low level of emissions India is still committed to make the world better place for humans and bring down the carbon emissions. Also, it is to be noted that India is the only major economy in G20 nations that is on its path to meet emissions targets set under 2015 Paris agreement, according to Climate Transparency Report, 2020.

India is still a developing economy so do the requirements of resources & energy is huge. It would add to productivity, well-being and thus the national income. But it comes at the cost of depleting natural resources and increasing entropy of climate change. The increase in productivity means the efficient use of resources and their outputs but not the creation of new resources. Also, the resources are used indiscriminately to meet the demand requirements. Since the resources are scarce, their usage and distribution need to be assessed, evaluated and audited from time to time to ensure sustainability. The measurement of resources leads to better management of resources. Though all the Sustainable Development Goal (SDG) are interconnected, SDG13 specifically urges countries to take actions on combating climate change. The Comptroller and Auditor General (CAG) of India, being the highest constitutional body & Supreme Audit Institution (SAI) in India has mandate to assess & audit the environment under various provisions. They were as follows:

- Article 243ZD 3(a)(i) & Article 243ZE3(a)(ii): matters of common interest between Panchayat and municipalities (including natural resources, environmental conservation).
- Article 243W (8): Urban forestry, protection of environment and promotion of ecological aspects.
- Article 48A: The state shall endeavor to protect & improve the environment to safeguard the forest and wildlife of the country.
- Article 51A: duty to protect and improve the natural environment including forests, compassion for living creatures.
- Environment act,1986; The Water act,1974; The wildlife (protection) act,1972; Biological Diversity act,2002; Forest (conservation) act,1980; The Air act,1981
- And other policies, rules, frameworks, treaties, conventions etc.

The above provisions must be read with the Comptroller & Auditor General's (Duties & Powers) act,1971.

CAG can bring in comprehensive and transparent audit reports that would help the policy makers for better use of natural resources fairly & responsibly, for instance, Environment Audits (EA). Environmental audits are the systematic evaluation of various environmental aspects. In 1995, International Organization of Supreme Audit Institutions (INCOSAI) for the first time has stressed the importance of Environmental audit. CAG, the independent institution through EA can give a framework that is more scientific and pragmatic for the sustainable use of resources. It could effectively bring out the lapses in implementation of various climate related or environmental laws. In its audit report on Conservation of Coastal Eco Systems it has pointed out that Expert Appraisal committee (EAC) has granted clearances without the presence of expert body during project evaluations. Further, at the national level, the National Coastal Zone Management Authority (NCZMA) has not been notified as a permanent body yet. Similarly, District Level Committees (DLCs) in various

states. Thus, in this way CAG can contribute to government/agencies through its analysis and constructive recommendations.

The importance of auditing comes at a time when there are severe impacts of climate change like depletion of resources, pollution, increasing emissions, frequent droughts, floods etc. So, the audits can have great influence on decision making of various policies. . However, so far, the CAG seems to be auditing only resource utilization, compliance and performance of various states, environmental related laws like Biodiversity, ground water management, minerals, coastal zones etc. But now the CAG has to conceptualize a framework to help achieving India's commitment at Glasgow because the CAG has never kept track of emissions or NDCs set by India. So, it has to start evolving a process to audit India's stand & status on panchamrit. This is despite the fact that both climate change and climate mitigations were collective actions involving individuals to industries, communities to states. Auditing at such a larger domain is really a challenge for the CAG because of multiple/diversified stakeholders involved.

The CAG can come up with a Bottom-Up approach to evolve a set of principles for auditing. For example, the concept of Citizen Participatory Audit (CPA) by Supreme Audit Institution (SAI), Philippines. CPA in simple terms refers to a technique for conducting audits with citizens as members of SAI audit teams. CPA is essential because global challenges like climate change would require collective actions and not from particular state or society only. CPA also brings a fundamental change in perceptions of people when engaged at community level. The institutionalization of CPA at the CAG can bring revolutionary changes. The Environmental Audit can be performed using CPA which will provide comprehensive, realistic reports on performance, compliance aspects. And these reports can become guiding principles for policy framework which is ultimately a citizen centric approach to tackling problems like climate change. However, CAG needs to engage more domain experts, NGOs & other community stakeholders for CPA. Collaboration with academia, industries, traders, R&D centers, Pollution Control Boards (PCB) will impart more technical knowledge.

The preciseness of auditing the carbon emissions and counter measures like carbon tax, carbon sinks, and carbon credits are very crucial. The CAG should audit the effectiveness of carbon credits and carbon tax on fossils fuels & other subsidiary products. Carbon credits/taxes are mostly limited to industries leaving the major contributor of emission I.e., Agriculture & Animal Husbandry (AAH) sector. AAH emissions are more than the combined emissions of all forms of transport/vehicular emissions. Further, CAG should take an interconnected approach while auditing because climate change is implicit to all human activities. So, CAG has a very significant role to play in such assessments. Thus, CAG can bring great amount of accountability not only to citizens of India but entire mankind and promote good governance. It can act as backbone to the call given by Honorable Prime Minister at Glasgow 'Lifestyle For Environment (LIFE)'.



ऑडिट-दिवस पर राष्ट्रीय ऑनलाइन अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता 2022 के पुरस्कार विजेता

तृतीय पुरस्कार



श्री ब्रह्मभट्ट योगीराज हितेश कुमार

श्री ब्रह्मभट्ट योगीराज हितेश कुमार, 21 वर्षीय, आदित्य सिल्वर ओक प्रौद्योगिकी संस्थान, अहमदाबाद से हैं, जहाँ वे बी.ई.–सी.ई. की पढ़ाई कर रहे हैं। इनके ''सीएजी@2047: कल्पना कीजिए कि आप वर्ष 2047 में भारत के सीएजी हैं। संस्थान के लिए आपकी क्या रणनीति होगी'' विषय पर निबंध ने तृतीय पुरस्कार दिलाया।

CAG@2047: Imagine you are the CAG of India in year 2047.

What will be your strategy for the institution?

"CAG is not a munimji or an accountant or something like that... He is a constitutional authority who can examine the revenue allocation and matters relating to the economy. CAG is the principal auditor whose function is to go into the economy, effectiveness and efficiency of the use of resources by the government. If the CAG will not do it, then who else will do it..."

The above mentioned statement by the Supreme Court of India is enough to mention the working and importance of the CAG. Abiding to this, If I'm the CAG of India in year 2047 then I will design and implement **PARDARSC** strategy which by pronunciation means *pardarshak* - transparent (in Hindi); and stands as acronym for *Proactive, Accountable, Rational, Digitalized, All-around enhancing, Reformative, Systematic, Citizen-engaging* strategy. Through these 8 pillars, I'll try to uplift the efficiency of the institute in a legitimate, diversified and impactful manner. The first pillar of my strategy is being 'Proactive'. I will act proactively in my duties and work. I'll try to control a situation by making things happen and that too by abiding by the rules and regulations of DPC Act 1971, its amendments and other important judgments. Being the advisor to the President and guide, friend & philosopher to the Public Accounts Committee of Parliament; I will always suggest my view with legitimacy and truthfulness. At the same time being proactive, I will also keep a preventive approach for all unprecedented opportunities and challenges. It is the CAG's duty to create an atmosphere wherein public opinion is sensitized of spending government money, especially in areas like health and education hence I'll make sure to have exclusive in-depth analysis of all areas' expenditure.

"CAG is not only about auditing, but also about accountability"

As rightly quoted by ex-CAG Vinod Rai; the second pillar of my strategy is an absolute 'accountability' towards the authority and power vested in us by the Constitution. Being the Comptroller, my service will be the scrutiny of the bits & bytes of the financial records of both the Union and the States individually. I will be the sole responsible authority for auditing of Public-Private partnerships (PPP) projects, consolidated funds, Contingency fund & Public account of both; the Union and States respectively. As the CAG, I'll be the chief guardian of the Public purse and therefore I'll make sure that the public purse is utilized in public interest only and will be accountable for the work of the institution. I'll enlive the tagline of *Lokhitarth Satyanishtha* - Dedicated to truth in public interest and will make the institute to work on full-fledged way to succeed the mission to promote accountability, transparency and good governance through high-quality auditing & accounting and providing independent & timely assurance to the Legislature, the Public and the Executive, that public funds are being collected and used effectively & efficiently. I'll also work to justify the vision of providing independent and credible assurance on public resources and being a global leader in public sector auditing.

Third pillar of my strategy is 'Rationality'. Being rational for me is not just being able to use logical sense rather than emotions to make decisions, but also to be legitimate in actions and fully devoted to the duties. I'll expose the corruption and every single malpractice that will be caught in scrutinization of accounts without any dilemmas or worries as rightly quoted by ex-CAG Vinod Rai,

"We cannot do the role of cheerleaders. We strive to provide objective feedback on the functioning of the various departments of the government."

I'll also watch whether the corrective action suggested by us has been taken or not. In cases whether it has not been taken, I'll report the matter to the PAC. I'll also ensure that the morals of rationality are getting deeper into the roots of the institute, which will certainly keep on blossoming flowers & fruits of honesty. I'll make sure that integrity of audits & auditors is not getting affected by extraneous considerations and external factors. In case such mishaps happen, I'll strictly take corresponding measures.

'Digitalization' is the global trend linking our present to the future and hence it'll be my fourth pillar, where our efforts will be in direction of computerization and modernization of the optimum possible aspects. I'll also work along with my team to make the existing systems more robust. Technology is a boon hence I'll leverage it in public audit and

environment audit. It will be my primary goal to digitize the system, by being in the same pace with the global technological trends; in such a way that a common-man can use our digital systems conveniently and at the same time, its security and authenticity are not compromised. The fifth pillar is 'All-around enhancement'. This focuses on enhancement of the surrounding aspects concerned with the institute. For instance - As in that year we'll be celebrating *Azadi ka Shatabdi Mahotsav*; so in that regard various activities and advancements will be carried out by the institute accordingly. From climate change to PPPs, there are dramatic changes happening in the way government funding and public goods are utilized so we'll change our audit mechanisms in this context correspondingly. I'll also focus on helping the nation in achieving future goals of dealing with Climate change; though the *panchamrit* notion is focused till 2030. Even afterwards I will make the institute work on the development of a resilient and impactful plan to meet sustainable development and will carry out precise audits of efforts by states and the union in that regard.

Sixth pillar is being 'Reformative'. I'll work to reform the working atmosphere into an eclectic mixture of truthfulness & tranquility, dedication & diversity, precision & prolificness, ethics & energy, cheerfulness & chivalry. I'll pay special attention to staff because with a dedicated team and healthy working atmosphere; I'm sure that we'll succeed in projecting the institution as Bulwark of Democratic system more boldly in the optimum period. I'll try to introduce after-office activities for celebrations and appreciation. I'll strengthen my team without fail in quintessential virtues like professionalism, objective and balanced approach, independence, integrity, professional competence, fairness and social awareness by engaging them in team-building exercises. Other than that, Our Auditors are the best in the world. Both developing and developed countries send their auditors to train with us at our academies. Effectiveness and robustness of our processes have led us to being appointed auditor for global agencies. Therefore I'll bring reforms for better governance, administration and outcomes of the academy and will work to propagate its image on a global level to make its identity distinct and one of its kind. Along with these objectives, I'll also try to bring ex-CAGs into staff mentoring sessions, for sharing their vast experience which can be leveraged in present situations for better outcomes. I'll think and act upon the reforms suggested by ex-CAGs and will also present my perspectives for reforms that I'll observe during my tenure.

'Systematic' set-up will be the seventh pillar where I'll work to rejuvenate the working system in such a way that the iteration of any process takes the minimal possible time to move between the ends. I'll make the communication between Provincial Auditors Generals more swift with new innovations tuned with technological advances. I'll be working as an interpreter-translator, explaining the officials' views to the politicians and vice-versa, for which I'll work to introduce a separate autonomous system under the roof of the institute itself. Private auditors are appointed for auditing various public corporations & government companies based on advice of CAG; hence I'll work to set-up an entirely dedicated system working for the selection, administration and workings of them. In addition to that, I'll set-up an in-house grievance section in every office to address, hear and sort out the grievances of staff. 'Citizen-engagement' will be the last but not the least pillar which will primarily focus on bridging the gap between public and the guardians of public-purse. I'll initiate various interactive activities in association with platforms like MyGov, to make the public aware about the works of CAG and to spread awareness of being accountable from personal level. I'll try to publish the audit reports in a very easy, catchy and convenient manner which everyone can understand. I'll also work to smoothify the public grievance and RTI redressals to provide the earliest possible replies.

Dr. B.R Ambedkar has said for CAG that,

"I am of the opinion that this dignitary or officer is probably the most important officer in the Constitution. He is the one man who is going to see that the expenses voted by Parliament are not exceeded, or varied from what has been laid down by Parliament in the Appropriation Act."

Hence, I'll do my best to prove these words true. As a journey of thousand miles begins with a single step, my proposed strategy will be that single step towards achieving the goal of making India a developed nation and ultimately a *Vishwaguru*.



लेखापरीक्षा तथा उसका महत्व



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सेवानिवृत्त (हि.अ.)
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड
एजीज लेआउट, बेंगलूर, कर्नाटक

लेखापरीक्षा का अर्थ है लेखों की सत्यता की जाँच करना। सबसे व्यापक अर्थ यह होगा कि किसी संस्था (सरकारी या गैर–सरकारी) परियोजना या उत्पाद का मूल्यांकन करना है। लेखापरीक्षा यह सुनिश्चित करने के लिए की जाती है कि दी गई सूचना वैध एवं विश्वसनीय है। इसका उद्देश्य यह होता है कि लेखापरीक्षा के पश्चात्, संस्था, कार्यालय परियोजना के बारे में एक राय या विचार व्यक्त किया जाए। वित्तीय लेखापरीक्षा की स्थिति में, वित्त संबंधी कथनों को सत्य एवं त्रुटिरहित घोषित किया जाता है यदि उनमें गलत कथन न हों।

लेखापरीक्षा का इतिहास तथा भारत में लेखा व्यवसाय का विकास

अंकेक्षण या लेखापरीक्षा, लेकिन भाषा के 'अड़ायर' शब्द से लिया गया है। जिसका सही अर्थ है सुनना। शुरू में लेखापरीक्षा सिर्फ सुनने से ही संबंधित था।

पन्द्रहवीं शताब्दी एवं उसके पश्चात्, सन 1494 में दोहरा लेखाप्रणाली के जन्म के पश्चात् बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के फलस्वरूप लेखांकन की उन्नति हुई। भारतीय कंपनी विधान 1913 द्वारा सार्वजनिक कंपनी तथा सरकारी तथा गैर–सरकारी संस्थाओं की लेखापरीक्षा को अनिवार्य कर दिया गया।

सन् 1932 के पश्चात् केंद्र सरकार ने लेखापरीक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के अध्याय 5(4) द्वारा स्थापित एक अधिकारी है जो भारत सरकार तथा सभी प्रादेशिक सरकारों के सभी तरह के लेखों की लेखापरीक्षा करता है। वह सरकार के स्वामित्व वाली कंपनियों का भी अंकेक्षण करता है। उनकी रिपोर्ट पर सार्वजनिक लेखा समितियां ध्यान देती हैं। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक एक स्वतंत्र संस्था के रूप में कार्य करते हैं और इस पर सरकार का नियंत्रण नहीं होता। वर्तमान समय में इस संस्थान के प्रमुख श्री गिरीश चंद्र मुर्मू हैं। ये भारत के 14वें नियंत्रक महालेखापरीक्षक हैं। अनुच्छेद 148 के अनुसार, यह भारत सरकार की रिपोर्ट राष्ट्रपति को और राज्य सरकार की रिपोर्ट, राज्य के राज्यपाल को देते हैं। यह भारत की संचित निधि प्रत्येक राज्य की संचित और प्रत्येक संघ शासित प्रदेश, जहां विधानसभा हो, से सभी

व्यय संबंधी लेखाओं की लेखापरीक्षा करता है।

वर्ष 1977 में अंतर्राष्ट्रीय अंकेक्षण प्रेक्टिस कमेटी की स्थापना हुई। इसने सभी सदस्य देशों को अंकेक्षण मार्गदर्शिका नियमित की है। यह कमेटी एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन का ही अंग है।

लेखापरीक्षा, किसी सरकारी, गैर–सरकारी, व्यापारिक संस्था की हिसाब–किताब की पुस्तकों की विशिष्ट एवं विवेचनात्मक जांच है, जो एक योग्य तथा निष्पक्ष व्यक्ति द्वारा संस्था से प्राप्त प्रमाणकों, प्रपत्रों, सूचनाओं तथा स्पष्टीकरणों की सहायता से की जाती है जिससे, लेखापरीक्षक द्वारा एक निश्चित समय के लिए बनाए हुए हिसाब–किताब के संबंध में यह रिपोर्ट दे सकें कि–

1. रिपोर्ट, उस संस्था की अर्थिक स्थिति का ठीक और सही चित्र प्रस्तुत करता है या नहीं;

2. लाभ–हानि खाता संस्था के लाभ तथा हानि की वास्तविक स्थिति बताता है या नहीं; तथा

3. सभी बही खाते नियमानुसार बनाए गए हैं और पूर्ण हैं या नहीं।

लेखापरीक्षा की अनेक विशेषताएं हैं –

1. किसी भी संस्था (सरकारी, गैर–सरकारी, व्यापारिक तथा गैर–व्यापारिक) के हिसाब–किताब किया जा सकता है।

2. लेखापरीक्षा कार्य ऐसे व्यक्ति द्वारा होना चाहिए जिसका संबंध, संस्था या कंपनी से न हो। तभी निष्पक्ष जांच संभव है। इसके लिए चार्टर्ड लेखापाल की नियुक्ति होती है।

3. लेखापरीक्षा द्वारा की गई जांच सिर्फ गणित से संबंधित शुद्धता को ही प्रकट नहीं करती बल्कि यह एक बुद्धिमतापूर्ण निष्पक्ष जांच है जो हिसाब की पूर्ण शुद्धता दर्शाती है।

4. लेखापरीक्षा में लेखा पुस्तकों की जांच तो होती है। बल्कि इसके अलावा, अन्य वैधानिक पुस्तकें तथा विभिन्न तथ्यों की जानकारी भी करनी होती है।

5. लेखापरीक्षा द्वारा की जाने वाली जांच का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः इस कार्य में बुद्धि एवं चतुराई की आवश्यकता होती है।

6. भारतीय कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत कंपनी का लाभ–हानि खाता बनाते समय भी कुछ महत्वपूर्ण नियमों को ध्यान में रखना चाहिए। कंपनी लेखापरीक्षा को अपनी रिपोर्ट में लिखना होता है कि चिट्ठा नियमानुकूल है या नहीं। लेखापरीक्षा सामान्यतः एक वित्तीय वर्ष या एक लेखा वर्ष के



लेखों का किया जाता है।

लेखापरीक्षा से कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। त्रुटि करना मानव स्वभाव का एक भाग है। लेखापरीक्षा का प्रमुख उद्देश्य भी अशुद्धि व गबन (कपट) का पता लगाना व उन्हें रोकना होता है। मुख्य अशुद्धियां निम्नलिखित हैं–

1. सैद्धांतिक अशुद्धियां
2. भूल संबंधी अशुद्धियां
3. दोहराव संबंधी अशुद्धियां
4. हिसाब संबंधी अशुद्धियां,
5. क्षतिपूरक अशुद्धियां।

अशुद्धि एवं कपट (गबन) में अंतर निम्न प्रकार है –

1. अशुद्धि करने वाले व्यक्ति को ध्यान नहीं रहता कि गलती हो गई है, लेकिन कपट करने वाला जानबूझकर करता है।

2. प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उससे अशुद्धि न हो, लेकिन गबन करने वाला पूर्व निर्धारित इरादे से कपट करता है तथा प्रयासरत रहता है कि पकड़ा न जाए।

3. अशुद्धि का कारण लापरवाही या असावधानी होता है, लेकिन कपट या गबन सावधानी से सोच–विचार कर किया जाता है।

4. गलती होना अपराध नहीं है यदि उचित सावधानी के बाद भी हो, लेकिन गबन कपटमय इरादे से करने के कारण अपराध है जो अक्षम्य है।

लेखापरीक्षा को नियंत्रित करने वाले आधारभूत सिद्धांत निम्न प्रकार हैं –

1. सुहृदयता, वस्तुनिष्ठता व निष्पक्षता,
2. गोपनीयता
3. चातुर्य व दक्षता
4. कार्य नियोजन
5. लेखापरीक्षा निष्कर्ष तथा रिपोर्ट।

लेखापरीक्षा की प्रविधि व प्रक्रिया में घनिष्ठ संबंध है। लेखापरीक्षा सिद्धांतों के आधार पर योजना बनाकर प्रक्रिया अपनाई जाती है। मुख्य रूप से लेखापरीक्षा के दो प्रकार होते हैं –

1. बाह्य लेखापरीक्षा
2. आंतरिक लेखापरीक्षा।

लेखापरीक्षा के माध्यम से एक कंपनी के वित्तीय विवरणों की सटीकता के बारे में पता लगाया जा सकता है तथा यह भी सुनिश्चित किया जा सकता है कि वित्तीय विवरणों की जानकारी सही है। वर्तमान समय में लेखापरीक्षा करना, एक कानूनी आवश्यकता बन गई है। लेखापरीक्षा द्वारा लेखों की सत्यता की जांच होती है। देश की प्रकृति में लेखापरीक्षा एक प्रमुख अंग है। हमें गर्व की बात है कि लेखापरीक्षा कार्यालय में सेवा करने का सुअवसर मिला।



हिंदी के लिए सकारात्मक भावना की आवश्यकता



विनोद कुमार शर्मा (से.नि.)
13, स्वास्तिक प्लाजा, पो.आ. बंजारावाला, देहरादून (उत्तराखंड)

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात भी आज हम पराधीन भाषा को बोलने में गर्व की अनुभूति करते हैं। हमारे देश में अंग्रेजी के जानकार लोगों को विशिष्ट विद्वान माना जाता है। उक्त कारणों से अंग्रेजी का आकर्षण समाज में आज भी बना हुआ है। अंग्रेजी के जानकार लोगों की अपनी विशेष संस्कृति है तथा इनके बीच में अपना स्थान बनाने के लिए हिंदी को अंग्रेजी से प्रतिस्पर्धा करने के साथ ही साथ संघर्ष करना पड़ रहा है। इन सब कारणों के विद्यमान रहते हुए भी इस बात से आज कोई भी इंकार नहीं कर सकता है कि दुनिया के साथ ही हमारे देश एवं समाज में हिंदी का दबदबा लगातार बढ़ रहा है। हिंदी के लिए संभावनाओं के नए द्वार दिन प्रतिदिन खुल रहे हैं। हमारे देश में पहली बार एक राज्य में मेडिकल की पढ़ाई का आरंभ हिंदी में हो चुका है। हिंदी में एम. बी.बी.एस. का पाठ्यक्रम तैयार होना हिंदी के लिए बहुत ही शुभ संकेत हैं। इसके कारण हिंदी प्रेमियों में खुशी की लहर है।

इसके साथ ही शीघ्र ही उत्तराखंड भी मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में कराने वाला दूसरा राज्य बनने जा रहा है। वर्तमान में भी इस राज्य के अधिकतर विद्यालयों में छात्र–छात्राएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई कर रहे हैं, यह हिंदी प्रेमियों के लिए गौरव की बात है। दक्षिण भारत से भी अच्छी खबरें आ रही हैं। हाल ही में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार केरल राज्य की चेल्लनूर ग्राम पंचायत 100 प्रतिशत हिंदी साक्षरता हासिल करने के करीब है। उक्त ग्राम पंचायत का लक्ष्य शीघ्र ही इस गांव को पूर्ण हिंदी साक्षर पंचायत घोषित करने का है। दक्षिण भारत का यह पहला नागरिक निकाय होगा जहां पर लोग हिंदी बोल और समझ सकते हैं। आज कथित रूप से हिंदी के विरोध में खड़े होने वाले लोग भी यह सच्चाई स्वीकार करने के लिए तैयार होते हुए दिखाई पड़ रहे हैं कि हिंदी एक व्यापक जन–समुदाय की भाषा है और सारे देश को कोई भाषा यदि एक सूत्र में पिरो सकती है तो वह निःसंदेह रूप से हिंदी ही है। रोजगारपरक भाषा के रूप में भी हिंदी के बारे में जो भी संदेह लोगों के मन में था, समय के साथ वह भी दूर हो गया है। हिंदी अपने आपको रोजगारपरक भाषा के रूप में स्थापित करने में सफल हुई है। आज हिंदी के बगैर हम भारतीय बाजार की कल्पना भी नहीं कर सकते। भारतीय बाजार में उपभोक्ताओं के एक बड़े वर्ग पर हिंदी का कब्जा है। हिंदी के विज्ञापनों को लोग ध्यान से देखते

एवं समझते हैं तथा उन पर ज्यादा विश्वास भी करते हैं।

हमारे देश में कुछ वर्षों पहले तक हिंदी उपेक्षा का शिकार होती रही है। वह भी इस तथ्य के बावजूद कि इस देश के 70 प्रतिशत से अधिक लोग हिंदी भाषा जानते, समझते, पढ़ते, लिखते और बोलते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार दो प्रतिशत से भी कम लोग अंग्रेजी जानते हैं। हमारे देश में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले पांच समाचार–पत्रों में प्रथम चार समाचार–पत्र हिंदी के हैं। उल्लेखनीय है कि भारत में विभिन्न भाषाओं में लगभग 70 हजार से भी अधिक समाचार–पत्रों का प्रकाशन होता है। भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा यदि कोई है तो वह हिंदी ही है। फिर भी हिंदी को लेकर जिस सकारात्मक भावना की आवश्यकता है, उस भावना का कहीं न कहीं आज भी अभाव दिखाई पड़ता है। आधे–अधूरे मन से हिंदी को स्वीकार करने के कारण ही आज तक भी हिंदी पूरी तरह से अपने आप को कामकाज की भाषा के रूप में स्थापित करने में कामयाब नहीं हो सकी है। हमें इसके कारणों की तह में जाने की आवश्यकता है।

हमारे देश के स्कूलों में बच्चों को कम से कम पांचवीं कक्षा तक की शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में देने की सिफारिश नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) में की गई है। इससे निश्चित रूप से हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में सहायता मिलेगी। वास्तव में देखा जाए तो हिंदी भाषियों को अंग्रेजी या अन्य कोई भारतीय भाषा में बोलने वाले लोगों से कोई परेशानी नहीं है, केवल परेशानी तब होती है जब हिंदी बोलने, लिखने एवं पढ़ने वालों को हीन भावना से देखा जाता है। हिंदी का दिल बहुत बड़ा है तथा वह सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलने में विश्वास रखती है। सभी भारतीय भाषाएं हमारी अपनी भाषाएं हैं। हिंदी के साथ सभी भारतीय भाषाएं भी यदि फले–फूलेंगी तो इससे हमारा देश तेजी के साथ विकास के रास्ते पर आगे बढ़ेगा तथा हमारे देश की सभी भाषाओं के मध्य भी बेहतर समन्वय स्थापित होगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम हिंदी के प्रति सकारात्मक भावना रखें। हमें यह स्वीकार करना होगा कि अंग्रेजी कभी भी ज्ञान का मापदण्ड नहीं हो सकती। अतः हम खुले दिल से सकारात्मक भावना के साथ पूर्ण रूप से हिंदी को अपनाएं तथा अपना सभी कामकाज भी हिंदी में करें।



आजादी का अमृत महोत्सव : स्वप्न और चुनौतियाँ



डॉ. लाखा राम
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

अमृत महोत्सव आत्मविश्वास का विशेष अवसर भी है। आजादी के बाद इन साढ़े सात दशक में हमारी उपलब्धियां किसी भी भारतीय को गर्व का अहसास कराती हैं। हमें इस 75वें वर्ष की महान यात्रा का स्मरण करते हुए, बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर होना है। हमें अपनी गौरवशाली विरासत, एकता, नागरिकता के मूल्यों को अपनाकर, गुलाम मानसिकता से पूर्णतया विमुक्त संकल्प लेकर आगे बढ़ना है।

आज निश्चित रूप से भारत में स्वराज, स्वबोध और सुराज को लेकर एक नया सकारात्मक विमर्श खड़ा हुआ है। भारतीय भाषाओं में शिक्षा और अनुसंधान गुलामी से मुक्ति का सबसे सशक्त साधन है। दास मनोवृत्ति से मुक्ति के लिए अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, सभ्यता पर न केवल गर्व करना अपितु उसे जीवन व्यवहार में भी अपनाना चाहिए। भारत के ज्ञान परंपरा की जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वीकृति बने। भारतीय मूल्य व्यवस्था को सामाजिक जीवन में स्थान प्राप्त हो तथा सर्वत्र स्वदेशी, स्वभाषा और स्वबोध की भावना निर्मित हो। इसे प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में प्रण के रूप में स्वीकार करना चाहिए। स्वतंत्रता का अर्थ है, जीवन की बुनियादी जरूरतों जैसे – रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, शिक्षा का अभाव न होना। हमने इस दिशा में बहुत प्रगति की है। इसके बावजूद और लंबी यात्रा तय करनी है।

भारत प्रगति की राह पर तेजी से आगे बढ़े और विकसित बनने का सपना पूरा करे, इसके लिए शहरों की दशा सुधारना सबसे अधिक आवश्यक है। बदहाल शहरों के विकास के साथ ही शिक्षा के ढांचे पर भी नए सिरे से दृष्टि डालनी होगी। नई शिक्षा नीति (2020) के शीघ्र कार्यान्वयन के साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी की पहुंच में सुनिश्चित हो सके। शिक्षा के भारतीयकरण की दृष्टि से नई शिक्षा नीति इस प्रकार के दृढ़ विश्वास का प्रतिपादन है। प्रत्येक भारतीय अपनी मातृभाषा में बोले, व्यवहार करे, पढ़े और अनुसंधान करे तो दासता से सहज मुक्ति प्राप्त होगी।

आजादी के अमृत महोत्सव व 76वें स्वतंत्रता दिवस के इस वर्ष हर किसी को भारत की विकास यात्रा में योगदान देने के लिए आगे आना चाहिए। आज भ्रष्टाचार के प्रति तो देश में घृणा दिख रही है किंतु यह भावना भ्रष्टाचारियों के प्रति नहीं है। जब भ्रष्ट रसूखदार लोगों को जेल जाने का डर सताने लगे तो समझिए कि ईमानदारी से काम हो रहा है। 'किसी भी बीमारी के ठीक होने की संभावना उस समय खत्म

हो जाती है, जब मरीज को उससे परेशानी होना बंद हो जाए।' प्रायः लोगों ने भ्रष्टाचार को रोजमर्रा के जीवन का अभिन्न हिस्सा मान लिया था।

भ्रष्टाचार भारत की प्रगति में एक बड़ा अवरोध है क्योंकि यह बहुत गहराई तक व्याप्त है। देश का प्रत्येक पहलू इन समस्याओं से प्रभावित हो रहा है। हाल के वर्षों में स्थिति थोड़ी सुधरी है गरीबों के खातों में डी.बी.टी. के जरिए सीधे धन अंतरण किया जा रहा है। वास्तव में भ्रष्टाचार के खात्मे के लिए सरकार के साथ समाज को भी सक्रिय होना होगा। जब तक देश के सभी नागरिक ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगे, तब तक किसी के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित नहीं हो सकती। नागरिक इसके लिए तभी प्रोत्साहित होंगे, जब समाज के सम्मानित प्रबुद्ध व्यक्ति अपने आचरण से उसकी मिसाल कायम करेंगे।

इस समय देश की सबसे बड़ी चुनौती अर्थव्यवस्था की गति को बढ़ाना और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करना है। आत्मनिर्भरता की सबसे बड़ी जरूरत ईंधन और खाद्य तेलों के क्षेत्रों में है। यदि सौर और पवन जैसे अक्षय ऊर्जा के स्रोतों का तेजी से विकास करके ऊर्जा की निर्भरता को कम या समाप्त किया जाए तो इससे पूंजी की बचत होने के साथ ही तेल निर्यातक देशों की मनमानी या तानाशाही से भी बचा जा सकता है। खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनने के लिए किसानों को तिलहन और दलहन की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाए। स्वतंत्रता के अनेक वर्षों बाद आज भारत अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है और अकाल जैसे दुःस्वप्नों को विस्मृत कर पा रहा है।

राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की भूमिका विशेष है और आज हम आधुनिक तकनीकी के व्यापक प्रयोग को नव निर्माण के केंद्रीय घटक के रूप में देख सकते हैं। कोविड विभीषिका में भी जनसंचार, उत्पादन जैसे क्षेत्रों में आधुनिक तकनीकी के प्रयोग ने हमें सुरक्षित रखा। सुरक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में शोध, तकनीकी प्रगति से लाभान्वित हो रहा है। भारत में अधिक श्रेष्ठ एवं सुलभ विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा हो, इसके लिए अनेक संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं। विश्व बाजार में निर्यात की अनेक संभावनाएं हैं, जो पारंपरिक ज्ञान से लेकर आधुनिक तकनीकी तक विस्तृत है।

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों के दृष्टिगत भारत अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा हथियारों, रक्षा उपकरणों और लड़ाकू विमानों पर खर्च करता है। इनका निर्माण भारत में शुरू होने से दूसरे देशों पर सामरिक निर्भरता कम होगी, पूंजी की बचत होगी और देश में रोजगार बढ़ेंगे। भारत सैन्य शक्ति में विश्व में चौथा सबसे ताकतवर देश है। आज का भारत कुशल शीर्ष नेतृत्व में विकसित राष्ट्र के रूप में अपनी छवि बना रहा है।

देश के विकास को तभी गति मिल सकती है, जब नागरिक अपना–अपना कर्तव्य समझकर ईमानदारी से काम करें। किसान अपनी उपज और आमदनी बढ़ाने के लिए नई तकनीकी और बीजों से नई–नई फसलें उगाएं, अध्यापक पूरी तन्मयता से पढ़ाएं, डॉक्टर इलाज और इंजीनियर निर्माण अच्छे से करें, व्यापारी मुनाफे का एक हिस्सा नई तकनीकी और कुशलता की खोज में लगाएं। अगर सभी लोग ईमानदारी से काम करें, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत भी विकसित देशों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा और सारा विश्व भारत का लोहा मानेगा।

आज हम जिस मुकाम पर हैं, हमें दुनिया का कोई देश नजरअंदाज करने का जोखिम नहीं उठा सकता। दुनिया के हर छोटे–बड़े मंच पर हमारी धमक सुनी और महसूस की जा रही है। समावेशी विकास यात्रा जारी है। सेवा के क्षेत्र के बाद अब मैन्युफैक्चरिंग में भी 'मेक इन इंडिया' अच्छा कार्य कर रहा है। अंतरिक्ष कार्यक्रमों की सफलता ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा बढ़ाई है। भारत में महिलाओं को मताधिकार सहित राष्ट्रजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं। प्रत्येक गांव और घर तक बिजली पहुचाने का काम तेजी से हो रहा है। हर घर तक स्वच्छ जल पहुंचाने की योजना भी जारी है, किसानों की आय दोगुनी करने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है।

आजादी के अमृत महोत्सव पर हम सबको भारत की विकास यात्रा में योगदान देने के लिए आगे आना चाहिए। एक भारत, श्रेष्ठ भारत, आत्मनिर्भर भारत और विश्व में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने वाला भारत तभी होगा जब हम आत्मा के स्तर, बुद्धि के स्तर, भावना के स्तर पर, हर ओर, प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्रता, स्वराज्य और स्वबोध से भरे होंगे। प्रत्येक नागरिक के मन में स्वीकृति बने कि स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में उसने जो संविधान आत्मार्पित किया है, उस संविधान में जन–जन के लिए निर्धारित कर्तव्य उसके अपने हैं। यह परकीयों द्वारा थोपा हुआ नहीं है। यह श्रेष्ठता की दृष्टि है और अपने लोगों, अपनी भाषा, अपने समाज, अपने राष्ट्र के प्रति गौरव से परिपूर्ण होने की दृष्टि है। हम भारत के लोगों के मन में राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव न केवल होना चाहिए बल्कि यह प्रदर्शित भी होना चाहिए। हम न भूले कि सत्य, अहिंसा और शांति के मूल्य हमारी रगों में प्रवाहित हैं और मानवता का भविष्य उन्हीं को स्थापित करने में है।

आज के दौर की सबसे बड़ी चुनौती परिस्थितिकीय असंतुलन एवं जलवायु प्रदूषण की है, इससे बचाव के उपायों पर यथाशीघ्र नीतियां बनाने की जरूरत है। हम पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली को अपनाकर प्रकृति के साथ एकात्म स्थापित कर सकते हैं। भारतीय जनतंत्र में हम सबका सामूहिक प्रयास व प्रतिबद्धता ही इस स्वप्न को पूर्ण करने में समर्थ होगी। कुछ लोगों के लिए आजादी का तब तक कोई महत्व नहीं हो सकता, जब तक कि वह सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं होती। आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के बाद भी हमें यह याद रखना चाहिए कि आजादी के लिए हमारा संघर्ष अभी भी जारी है। हमारा स्वतंत्रता संग्राम, हमारी शानदार गाथा की प्रेरणा से भरा एक शानदार अध्याय था। हम उन मूल्यों को पुनः प्राप्त करें जिन्होंने हमारे गौरवशाली राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित किया।

आजादी के 75 वर्ष बाद भी भारत की सबसे बड़ी विफलता शिक्षा, चिकित्सा और स्वच्छ पेयजल की है। सरकारी स्कूलों की दयनीय दशा के कारण गरीब परिवार भी अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ाने और अपने इलाज के लिए निजी अस्पतालों में जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिसमें उनकी कमाई का एक बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है। इन चुनौतियों का सामना तभी आसानी से किया जा सकता है जब राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में देश की जनता भी भागीदार बनेगी और इस मूल मंत्र को आत्मसात करेगी कि लोग राष्ट्र की प्रगति में बाधक उन समस्याओं के निष्पादन में सहायक बनते हैं। कोई भी सरकार सब कुछ नहीं कर सकती। ऐसे में प्रत्येक नागरिक को अपने दायित्वों के निर्वहन के प्रति सक्रिय होना ही होगा।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हर क्षेत्र से अद्भुत नेतृत्व प्राप्त हुआ। श्रेष्ठ वकील, चित्रकार, कवि, साहित्यकार राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत होकर इस संग्राम में जुड़े। स्वतंत्रता का संघर्ष सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक समग्र आजादी का था। इस संघर्ष की जड़ें नैतिकता और सर्वोदय में है। राष्ट्र सर्वोपरिता प्रत्येक भारतवासी की निष्ठा है ऐसी निष्ठा विगत 75 वर्षों में लगातार मज़बूत हुई है। युवा शक्ति का आत्मविश्वास रोमांचकारी है, वैश्विक सूचना प्रोद्योगिकी के परिदृश्य पर भारतीय युवा पेशेवरों ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। सभ्यता के उदय से ही इतिहास के पृष्ठों को पलटते हुए हम भारत को एक सुसंस्कृत एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में देखते हैं।

यह एक तथ्य है कि भारत एक शक्तिशाली और वैभवशाली राष्ट्र है। विश्व समुदाय के बीच पिछले कुछ वर्षों में भारत की प्रतिष्ठा और महत्ता भी बढ़ी है। वस्तुतः इसी कारण विश्व समुदाय अब भारत के प्रति कहीं अधिक आशावान है। यह सहज–सामान्य बात नहीं है कि विश्व के प्रमुख राष्ट्र अब प्रत्येक अंतर्राष्ट्रीय मामले में भारत का सहयोग और समर्थन लेना आवश्यक समझने लगे हैं। इसे हमने कोविड महामारी के रूप में सदी के सबसे बड़े संकट के समय ही नहीं बल्कि रूस–यूक्रेन युद्ध, तालिबान–अफगानिस्तान युद्ध, ताईवान संकट, नेपाल–पाकिस्तान–श्रीलंका में उभरे आर्थिक संकट में उपजी परिस्थितियों के दौरान भी देखा है।

भारत जैसे विशाल आकार और व्यापक विविधता वाले देश का सैकड़ों वर्षों के विदेशी शासन से मुक्त होकर एकाएक खड़ा होना आसान नहीं था। भारत ने न केवल स्वतंत्रता के बाद भी अपने अस्तित्व को बनाए रखा, बल्कि समय के साथ समृद्ध भी होता गया। आज विदेशी कंपनियां अपने प्लांट लगाने के लिए भारत की ओर रुख कर रही है। अनुमान है कि 2030 तक भारत जापान को पछाड़कर तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अब भारत न केवल दुनिया का सबसे बड़ा बल्कि सबसे जीवंत लोकतंत्र भी है। वन नेशन–वन राशन कार्ड, वन नेशन–वन टैक्स से जीवन की सुगमता से लेकर कारोबारी सुगमता भी बढ़ी है।

भारत को यदि विकसित राष्ट्र बनाना है, तो पूरे देश को कर्मयोग पर चलते हुए इस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने मानस पटल से ओझल नहीं होने देना होगा। श्रीमद्भगवद गीता में ज्ञान योग और कर्मयोग की विस्तार से चर्चा है। आत्मसिद्धि के लिए कर्मयोग को ही प्रमुखता दी गई है। भारत का नैतिक और साहसी नेतृत्व वचनबद्ध है कि भारत को एक अति–शक्तिशाली राष्ट्र बनाएंगे। परिष्कार व परिवर्तन के मंत्र के साथ हम सभी को प्रणबद्ध होना चाहिए।



'वीरबाला तिलू रौतेली' – पुस्तक समीक्षा



हीरा बल्लभ भट्ट, सलाहकार
भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
नई दिल्ली–110124

उपरिलिखित कथानक पर श्री मेहरबान सिंह नेगी जी द्वारा रचित चरित्र प्रधान प्रथम उपन्यास पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इससे पूर्व कि मैं पुस्तक समीक्षा पर अपनी कलम उठाऊं मैं चाहता हूं कि इस पत्रिका के पाठकों को उपन्यासकार की लेखनी से परिचय करवा दूं।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के मुख्यालय की आपकी दृष्टि के समक्ष इस त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के पूर्व यशस्वी संपादक श्री मेहरबान सिंह नेगी जी की लेखनी से इस पत्रिका के सुधी पाठक सुपरिचित हैं और पुराने पाठक तो यह भी जानते हैं कि उनके संपादन काल में पत्रिका को देश के गणमान्य विद्वानों तथा देश–विदेश में कार्यरत विभागीय पाठकों द्वारा खूब चाहा–सराहा गया। उन्हें 'लेखापरीक्षा प्रकाश' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए 4 सितम्बर, 2008 को श्रीमती शीला दीक्षित, तत्कालीन मुख्यमंत्री एवं अध्यक्ष हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा त्रिवेणी सभागार में समारोह पूर्वक प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके संपादन काल में हिंदी में प्रकाशित विभागीय त्रैमासिक अव्यवसायिक पत्रिका को उसी वर्ष (सन् 2008 में) हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति जी के करकमलों से राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। तद्नंतर एक बार पुनः उनके ही संपादन काल में सन् 2010 के हिंदी दिवस के अवसर पर पत्रिका को राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

समीक्षाधीन उपन्यास की नायिका तिलू भारत के गढ़वाल रजवाड़े की ऐसी वीरबाला थी जिसने 17वीं सदी के उत्तरार्द्ध में 15 से 22 वर्ष की आयु तक, तब उन आठ वर्षों के दौरान जब उस काल खण्ड में महिलाओं में इतनी जागृति नहीं थी, अपनी धारदार तलवार उठाकर अपनी मातृभूमि की रक्षा और शत्रु पक्ष से अपने परिजनों के बलिदान का प्रतिशोध लेने हेतु अपनी सेना का संचालन करते हुए ऐसा अदम्य साहस, अप्रतिम शौर्य और अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया जिससे शत्रु पक्ष में हाहाकार मच गया।

वीरबाला तिलू की वीरता की गाथा जनश्रुतियों और लोकाख्यानों के शब्दों तथा लोक गीतों के सुरों की गूंज गढ़वाल रजवाड़े के गाँव–गाँव में घर–घर तक गुंजायमान हुई। उन गीतों के प्रतिध्वनित स्वरों की प्रतिगूंज ने देवभूमि की घाटियों से हिमालय के शिखरों तक के जनमानस के दिलों

के तारों को छुआ। महिला जागृति व साहसी बालाओं द्वारा पुरुष सैनिकों के साथ मिलकर प्रदर्शित शौर्य की वह गाथा आज की जनसामान्य के कर्णगोचर होते ही हृदय तल को स्पर्श करती है और युवा पीढ़ी को देश प्रेम एवं स्वाभिमान की प्रेरणा प्रदान करती है।

उपन्यासकार ने पुस्तक में पाठकों को भारत के इतिहास की एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि में सत्रहवीं शताब्दी की सामाजिक स्थिति, तत्कालीन रीति–रिवाजों एवं सुसंस्कृत लोकाचारों से परिचय कराते हुए कथोपकथन के माध्यम से कथा विस्तार दिया है। इस उपन्यास की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :–

1. यह उपन्यास नायिका प्रधान है जो नायिका के धीरोदात्त चरित्र से संबंधित आंचलिक लोकाख्यानों और जनश्रुतियों पर आधारित है। उपन्यासकार ने नायिका की जीवनी एवं जीवन संचय से संबंधित उन महत्वपूर्ण भूलती–बिसरती जनश्रुतियों को लेखकीय संजीवनी दी है।

2. राजतंत्र के काल खण्ड की घटनाओं से संबंधित प्रस्तुत उपन्यास के बारे में उल्लेखनीय है कि जहां शत्रु पक्ष खलनायक की स्वाभाविक भूमिका में था वहीं कुछ स्थानीय महिलाएं भी परंपराओं की आड़ में तिलू के स्वप्निल संकल्पों के समक्ष विघ्न–बाधाएं उत्पन्न करने का प्रयास कर रही थीं। उन बाधाओं से पार पाने हेतु लेखक ने तिलू, उसके माता–पिता और गुरू द्वारा बरती गई सावधानियों को भी उजागर किया है। इस प्रकार की आंतरिक प्रतिरोधी के समाधान हेतु अपनाया गया मनोवैज्ञानिक तरीका जहां कारगर साबित हुआ वही आगे चलकर उन महिलाओं ने अपनी गलती भी महसूस की।

3. अपने जीवन में सफलता पाने वाले दूसरे मानवों की तरह तिलू का भी बाल्यकाल से ही अपना एक रूझान था। उसने अपने मन में संजोए सपनों को साकार करने के लिए समर्पित होकर प्रयास किए, योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ते हुए और सफलता की सीढ़ियां चढ़ते हुए लक्षित सिद्धि प्राप्त की। तिलू के जीवनकाल की उपलब्धियां वीरता का मानक स्थापित कर आज भी युवाओं में देश प्रेम की भावना जगाने और साहस वृद्धि में उत्प्रेरक का काम करती हैं।

4. लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु नायिका का अद्भुत समर्पण भाव, देशप्रेम, माता–पिता की अनौपचारिक शिक्षा और गुरू के द्वारा प्रदत्त औपचारिक शिक्षा–दीक्षा के साथ उसका उत्साहवर्धन उन नियत लक्ष्यों की प्राप्ति में कारगर साबित हुए।

5. तिलू की अभिरूचि को आगे बढ़ाने में उसके माता–पिता और गुरू का हाथ था। उन्हें एक युग परिवर्तनकारी की मनोवृत्ति समझने, भावनाओं पर नियंत्रण रखने और उस अंकुर को हानिकारक तत्वों से बचाकर आगे बढ़ाने हेतु समय–समय पर मनोविज्ञान का सहारा भी लेना पड़ा।

6. उपन्यासकार ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि एक बार किशोरी बाला तिलू यह नहीं समझ पाती है कि उसे देशकाल की उस परिस्थिति विशेष में क्या करना चाहिए। लेकिन अपनी मां के द्वारा झकझोरे जाने, कर्तव्य याद दिलाए जाने और मार्गदर्शन के उपरांत वह अपने समक्ष कर्तव्यों के लिए प्राथमिकता नियत करती है, पूर्वकालिक वीरों के जीवन संचय के परिपेक्ष में अपनी शक्ति का

मूल्यांकन करती है और साहस अर्जित कर कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ती हैं।

7. जीवन में लक्ष्य निर्धारित हो, अवसर मिले, हौसला हो, सही मार्ग दर्शन हो, प्रशिक्षण हो, लगातार अनुभव हासिल करने की जिज्ञासा हो और संकल्प के साथ सही दिशा में कर्म करते रहें तो किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति असंभव नहीं। यह साधक की इच्छा शक्ति पर निर्भर है कि वे किसी से प्रेरणा लेते हैं या ऐसा प्रयास करेंगे जो दूसरों के लिए प्रेरणादायी हो।

8. यदि सैनिकों के कुछ साथियों पर शत्रुदल ने एकाएक छिप कर आक्रमण किया और हानि पहुंचाई तो उनके साथी सैनिक अपनी जान की परवाह किए बिना शत्रु सैनिकों से प्रतिशोध लेने के लिए उन पर टूट पड़ते हैं। लेखक ने उस मानवीय गुण धर्मिता को भी छुआ है जब किसी महिला साथी या रिश्तेदार पर कोई प्रहार करे तो मानव में प्रतिशोध की भावना अपनी शक्ति से कई गुना बढ़कर आती है। तब वह परिणाम की परवाह किए बिना अपनी पूरी ताकत से उनका सामना करता है।

9. झांसी की रानी से दो सदी पूर्व जन्मी वीरलक्षणी तिलू ने अपनी साहसी सहेलियों को सेना में सम्मिलित कर प्रथम बार सेना का कुशल संचालन किया। साहसी बालाओं का सेना में धमाकेदार प्रवेश और युद्ध में सक्रिय भागीदारी के साथ विजयश्री प्राप्ति के बाद वह वीरबाला विशेषण से विभूषित हुई।

10. जब साहसी बालाएं अपने पुरुष सैनिक साथियों के साथ सैनिक प्रशिक्षण ले रही थी और पलटवार की तैयारियां कर रही थी तब अधिकांश क्षेत्रीय ग्रामीण महिलाओं ने जिस नागरिक कर्तव्य बोध का परिचय दिया उसका भी उल्लेख किया है।

11. वीरबाला ने न तो कभी अपने को अबला समझा और न ही उसका पराजय से साक्षात्कार हुआ। उसने 7 वर्ष में 8 युद्ध लड़े और 13 गढ़–गढ़ियों पर विजयश्री प्राप्त कर गढ़वाल रजवाड़े की एक–एक इंच भूमि शत्रुओं के कब्जे से मुक्त करवाई।

12. धीरोदात चरित्र वीर–वीरांगनाओं के जीवन संचय की कथाएं न तो दुःखान्तक और न ही सुखान्तक की श्रेणी में आती है लेकिन इन्हें प्रेरक एवं संवेदनी श्रेणी में रख सकते हैं।

13. यह हिंदी उपन्यास भाषा की दृष्टि से बहुत अच्छा बन पड़ा है। इसमें आंचलिक हिंदी के शब्दों के समावेश से और भी रोचकता आई है। कथा शिल्प उच्चकोटि का है और कथोपकथन काल खण्ड के अनुरूप और संतुलित हैं। लेखक पाठक की जिज्ञासा बनाए रखने में भी सफल हुआ है।

लेखक ने स्वकथ्य में कुछ विशेष लिखा है जिसके कुछ



बिन्दु पाठकों की सुलभ जानकारी के लिए नीचे उद्धृत हैं :

1. किशोरी तिलू के गुरू पं. शिब्बू पोखरियाल ने उसे सार्वजनिक तौर पर वीरलक्षणी शब्द से संबोधित कर जो सम्मान दिया था वह राजा भोज द्वारा प्रतिभावान युवा कवि कालिदास के यौवन काल में प्रतिष्ठा प्रदान कर दरबारी कवि के सम्मानित पद पर नियुक्ति से कम न था।

2. विद्वानों की मान्यता है कि प्रतिष्ठा व्यक्ति की प्रतिभा के एक चौथाई योग्यता के बराबर होती है। प्रतिभावान जन प्रतिष्ठा प्राप्ति के बाद बढ़े उत्साह के साथ प्रयास करते हुए बाकी चौथाई योग्यता अर्जित कर अपनी प्रतिभा को पूर्णता प्रदान करते हैं। राजा द्वारा युवा कवि कालिदास को सही समय पर प्रदत्त प्रतिष्ठा के परिणामस्वरूप ही वह अद्भुत प्रतिभा निखर कर आई।

3. आगे चलकर जैसे महाकवि कालिदास को कविकुल गुरू के रूप में वैश्विक स्तर पर ख्याति मिली वैसे ही किशोरी बालिका तिलू भी अपनी उस नवांकुरित वीरलक्षणी प्रतिभा से अर्जित प्रतिष्ठा की आधारशिला पर वीरबाला बन कर उभरी।

4. इन ऐतिहासिक उपलब्धियों में राजा भोज और तिलू के गुरू पं. पोखरियाल की पारखी दृष्टि को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। एक और उल्लेखनीय बात जो उभर कर सामने आई है वह यह है कि वीरबाला तिलू के नाम के साथ उसके गुरू का नाम भी समाज में बड़े सम्मान से लिया जाता है जो उस गुरू का कोई भी अन्य शिष्य नहीं कर पाया।

5. ऐसा नहीं है कि जीवन–संध्या में या अमरत्वोपरांत प्रतिभाओं को प्रतिष्ठा प्रदान करना ठीक नहीं है। लेकिन, इससे समाज को वह अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता जो उन्हें ससमय प्रतिष्ठित करने से मिलता। यदि समय पर किसी की प्रतिभा का आकलन कर सम्मान दिया जाए तो व्यक्ति उस क्षेत्र में पूर्णता प्राप्ति हेतु अथक प्रयास करता है। अंततः उन प्रयासों का लाभ समाज को ही प्राप्त होता है।

समाज में देश प्रेम की भावना जगाकर नागरिक कर्तव्य याद दिलाने वाले इस स्तर के उपन्यास कम ही लिखे गए हैं। मैं उपन्यास के अद्योपांत यह कह सकता हूं कि यह उपन्यास हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस उपन्यास में एक आदर्श शिक्षार्थी, माता–पिता का कर्तव्य, गुरू की शिक्षा–दीक्षा, आपात काल में नागरिकों का कर्तव्य भाव और साहसी वीर–वीरांगनाओं की धमनियों के रक्त का अथाह प्रवाह सब कुछ पढ़ने को मिला।

नेगी जी ने 'लेखापरीक्षा प्रकाश' पत्रिका में एक रचनाकार तथा संपादक के रूप में कार्य निष्पादन करते हुए अपनी लेखनी को पैनी धार दी। यह उनका पत्रिका में प्रेम ही है कि वे अपनी सेवानिवृत्ति के 13 वर्ष बाद भी इस पत्रिका से जुड़े हुए हैं। उनके द्वारा रचित उपन्यास को पढ़ने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुंचा हूं कि पत्रिका में प्रकाशित होने वाले रचनाधर्मियों के लिए भी यह पुस्तक एक उत्प्रेरक का काम करेगी। अतएव मैं पाठकों से आग्रह करूंगा कि आप भी प्रेरणा प्राप्ति हेतु एक बार नेगी जी का प्रथम प्रयास से रचित उपन्यास अवश्य पढ़ें और आप भी अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ें।

जीवन में सफलता के लिए ध्यान देने योग्य बातें



सुश्री मीना भारद्वाज
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

मानव जीवन की सफलता अनेक पहलुओं पर निर्भर करती है। दिन–प्रतिदिन की दिनचर्या अनेक पहलुओं पर निर्भर करती हैं, लेखिका ने इस लेख में अनेकों बिंदुओं पर प्रकाश डाला है।

मानव जीवन अनमोल है। जीवन का महत्व भी अनमोल है। जीवन की सफलता का अर्थ है, एक अच्छा जीवन का होना। इसकी सफलता में विशेष लक्ष्य की प्राप्ति अंतर्निहित होती है जिस पर हमारे भविष्य का निर्माण होता है जिसकी कल्पना मानव करता है। एक मानव न तो भगवान ही होता है और न ही साधारणतया कोई महापुरुष होता है। अच्छा इंसान बनने में अनेकों बाधाएं आती हैं परंतु दृढ़ निश्चय से सभी बाधाओं को दूर करते हुए मानव जीवन में प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए ध्यान देने योग्य अनेकों बातें हैं जिन्हें मानव अपने जीवन में उतारकर या धारण करके आगे बढ़ सकता है तथा दूसरों के लिए भी मार्गदर्शक अथवा प्रेरणादायक हो सकता है। ये बातें दिन प्रतिदिन की दिनचर्या में यद्यपि बहुत छोटी–छोटी बातें होती हैं परन्तु उनके परिणाम दूरगामी होते हैं। इनमें से कुछेक ध्यान देने योग्य बातें इस प्रकार हैं:–

1. **आत्मविश्वास** – मानव की सबसे बड़ी ताकत आत्मविश्वास होती है। अपनी सोच–समझ के अनुसार वह स्वयं पर निर्भर करता है। अपने जीवन के फैसले स्वयं लेता है। उसे अपनी सोच पर काबू रखना चाहिए क्योंकि सोच ही असलियत का रूप ले लेती है। कहने का तात्पर्य यह है कि नकारात्मक विचारों को मन में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए क्योंकि नकारात्मक विचार आत्म–विश्वास कम कर देते हैं। अतः सदा सकारात्मक विचार तथा सोच अच्छी होनी चाहिए।

2. **जीवन में असफलताओं से सीखना** – मानव जीवन में असफलताओं का भी महत्व होता है। एक बार गलती करने के बाद इंसान भूल को सुधारने का प्रयास करता है तथा अपने आप को बेहतर बनाता है। मानव अपने जीवन में नाकामियों से ही सीख सीखता है और भविष्य का पथ अच्छा बनाता है।

3. **अच्छे लक्ष्य निर्धारित करना** – जीवन की सफलता बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि निर्धारित किया गया लक्ष्य किस सीमा तक प्राप्त हुआ है। उदाहरणार्थ प्रतिदिन सुबह ही दिनभर में किए जाने वाले कार्य निर्धारित कर लेने चाहिएं तथा उनका समय भी नियत होना चाहिए। समयबद्ध तथा योजनाबद्ध तरीके से किए गए कार्यों में सदैव

सफलता मिलती है तथा मानव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

4. **अपनी तुलना दूसरों से न करना** – किसी को भी अपनी तुलना दूसरों से नहीं करनी चाहिए। दूसरों से तुलना करने वाला व्यक्ति सदा ही परेशान, दुःखी रहता है। जिस प्रकार एक हाथ में पांच उंगलियां एक समान नहीं होती उसी प्रकार हर मानव भी एक समान नहीं हो सकता। हर व्यक्ति का स्वभाव, गुण, योग्यता तथा कार्य क्षमता ईश्वर ने अलग दी है। अतः दूसरों से तुलना करके अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए बल्कि अपनी योग्यता के अनुसार प्रयासरत रहना चाहिए।

5. **दूसरों के लिए रोल मॉडल बनना** – सदैव इस प्रकार से कार्य करना चाहिए कि दूसरे लोग आपका अनुसरण करने को मजबूर हो जाएं। ऐसा केवल तभी संभव होगा जब हमारी सोच सकारात्मक हो। दूसरों के प्रति सहायता का हाथ बढ़ाने वाला व्यक्ति रोल मॉडल बन सकता है। किसी की सहायता करने के बदले में कभी भी कोई प्रत्याशा नहीं करनी चाहिए। सबके लिए अच्छी सोच रखना भी रोल मॉडल बनने में सहायक सिद्ध होगा।

6. **किसी भी काम को छोटा नहीं समझना** – जीवन में कभी भी किसी काम को छोटा नहीं समझना चाहिए। कभी–कभी बड़े–बड़े लोगों में त्याग की भावना होते हुए उन्हें छोटे–छोटे काम करते हुए देखा गया है। इससे उन लोगों की महानता का पता चलता है क्योंकि काम कोई भी छोटा नहीं होता। हर कार्य का अपना विशेष महत्व होता है। उसे पूरी लग्न तथा मेहनत से करना चाहिए।

7. **दृढ़ इच्छा शक्ति का होना** – जीवन की सफलता के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति का होना अत्यंत आवश्यक है। दृढ़ इच्छा शक्ति मन का वह मजबूत स्तंभ होता है जिससे मानव जीवन में असंभव को संभव बनाया जा सकता है। किसी भी कठिन कार्य को करने में अत्यधिक परेशानियां आ सकती हैं, परंतु यदि कार्य करने वाले की इच्छा शक्ति दृढ़ है तो परेशानियों को भी हार माननी पड़ती है तथा सफलता चरण चूमती है।

8. **स्वयं से प्यार करना** – हर मनुष्य को स्वयं से प्यार करना आवश्यक है। स्वयं से प्यार न करना हीन भावना से ग्रसित मानसिकता का सूचक है। स्वयं से प्यार करने का तात्पर्य मानव को अपने महत्व का एहसास होना है अर्थात उसका जीवन मूल्यवान है।

9. **समय तथा परिस्थितियों के अनुसार तालमेल बैठाना** – यह भी एक अच्छा गुण होता है कि जो मनुष्य समय तथा हालात के अनुसार अपना निर्णय लेता है वह सफलता की सीढ़ियां चढ़ जाता है। क्योंकि समय तथा परिस्थितियां किसी के हाथ में नहीं होती तथा उन पर मानव का नियंत्रण नहीं होता। उनके हिसाब से सही निर्णय लेकर अपना आगे का जीवन सही चलाने वाला व्यक्ति समझदार होता है तथा सफल जीवन जीता है।

10. **बनावटीपन का त्याग करना** – जीवन में बनावटीपन का त्याग करना तथा असलियत में रहना ही सफलता की निशानी है। कई बार कई व्यक्तियों को देखा जाता है कि वो किसी के आगे कुछ बर्ताव करते हैं तथा दूसरों के आगे कुछ और बर्ताव करते हैं इसे ही बनावटीपन या दिखावा कहा जाता है। इसमें आदमी का असली स्वरूप का पता नहीं चल पाता। ऐसे लोग कई बार बड़े घातक सिद्ध होते हैं। वे अपने कार्यपूर्ति के लिए दूसरों के समक्ष दिखावा कर

देते हैं। दूसरा व्यक्ति भी उनके बहकावे में आ जाता है। इससे दूसरे व्यक्ति को कई बार बड़े–बड़े नुकसान उठाने पड़ जाते हैं। अतः न तो बातों में तथा न ही व्यवहार में बनावटीपन होना चाहिए। इंसान को असलियत में ही जिंदगी जीनी चाहिए।

11. **दूसरों की सफलता की कामना करना** – मानव को दूसरों की सफलता और अच्छी बातों से खुश रहना चाहिए। अच्छा इंसान बनना इस बात पर निर्भर करता है कि आप दूसरों की सफलता के लिए कुछ अच्छा करते हैं या किसी के सहायता मांगने पर उसकी सहायता करते हैं तथा उनके सफल होने पर या उनका कुछ अच्छा होने पर प्रसन्न होते हैं। इस सहायता करने के पीछे सहायता करने वाले व्यक्ति का कोई प्रयोजन अथवा प्रत्याशा छिपी हुई नहीं होनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि जो सहायता की गई है, उसके बदले में सहायता करने वाला व्यक्ति कुछ और लेने की अपेक्षा न रखे। इस सहायता में आर्थिक, सहायता अथवा अन्य प्रकार की भी सहायता हो सकती है। किसी की सहायता करके एहसान नहीं जताना चाहिए।

12. **दूसरों का सम्मान करना**– दूसरे व्यक्तियों का सम्मान करने वाला व्यक्ति सदा ही स्वयं भी सम्मान पाने का हकदार होता है। किसी को भी हीन भावना से कभी नहीं देखना चाहिए। हर व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जिसकी वह स्वयं के लिए दूसरे से अपेक्षा रखता हो। क्योंकि कहा गया है कि जैसा हम किसी को देंगे वैसा ही बदले में हमें मिलेगा। यदि हम किसी के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, उसका सम्मान करेंगे, उसकी सहायता करेंगे तो बदले में हमें भी उसकी तरफ से वैसा ही व्यवहार, सम्मान मिलेगा।

13. **सकारात्मक सोच रखना** – सकारात्मक सोच मानव जीवन की सफलता की वह कुंजी है, जिससे जीवन की कठिनाइयों के ताले खुल जाते हैं। सकारात्मक व्यक्ति सदा दूसरों में भी अपनी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह कहा गया है कि खराब तबियत से व्यक्ति उतना कमज़ोर नहीं होता उससे अधिक वह नकारात्मक विचारों से थकता है। सकारात्मक सोच से हमारी मानसिक ऊर्जा बढ़ जाती है। सकारात्मक सोच से इंसान को न केवल मानसिक बल मिलता है बल्कि उसमें शारीरिक ऊर्जा का भी संचार होता है जिससे कार्य करने में अधिक सक्षमता आती है तथा कार्य भी सही ढंग से सम्पन्न होता है।

14. **नया सीखने की आदत डालना** – इंसान को सदा ही कुछ नया सीखने की चाह उसकी प्रगति



का एक आयाम होती है। नया सीखने की इच्छा इंसान के अंदर से ही उत्पन्न होती है। कुछ नया एक छोटे से बच्चे से भी सीखा जा सकता है। अपने अनुभव, दूसरों के अनुभव तथा अपने प्रयोग के तौर–तरीकों से नयापन आ सकता है। इसके लिए इच्छाशक्ति तथा परिश्रम दोनों का होना आवश्यक है। नया करने से जीवन में भी नयापन आता है तथा प्रगति और विकास के मार्ग पर हम आगे बढ़ने में सफल होते हैं।

15. **व्यवहार कुशलता** – व्यवहार कुशलता मानव जीवन का वह आवश्यक गुण है जिससे बड़े से बड़े कार्य सफलता से हो जाते हैं। उदाहरणार्थ बोलने के ढंग पर बहुत हद तक यह निर्भर करता है कि दूसरे ने आपकी बात को किस तरह लिया है। संयमित वाणी का कार्य की सफलता में बहुत बड़ा योगदान होता है। कहा भी गया है कि शब्द वे कुंजी होते हैं जिन्हें यदि बोला जाए तो वे किसी का दिल खोल सकते हैं और किसी का मुंह भी बंद कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि बात किस प्रकार से अभिव्यक्ति की गई है उसका बहुत अधिक महत्व है। इसी संदर्भ में कहा भी गया है – "मीठे बोल बोलिए क्योंकि अल्फाज़ों में जान होती है। ये दिल के समंदर के वो मोती हैं जिनसे इंसान की पहचान होती है।" अपने व्यवहार में मृदुभाषी होना, नम्रता रखना, मधुरता होना आवश्यक है। इन सभी गुणों के होते हुए यह भी ध्यान रखना आवश्यक है, कि कोई आपकी बात को हल्के में अथवा अन्यथा न ले। सही ढंग की बातचीत से बिगड़ता हुआ काम भी बन जाता है तथा यदि वार्ता का ढंग सही न हो तो बनता हुआ काम भी बिगड़ जाता है ऐसा अक्सर देखा जाता है। अतः सही व्यवहार कुशलता का होना जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है।

16. **समस्याओं से घबराना नहीं चाहिए** – समस्याएं हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। इनसे हमें घबराना नहीं चाहिए। समस्याओं का सामना करना चाहिए तथा उनका हल निकालना चाहिए। क्योंकि कहा गया है कि जब जीवन अस्थायी है तो समस्याएं कैसे स्थायी हो सकती हैं। उनको परिश्रम करते हुए, युक्ति निकालकर, सोच समझ पूर्वक हल करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। हर समस्या के निदान में मेहनत करते हुए सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए तथा कोशिश करनी चाहिए कि समस्या उत्पन्न करने वाले कारणों को दूर किया जाए।

17. **बुरी आदतों का त्याग करना** – जीवन की सफलता के लिए बुरी आदतों का त्याग करना जरूरी है। इस संदर्भ में कहा गया है कि अपनी बुरी आदतों को खत्म कर दीजिए इससे पहले कि वो आपको खत्म कर दें। इन बुरी आदतों में समय का पाबंद न होना, कार्य को अच्छी प्रकार न करना, लक्ष्य निर्धारित न करना, खाने–पीने की सही आदतें न होना, दिनचर्या का सही न होना आदि शामिल हैं। समय रहते यदि बुरी आदतों को नहीं छोड़ा जाता तो ये जीवन की सफलता में बाधक बन जाती हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि मानव जीवन की सफलता अनेकों पहलुओं पर निर्भर करती है। दिन प्रतिदिन की दिनचर्या में ऐसी बहुत सी छोटी–छोटी बातें होती हैं जिन पर यदि हम ध्यान दें तो जीवन सुखमय बन जाता है तथा हम सफलता की सीढ़ियां चढ़ जाते हैं। इन बातों के पालन में हमें कुछ खास मेहनत अथवा श्रम नहीं करना पड़ता बल्कि थोड़ा सा ध्यान देने से ही हमारा तथा हमारे आसपास के लोगों का जीवन सफल हो जाता है।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान



महेश एम जयसिंघानी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
मध्य रेल, मुंबई छ.शि.म.ट., मुम्बई

हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं बल्कि भारत की आत्मा है। यह भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। यह विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है जो सरल और समृद्ध है। यह एक विशाल सागर की तरह है। जिस प्रकार सागर में छोटी–छोटी नदियां आकर मिलती हैं और सागर उन्हें अपना अभिन्न अंग बना लेता है। ठीक उसी प्रकार हिंदी भाषा भिन्न भाषाओं से आए हुए शब्दों को अपने में समाहित कर उन्हें अपना अभिन्न अंग बना कर खुद को समृद्ध कर लेती है।

हिंदी भाषा जन–जन की भाषा है। देश के कोने–कोने में आम–जन अपने भावों को सरलता–सहजता से हिंदी में अभिव्यक्त कर पाते हैं। यह सरल, सहज, सुबोध एवं वैज्ञानिक भाषा है। इसमें जैसे लिखा जाता है, वैसे ही पढ़ा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी और हिंदुस्तान एक दूसरे के पूरक हैं। मशहूर शायर इकबाल ने लिखा है – "हिंदी हैं हम वतन हैं, हिन्दुस्तां हमारा।" यह हमारे विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करती है। भारतेन्दु हरिश्चंद ने लिखा है –

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के,
मिटत न हिय को सूल।।

अर्थात् अपने भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार के उन्नति की जड़ है। इसके ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। दूसरे शब्दों में कहें तो मातृभाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नतियों का आधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बगैर अपने हृदयस्थ भावनाओं का संप्रेषण संभव नहीं है।

हिंदी भाषा की महत्ता को ध्यान में रखते हुए ही इसे 14 सितंबर 1949 को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में व्यवस्था की गई है। 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष इस स्मृति को ताजा रखने के लिए हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान की 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी है। साथ ही, संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप है।

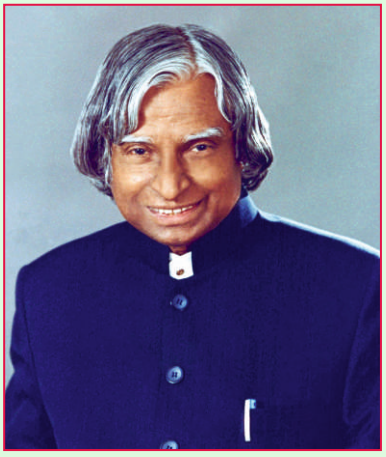
आत्मनिर्भर का शाब्दिक अर्थ है

खुद पर निर्भर रहना। अर्थात् अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं के बल पर करना। इसी प्रकार, आत्मनिर्भर भारत बनने का तात्पर्य भारत में उपभोग की जाने वाली वस्तुओं का निर्माण भारत में ही करना ताकि किसी अन्य देश पर इस देश के जरूरत की वस्तुओं के लिए निर्भर न रहना पड़े। भारत आत्मनिर्भरता की ओर काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सबके सहयोग की आवश्यकता है। सबके सहयोग के बिना यह संभव नहीं है।

देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समाज का हर तबका भरसक प्रयासरत है। अनेक वस्तुओं का निर्माण देश में होने लगा है। जिस प्रकार, देश के आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सबके प्रयास की आवश्यकता है, उसी प्रकार आत्मनिर्भरता हेतु एक ऐसी सामान्य भाषा की भी आवश्यकता है जो प्रभावी संप्रेषण प्रदान कर सके और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के कार्य को द्रुत गति प्रदान कर सके।

हिंदी ही वो भाषा है जो उत्पादकों को उपभोक्ताओं की बातों को समझते हुए उनके आवश्यकताओं का ठीक–ठाक आकलन करने, अपने कर्मचारियों/कामगारों को आवश्यक निर्देश देने तथा बाजार में उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए बेहतर संप्रेषण का माध्यम प्रदान करती है। हिंदी विभिन्न पहलुओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करती है। हिंदी न हो तो भारत के रास्ते में एक बड़ा भाषायी रोड़ा उत्पन्न हो जाएगा और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना एक परिकल्पना मात्र ही रह जाएगा। इस प्रकार, आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है।

- *असली शिक्षा एक इंसान की गरिमा को बढ़ाती है और उसके स्वाभिमान में वृद्धि करती है। यदि हर इंसान द्वारा शिक्षा के वास्तविक अर्थ को समझ लिया जाता और उसे मानव गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाता, तो ये दुनिया रहने के लिए कहीं अच्छी जगह होती।*
- *शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता, और भविष्य को आकार देता हैं। अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं, तो मेरे लिए ये सबसे बड़ा सम्मान होगा।*
- *तब तक लड़ना मत छोड़ो जब तक अपनी तय की हुई जगह पर ना पहुँच जाओ– यही, अद्वितीय हो तुम। जिन्दगी में एक लक्ष्य रखो, लगातार ज्ञान प्राप्त करो, कड़ी मेहनत करो, और महान जीवन को प्राप्त करने के लिए दृढ रहो।*



डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

लोकतंत्र (Democracy) : एक आदर्श विचार

संदीप कुमार
लेखापरीक्षक
कार्या. महानिदेशक लेखापरीक्षा
मध्य रेल, मुम्बई

वर्तमान युग लोकतंत्र का युग है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक स्तर पर प्रजातांत्रिक पद्धति को लागू करने एवं प्रजातांत्रिक आदर्शभूत तत्वों को साकारित करने की बात की जा रही है। इसे आधुनिकता की विशेषता सूचक संस्थाओं में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हो चुका है।

शाब्दिक व्युत्पति के दृष्टिकोण से प्रजातंत्र का अभिप्राय – जनता का शासन या जनता की शक्ति से है। इस रूप में लोकतंत्र उस शासन प्रणाली को कहते हैं जिसमें जनता स्वयं प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से अपने प्रतिनिधियों द्वारा सम्पूर्ण जनता के हित को ध्यान में रखकर शासन करती है। परन्तु लोकतंत्र के व्यापक अर्थ में इस संकुचित अर्थ के साथ–साथ अन्य पक्ष एवं आयाम भी जुड़ जाते हैं। इन विभिन्न पक्षों का योग होने पर ही सर्वांगीण लोकतंत्र की स्थिति उभरकर सामने आती है।

शासन के रूप में लोकतंत्र को आमतौर पर एक शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार किया जाता है। यहाँ इसका आशय है कि – प्रजातांत्रिक सरकार वह सरकार है जो जनता द्वारा निर्मित, नियंत्रित एवं संचालित होती है। इस संदर्भ में अब्राहम लिंकन की सर्वप्रसिद्ध परिभाषा इस प्रकार है – "लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन होता है।" **राज्य के रूप में लोकतंत्र** वहाँ है जहाँ सम्प्रभुता, जनता में निवास करती है। इसमें शासन व्यवस्था का स्वरूप एवं नीतियों के निर्धारण की अंतिम शक्ति का स्रोत जनता के ही हाथ में रहती है। राज्य के कार्यों पर जनता का नियंत्रण होता है।

समाज के स्वरूप के रूप में लोकतंत्र एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में लोकतंत्र का अर्थ उस सामाजिक व्यवस्था से है जिसमें सभी लोग सामाजिक दृष्टि से समान माने जाते हैं। अर्थात् जाति, पंथ, लिंग, वर्ग एवं आर्थिक आधार पर लोगों में भेदभाव नहीं किया जाता। इन सभी लोगों के समान अधिकार तथा समान अवसर प्रदान करने पर बल देता है। कहा भी गया है कि – "मनुष्य की भौतिक एवं सामाजिक दशाओं की समानता प्रजातंत्र का सार है।"

आर्थिक व्यवस्था के रूप में लोकतंत्र का अर्थ वस्तुतः न्यूनतम मूलभूत सुविधाओं की प्राप्ति एवं आर्थिक अवसरों की उपलब्धता से है। अर्थ या सम्पत्ति मानव जीवन के सम्यक् संचालन हेतु एक प्रमुख आधार हैं। जब तक इस क्षेत्र में समानता की स्थापना न की जाए,

सामाजिक एवं राजनीतिक समानता निरर्थक हो जाती है। यहाँ आर्थिक प्रजातंत्र का अर्थ न तो व्यक्तिगत संपत्ति का पूर्ण उन्मूलन है और न पूर्ण आर्थिक समानता है और न ही पूर्ण आर्थिक नियंत्रण। सभी लोगों को भोजन, वस्त्र, शिक्षा इत्यादि सुविधाएँ मिलती रहें ताकि उनकी प्रगति में किसी प्रकार की आर्थिक बाधा न पड़े। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो और समाज में किसी प्रकार का आर्थिक शोषण न हो।

नैतिक व्यवस्था के रूप में लोकतंत्र एक आदर्श भी है। इसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में मनुष्य स्वयं साध्य साधन नहीं। अतः उसके व्यक्तित्व की गरिमा, सम्मान एवं प्रतिष्ठा है। इस गरिमा की स्थापना के लिए व्यक्ति के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना आवश्यक है। जीवन शैली के रूप में प्रजातंत्र जीवन के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। इसके अंतर्गत सबके हृदय में क्षमा, सहिष्णुता, सेवा, परोपकार, विरोधी दृष्टिकोण के प्रति भी आदर–भाव, मानवीय व्यक्तित्व के प्रति सम्मान, समझौते की प्रवृत्ति आदि का भाव विद्यमान होता है। प्रजातंत्र में किसी भी व्यक्ति को दूसरों के साथ वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जिसे वह अपने स्वयं के प्रति किया जाना पसन्द न करे।

लोकतंत्र के आदर्श – लोकतांत्रिक आदर्श या लोकतंत्र के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं –

1. **जनता की सम्प्रभुता** – लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता का प्रभुत्व रहता है। शासन को गठित करना एवं जनता के हित में उसका संचालन करना जनता के ही कार्य माने जाते हैं। यहाँ इस व्यवस्था में यद्यपि शक्ति का स्रोत या निवास जनता में है परन्तु वह शक्ति बल प्रयोग के माध्यम से लागू या क्रियान्वित नहीं होती बल्कि विवेक के द्वारा उस शक्ति को क्रियान्वित किया जाता है। इसका आशय है – मानवीय संबंधों में विवेक का आधिपत्य। अतः बल प्रयोग या हिंसात्मक उपाय प्रजातांत्रिक आदर्श के प्रतिकूल है।

2. **स्वतंत्रता** – स्वतंत्रता लोकतंत्रीय आदर्शों का केन्द्रीय तत्व है। यहाँ स्वतंत्रता का अर्थ स्वेच्छाचारिता या स्वच्छंदता नहीं है क्योंकि स्वच्छंदता शोषण एवं परतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करती है। यहाँ स्वतंत्रता का आशय आत्म–निर्धारण (Self-determination) है। आत्म–संयमित व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में स्वतंत्र हैं। इस रूप में स्वतंत्रता ऐसी अवस्था का नाम है जिसमें व्यक्ति के जीवन पर न्यूनतम प्रतिबंध हो तथा व्यक्ति को अपने विकास हेतु अधिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हो। समाज का अधिकतम हित ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मंतव्य है। इस स्वतंत्रता के अधिकार के साथ–साथ अपने कर्तव्य के प्रति दायित्वबोध का भी होना आवश्यक है। स्वतंत्रता के महत्व को इंगित करते हुए कहा गया है कि आंखों के लिए, प्रकाश, फेफड़ों के लिए वायु और हृदय के लिए प्रेम का जो महत्व है, वही मानव–आत्मा के लिए स्वतंत्रता का है।

3. **समानता** – लोकतंत्र में समानता का अर्थ है सभी व्यक्तियों का अपना मूल्य है, सभी व्यक्ति समान हैं और उन्हें समान अधिकार प्राप्त हैं। इस अर्थ में प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक, बौद्धिक एवं आत्मिक शक्तियों के विकास के लिए समान

अवसर मिलना चाहिए। कान्ट के दर्शन में साध्यों के राज्य (Kingdom of Ends) की अवधारणा मानव समानता के सिद्धांत पर ही आधारित है। कांट की यह स्पष्ट घोषणा है कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं में एक साध्य है, उसे कभी भी साधन नहीं बनाया जाना चाहिए। इसी संदर्भ में यह भी कहा जाता है कि दुर्बलता, दरिद्रता एवं निरक्षरता के बावजूद मनुष्य मनुष्य है, क्योंकि आध्यात्मिक गौरव की दृष्टि से सभी समान हैं। समानता के बिना स्वतंत्रता अर्थहीन है। एक–दूसरे पर प्रभुत्व कायम रखने की प्रतिस्पर्धा समानता एवं स्वतंत्रता दोनों के लिए बाधक है। अतः स्वतंत्रता के उपयोग की अनिवार्य शर्त है – समानता।

4. **भ्रातृत्व** – स्वतंत्रता एवं समानता के बीच के संघर्ष को भ्रातृत्व की भावना के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। मनुष्य के लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा तभी हो सकती है जब मनुष्य बंधुत्व के सूत्र में बंधे हों। वस्तुतः स्वतंत्रता एवं समानता तभी सार्थक रूप से प्रभावी हो सकती है जब समाज के सभी घटक एक–दूसरे का सहयोग भ्रातृत्व भाव से करने के लिए सहज रूप से सक्रिय हों। इस प्रकार सच्चा लोकतंत्र वहीं हो सकता है जहाँ स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व परस्पर सापेक्षिक हों।

5. **उदार प्रतिनिधित्व या व्यापक प्रतिनिधित्व** – इसका आशय है सर्वसाधारण की सरकार में व्यापक भागीदारी। यदि लोकतंत्र छोटे समुदाय में या किसी विशिष्ट वर्ग मात्र में सीमित रहे तो उसे सच्चे अर्थ में लोकतंत्र नहीं माना जा सकता है। प्रतिनिधित्व जितना ही व्यापक एवं उत्तम होगा, लोकतांत्रिक सरकार उसी अनुपात में सक्षम, सुदृढ़ एवं उत्तम होगी।

इस प्रकार उपरोक्त संदर्भों एवं आयामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लोकतंत्र का अर्थ केवल शासन व्यवस्था का एक विशेष स्वरूप ही नहीं है बल्कि लोकतंत्र मानवीय सभ्यता एवं व्यक्ति के व्यक्ति रूप में महत्व पर आधारित एक ऐसा जीवन मार्ग है जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक जीवन के विभिन्न पक्षों में समानता की स्थापना करना एवं एक सहयोगी समाज की रचना करना है। लोकतंत्र के इस विचार में भागीदारी, प्रतिनिधित्व, उत्तरदायित्व, आत्मविकास, जन–सहमति एवं भ्रातृत्व का विचार सन्निहित है।



मोटा अनाज (मिलेट्स)

श्रीमती मोनिका चौहान
कनिष्ठ अनुवादक
क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मार्च 2021 के अपने 75वें अधिवेशन में वर्ष 2023 को 'मोटे अनाजों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' घोषित किया है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दृष्टि और पहल का ही नतीजा था कि विश्व भर के 70 से अधिक देशों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटे अनाज वर्ष के रूप में मनाया जाना भारत देश और यहाँ के किसानों के लिए बहुत ही गर्व की बात है।

भारत में मोटे अनाज के सेवन की समृद्ध परंपरा रही है। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 170 लाख टन मोटे अनाजों का उत्पादन होता है। यह उत्पादन एशिया के कुल उत्पादन के 80 प्रतिशत से भी अधिक है।

मोटा अनाज क्या है?

मोटा अनाज मानव जाति द्वारा उपजाई जाने वाली सबसे पुरानी फसलों में हैं। यह छोटे बीज वाले घासों का समूह हैं। इन्हें अन्न की वार्षिक फसल के रूप में जमीन में उगाया जाता है। भारत में मोटे अनाजों का वर्गीकरण कर उन्हें बड़े दानों वाले, छोटे दानों वाले एवं प्रच्छन्न मोटे अनाज के रूप में बाँट दिया गया है। बड़े दानों वाले अनाज में ज्वार, बाजरा एवं रागी आते हैं। छोटे दानों वाले अनाज में कंगनी, चीना, सावा एवं कुटकी और प्रच्छन्न मोटे अनाज में कुट्टू और चौलाई आते हैं। भारत में राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा राज्यों में सर्वाधिक मोटा अनाज उगाया जाता है।

मोटे अनाज का महत्व और लाभ

मोटा अनाज – किसान, जलवायु, ज़मीन और उपभोक्ता सभी के अनुकूल है। ये संतुलित पोषण के अच्छे स्रोत हैं। मोटे अनाज को उगाना बहुत आसान है। ये खराब जलवायु तथा सूखे को भी झेल सकते हैं। इनकी फसल के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है। दूसरी अन्य फसलों की तुलना में ये कीट–पतंगों से भी कम प्रभावित होती हैं।

मोटे अनाज में कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन, फाइबर एवं अन्य खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। इन अनाजों में फैट वाले तत्व बहुत कम होते हैं एवं इनमें ग्लूटन नहीं पाया जाता है इसलिए ये आसानी से पच जाते हैं। मधुमेह रोगियों के लिए ये अनाज वरदान होते हैं। इनके सेवन से मधुमेह को नियंत्रित किया जा सकता है। यह हड्डियों को मजबूत बनाने, खून की कमी को दूर करने, वजन को नियंत्रित रखने एवं रक्त कॉलेस्ट्रॉल को कम करने में उपयोगी है।

मोटे अनाज सहायक पोषण अर्थात् न्यूट्रीशनल सप्लीमेंट भी हैं। इनमें मौजूद फाइटो रसायन स्वास्थ्य अच्छा बनाए रखते हैं और पुराने रोगों के इलाज में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। मोटे अनाज से तैयार किए जाने वाले खाद्य पदार्थों से शरीर को ऊर्जा मिलती है, जिससे कैंसर, सूजन, आंत के रोग, हृदय रोग जैसे कई बीमारियों से

बचाव होता है।

मुख्य भोजन के विकल्प के रूप में

भारत में खानपान के तौर–तरीकों पर आधुनिकीकरण का काफी ज्यादा असर पड़ा है जिसके कारण मोटे अनाजों की खपत बेहद कम हो गई है। इनके स्थान पर पशुओं से प्राप्त साधनों पर आधारित खाद्य पदार्थों के प्रयोग का चलन तेजी से बढ़ा है। इनमें तेल, रिफाइंड, घी एवं अल्कोहल का सेवन मुख्य हो गया है। खानपान के इसी बदलाव का नतीजा है कि दुनियाभर में रोगियों की संख्या तेज गति से बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा भी असंतुलित होती है, जिससे शरीर में समयपूर्व ही बुढ़ापे के लक्षण आने शुरू हो जाते हैं। मोटे अनाजों में स्वाभाविक ही एंटी–ऑक्सीडेंट मौजूद होते हैं जो पाचन प्रणाली की सफाई करने में सहायक होते हैं। इसलिए मोटे अनाजों के सेवन से ऑक्सीडेटिव तनाव या बढ़ती उम्र के लक्षणों एवं जीवनप्रणाली के कारण होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है।

मोटे अनाजों का उपभोग हम जितने विविध तरीकों से कर सकते हैं यह आश्चर्यजनक तो है ही, साथ ही हमारी दादी–नानी की प्रतिभा का प्रमाण भी है। मोटे अनाज को मौसम के अनुसार उगाया और खाया जाता है। जैसे – बाजरा और मकई सर्दियों के लिए उपयुक्त हैं। इन्हें गुड़ और घी के साथ खाना फायदेमंद है। ज्वार गर्मियों के लिए अच्छा होता है। इसकी रोटी बनाकर चटनी के साथ खाना अच्छा होता है। रागी का सेवन पूरे वर्ष किया जा सकता है, लेकिन बारिश के मौसम में इसका सेवन विशेष रूप से फायदेमंद है। इससे डोसा, दलिया, रोटी, लड्डू इत्यादि बनाया जा सकता है। कुछ मोटे अनाज जैसे – राजगीरा, सामो, कुट्टू और मंडुआ मौसम के बदलाव से एवं त्यौहारों से जुड़े होते हैं। मोटे अनाज को दाल, मसाले, वसा आदि के साथ मिलाकर खाना चाहिए ताकि सीमित अमीनोएसिड की भरपाई हो सके। बाजरा जैसे मोटे अनाज जो आसानी से नहीं पचते हैं, उनको सफेद मक्खन/घी और गुड़ के साथ खाना चाहिए।

अंत में, यही कहना है कि मोटे अनाज गेंहू और चावल का विकल्प नहीं है। कम से कम पूरी तरह से उनकी जगह पर मोटे अनाज का प्रयोग न करें। रोजमर्रा के जीवन में चावल और गेंहू का सेवन जारी रखें, लेकिन सप्ताह में एक–दो बार मौसम के अनुसार मोटे अनाज की रोटी (भाकरी), लड्डू, दलिया इत्यादि का सेवन करना ना भूलें।

पारंपरिक खाद्य पदार्थों को भूलना उसकी खेती को कम कर रहा है, जिसका मिट्टी के उपजाऊपन और हमारी पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जो न केवल हमारा स्वास्थ्य, बल्कि हमारे पूर भविष्य को खतरे में डाल रहा है। इसलिए अपनी जिम्मेदारियां निभाएं और अपनी थाली में मोटा अनाज वापस लाएं।



केदारनाथ व अन्य केदारों के दर्शन



ललित कुमार वर्मा
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली

मंदाकिनी नदी के पास 3583 मीटर की ऊंचाई पर स्थित धाम के बारे में माना जाता है कि महाभारत काल में पांडवों द्वारा यहां मंदिर बनाया गया था जिसका 8वीं शताब्दी ईस्वी में आदि गुरू शंकराचार्य ने पुर्ननिर्माण किया था। केदारनाथ धाम में प्रधान पुजारी रावल होते हैं। रावल कर्नाटक के वीरा शैव जंगम समुदाय से संबंध रखते हैं। यह मंदिर शानदार इंजीनियरिंग और वास्तुकला का एक शानदार उदाहरण है, जिसका निर्माण पत्थर के विशाल चट्टानों का प्रयोग करके एक आयताकार मंच पर बनाया गया था, जो लगभग 6 फीट ऊंचा था। केदारनाथ मंदिर की दीवारें लगभग 12 फीट मोटी बताई जाती हैं और इसकी भीतरी दीवारों पर विभिन्न पौराणिक देवताओं के आकृतियां उत्कीर्ण हैं।

बाबा केदार की चल विग्रह डोली ने अपने धाम के लिए प्रस्थान करने से पूर्व ओंकारेश्वर मंदिर में पंचकेदार गद्दीस्थल ओकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ में भगवान केदारनाथ के क्षेत्रपाल के रूप में पूजनीय आराध्य भगवान भैरवनाथ की विशेष पूजा की परंपरा है। इस अवसर पर मुख्य पुजारी द्वारा भगवान भैरवनाथ का दूध, दही, चीनी व शहद से महाभिषेक पूजन किया जाता है। महाभिषेक पूजन के बाद पूरी व काली दाल की पकौड़ी का भोग लगाया जाता है।

केदारनाथ मंदिर के कपाट खुलने की प्रक्रिया तड़के तीन बजे शुरू होती है। रावल, मुख्य पुजारी व अन्य लोग पूरब द्वार से मंदिर के मुख्य प्रांगण में प्रवेश करते हैं तथा मुख्य द्वार पर पूजा अर्चना के बाद भगवान शिव के द्वार भक्तों के लिए खोले जाते हैं। मंदिर के कपाट खुलने के बाद मुख्य पुजारी ने स्वयंभू लिंग को समाधि से जागृत करते हैं तथा निर्वाण दर्शनों के पश्चात श्रृंगार तथा रूद्राभिषेक पूजाएँ की जाती हैं।

केदारनाथ के क्षेत्रपाल के रूप में पूजनीय आराध्य भगवान भंकुट भैरवनाथ के कपाट खुलने के साथ ही भगवान केदारनाथ की सायंकालीन आरती शुरू होती है। परंपरानुसार केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के बाद पहले मंगलवार या शनिवार को भैरवनाथ जी की पूजा होती है। भंकुट भैरवनाथ का मंदिर सरस्वती नदी के दूसरी तरफ पहाड़ी पर स्थित है। यहां से सारे केदारपुरी के दर्शन होते हैं।

माना जाता है कि केदारनाथ मंदिर की रक्षा भैरो नाथ जी द्वारा करते हैं। भैरवनाथ को बाबा केदार के क्षेत्रपाल के रूप में पूजा जाता है। मान्यता है कि शीतकाल के दौरान भैरवनाथ ही केदारपुरी और मंदिर की सुरक्षा करते हैं। माना जाता है

कि पहले भैरवनाथ के दर्शन से ही बाबा केदार के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त होता है और केदारनाथ मंदिर के दर्शन करने वाले लोगों को भैरों बाबा के मंदिर में भी जरूर जाना चाहिए। मान्यताओं के अनुसार भगवान भैरवनाथ को केदारनाथ का अगवानी वीर भी कहा जाता है। केदार जी की डोली के धाम प्रस्थान से पूर्व भैरवनाथ की पूजा की जाती है।

आषाढ़ संक्रांति के अवसर पर प्रतिवर्ष बाबा भैरवनाथ की पारंपरिक पूजा होती है। इस अवसर पर धाम के मुख्य पुजारी की ओर से केदारनाथ मंदिर से 500 मीटर की दूर पहाड़ी पर स्थित भैरव मंदिर में बाबा भैरवनाथ का अभिषेक व श्रृंगार किया जाता है। भगवान भैरवनाथ का अभिषेक एवं पूजा अर्चना के बाद केदारनाथ मंदिर परिसर में हवन होता है, जिसमें तीर्थ पुरोहित भी भाग लेते हैं।

इसी दिन आराध्य के स्वयंभू लिंग को स्वर्ण मुकुट से सुशोभित किया जाता है। यह स्वर्ण मुकुट देवताओं में बाबा केदार और मनुष्यों में सिर्फ केदारनाथ के रावल ही इसे धारण करते हैं। इस दिन से प्रतिदिन दोपहर बाद मंदिर की साफ–सफाई व हवन के उपरांत बाबा केदार को भोग लगाने के बाद श्रृंगार कर यह स्वर्ण मुकुट सुशोभित किया जाता है, जिसे सायंकालीन आरती के बाद उतारा जाता है। धाम के कपाट बंद होने पर बाबा केदार की डोली के साथ स्वर्ण मुकुट को शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर पहुंचाया जाता है जहां छह माह केदारनाथ के रावल विशेष धार्मिक आयोजनों में इसे धारण करते हैं।

नवम्बर में धाम के कपाट बंद होने के बाद बाबा की चल विग्रह उत्सव डोली रात्रि विश्राम के लिए अपने प्रथम पड़ाव रामपुर पहुंचती है। डोली विभिन्न पड़ावों पर भक्तों को दर्शन देने के बाद दूसरे पड़ाव विश्वनाथ मंदिर गुप्तकाशी पहुंचती है। अगले दिन सुबह धाम के मुख्य पुजारी पंचमुखी भोगमूर्ति की विशेष पूजा–अर्चना कर बाबा को भोग लगाते हैं। इस अवसर पर आसपास गांवों के ग्रामीण विश्वनाथ मंदिर पहुंचकर बाबा केदार के दर्शन करते हैं। इसके बाद बाबा की उत्सव डोली भैंसारी, विद्यापीठ व जैबीरी से देवदर्शनी पहुंचती है जहां भक्त डोली का स्वागत करते हैं। दोपहर में डोली शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ पहुंचती है जहां मांगल गीतों के साथ अक्षत–फूल चढ़ाकर स्वागत किया जाता है। मुख्य मंदिर की परिक्रमा करने के बाद डोली को गद्दीस्थल ले जाया जाता है व बाबा की भोगमूर्ति को गर्भगृह में स्थापित किया जाता है जहां अगले छह माह तक बाबा केदार की नित्य पूजाएँ सम्पन्न होती हैं।



प्रथम केदार धाम केदारनाथ मंदिर का दृश्य

केदारपुरी में मंदिर से लगभग डेढ़ कि.मी. की दूरी पर रूद्र गुफा है। मंदिर के ठीक सामने दुग्ध गंगा वाली पहाड़ी पर तीन अन्य प्राकृतिक गुफाएं हैं। 2018 में केदारनाथ में पुर्ननिर्माण करने वाली कार्यदायी संस्था नेहरू पर्वतारोहण संस्थान (निम) ने मंदाकिनी नदी के दूसरी ओर 8 लाख की लागत से गुफा बनाई थी। इसका व्यावसायिक संचालन गढ़वाल मंडल निकास निगम द्वारा होता है। यहां एक दिन में एक ही यात्री ध्यान कर सकता है। एक रात्रि की बुकिंग 1680 रुपये है। रूद्र गुफा के नवनिर्माण के बाद वर्ष 2019 में 18–19 मई को प्रधानमंत्री ने 17 घंटे तक यहां साधना की थी।

केदारपुरी में मंदिर से कुछ पहले गरूचट्टी है। इसका संबंध भगवान विष्णु से माना जाता है। पौराणिक मान्यता है कि भगवान विष्णु अपने वाहन गरूड़ में सवार होकर केदारनाथ आये थे। चट्टी पर रूककर उन्होंने विश्राम किया था, तब से यह जगह गरूड़चट्टी के नाम से जाना जाने लगा। 2013 की आपदा से पूर्व दस से बारह फीट की बर्फ में भी कई साधु संत यहां वर्ष भर साधना–योग में लीन रहते थे।

वर्ष 2020 में गौरीकुंड स्थित मां गौरामाई के कपाट 16 नवम्बर को



गौरी कुण्ड का दृश्य

बंद हुए। सुबह 5 बजे पुजारी ने गौरीकुंड मंदिर में गौरा की पूजा–अर्चना की। तत्पश्चात मां गौरी की भोगमूर्ति को डोली में स्थापित कर श्रृंगार किया गया। ठीक आठ बजे मां गौरामाई के कपाट बंद किये गए। मां की डोली मंदिर की एक परिक्रमा करने के बाद गौरी गांव के लिए जयकारों के साथ रवाना हुई। गौरी गांव पहुंचने पर ग्रामीणों ने मां गौरामाई का अक्षत एवं फूल से स्वागत किया गया। इसके बाद मां की भोगमूर्ति को चंडिका मंदिर में विराजमान किया गया, जहां शीतकाल के छह माह तक मां की पूजा–अर्चना गौरी गांव स्थित चंडिका मंदिर में होती है। दरअसल भगवान शिव की उत्सव डोली गौरीकुंड पहुंचने से पहले गौरामाई की डोली गर्भगृह से बाहर निकालकर अपने शीलकालीन गद्दीस्थल को रवाना हो जाती है।

यहां भगवान शिव ने पार्वती के अंग निर्मित पुत्र गणेश के सिर को उनके धड़ से अलग कर दिया था, जिससे मां गौरा नाराज हो गई इसलिए बाबा केदार व मां गौरा का मिलन नहीं हो पाता है।

प्रतिवर्ष बैसाखी पर्व पर गौरीकुंड में स्थित गौरीमाई मंदिर के कपाट पौराणिक परंपरा व वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ ग्रीष्मकाल के लिए छह माह के लिए खोले जाते हैं। गौरीमाई की डोली इस दिन शीलकालीन गद्दीस्थल गौरी गांव से रवाना होकर गौरीकुंड पहुंचती

है। सुबह लगभग 8 बजे कपाट खोले जाते हैं। जून 2013 की आपदा में गौरीकुंड स्थित तप्त कुंड ध्वस्त हो गया था। बाद में गर्म पानी को प्लास्टिक के पाइपों से संरक्षित कर नदी किनारे एकत्र किया गया था। 2017 में गौरीकुंड कस्बे की सुरक्षा और तप्त कुंड के पुनरुद्धार का जिम्मा सिंचाई विभाग, केदारखंड डिवीजन को सौंपा गया था।

त्रियुगीनारायण से केदारनाथ पहुंचा जा सकता है। यह पैदल ट्रैक 23 कि.मी. लम्बा है जबकि चौमासी से केदारनाथ तक का ट्रैक 19 कि.मी. लम्बा है। इन ट्रैक मार्गों के बीच में बुग्याल भी हैं। पौराणिक समय में गंगोत्री से आने वाले भक्त त्रियुगीनारायण से होते हुए केदारनाथ पहुंचते थे जबकि कालीमठ के दर्शन के बाद भक्त चौमासी से केदारनाथ पहुंचते हैं।

इन मार्गों की खस्ता हालत होने के कारण अब बहुत कम लोग ही इनमें आवाजाही करते हैं व गौरीकुंड पैदलमार्ग से केदारनाथ पहुंचते हैं। जून 2013 में केदारघाटी में आई आपदा के दौरान गौरीकुंड मार्ग क्षतिग्रस्त होने के बाद इन जर्जर पौराणिक मार्गों से ही हजारों भक्तों ने अपनी जान बचाई थी, जबकि सैकड़ों लोगों ने ट्रैक जटिल व खतरनाक स्थिति में होने के कारण रास्ते में ही दम तोड़ दिया था। यह पूरा क्षेत्र प्रतिबंधित वन क्षेत्र में होने के कारण वन विभाग ही निर्माण के लिए यहां अधिकृत है।

द्वितीय केदार भगवान मदमहेश्वर के कपाट खोलने की प्रक्रियाएं मई माह से शुरू होती हैं। इस दिन आराध्य की भोग मूर्तियों को शीतकालीन गद्दी स्थल ओंकारेश्वर मंदिर के गर्भगृह से सभा मंडप में विराजमान किया जाता है। इस अवसर पर सुबह भगवान मदमहेश्वर की पूजा–अर्चना शुरू कर मंदिर के पुजारी गर्भगृह में भगवान मदमहेश्वर व ओंकारेश्वर का सामूहिक अभिषेक करते हैं। श्रृंगार के उपरांत भगवान को महाभोग लगाकर आरती उतारी जाती है। इसके बाद पंच पुजारी द्वितीय भोग मूर्तियों को गर्भगृह से पंचकेदार गद्दीस्थल में विराजमान करते हैं जहां पर रावल, हक–हकूकधारियों एवं वेदपाठियों की मौजूदगी में षोडषोपचार व पंचोपचार पूजा करते हुए नवग्रह दान करते हैं। इसी बीच रावल मदमहेश्वर धाम के लिए नियुक्त मुख्य पुजारी को छह मास का पूजा संकल्प देते हैं और अचकन व पगड़ी पहनाते हैं। साथ ही रावल ने आराध्य केदार की महाआरती उतारते हैं। इसके बाद पुजारियों द्वारा ओंकारेश्वर मंदिर पंचकेदार गद्दीस्थल से भगवान मदमहेश्वर की भोग मूर्तियों को उनके सभामंडप में विराजमान किया जाता है। यहां धाम के लिए नियुक्त पुजारी भगवान का श्रृंगार कर महाभोग के साथ महाआरती उतारते हैं। सभी घरों से एकत्रित अनाज से महिलाओं द्वारा आराध्य भोग तैयार किया जाता है।



द्वितीय केदार धाम मद्महेश्वर मंदिर का दृश्य

पूजा–अर्चना व धार्मिक परंपराओं के साथ द्वितीय केदार को यह भोग लगाया जाता है। इसे छाबड़ी लगाना कहा जाता है।

एक दिन आराध्य का सभामंडप में ही विश्राम के बाद अगले दिन मुख्य पुजारी ओंकारेश्वर मंदिर के सभामंडप में बाबा मदमहेश्वर की मूर्ति की विशेष पूजा–अर्चना, श्रृंगार, भोग व आरती के बाद उत्सव डोली में विराजमान करते हैं। इसके बाद गौंडार के हक–हकूकधारी डोली को लाल–पीले वस्त्र व फूल मालाओं से सजाते हैं। गद्दीस्थल में केदारनाथ के रावल मुख्य पुजारी को अंगवस्त्र व पगड़ी पहनाकर धाम में निर्विघ्नतापूर्वक पूजा सम्पन्न कराने का संकल्प लेते हैं। फिर डोली की आरती उतारकर उसे बाबा मदमहेश्वर के निसाणों (प्रतीक) के सभामंडप से बाहर लाया जाता है। ओंकारेश्वर मंदिर की तीन परिक्रमा व पुजारी के आरती करने के बाद डोली रावल की अगुवाई में धाम के लिए प्रस्थान करती है। ओंकारेश्वर मंदिर से सुबह डोली डंगवाड़ी, ब्राह्मणखोली होते हुए मंगोलचारी स्थित देवदर्शनी पहुंचती हैं जहां रावल डोली को कपूर आरती के साथ धाम के लिए विदा करते हैं। ओंकारेश्वर मंदिर से मंगोलचारी डेढ़ कि.मी. है। श्रृद्धालु घरों के आंगन व छत से ही आराध्य को हाथ जोड़कर धाम के लिए विदा करते हैं। मंगोलचारी तक डोली पैदल जाने के बाद वहां रावल व पुजारी के आरती उतारने के बाद डोली को रांसी तक वाहन से ले जाया जाता है। सुबह डोली रांसी पहुंचती है व राकेश्वरी मंदिर में विराजमान होती है। इस दिन रात्रि विश्राम रांसी के राकेश्वरी मंदिर में होता है।

अगली सुबह 5 बजे राकेश्वरी मंदिर रासी गांव में धाम के पुजारी भगवान मदमहेश्वर की भोग मूर्तियों का अभिषेक कर पूजा–अर्चना कर मां राकेश्वरी के साथ द्वितीय केदार की संयुक्त आरती उतारते हैं। फिर द्वितीय केदार की चल विग्रह उत्सव डोली राकेश्वरी मंदिर की परिक्रमा के बाद अपने धाम के लिए प्रस्थान करती है। रासी गांव के ग्रामीण इस दौरान अपने घरों से ईष्ट देव को हाथ जोड़कर विदा करते हैं। छह कि.मी. घने जंगल के बीच से होते हुए चल विग्रह उत्सव डोली सुबह अंतिम रात्रि प्रवास हेतु जिले के सीमांत गांव गौंडार गांव पहुंचती है। गांव में धार्मिक परंपराओं का निर्वहन किया जाता है।

अंतिम रात्रि प्रवास जिले के सीमांत गांव गौंडार गांव में करने के बाद अगली सुबह लगभग 6 बजे डोली गौंडार गांव से धाम के लिए रवाना होती है। इससे पहले सुबह गौंडार गांव में डोली की पूजा–अर्चना करते हुए पुजारी अभिषेक के साथ



तृतीय केदार धाम तुगनाथ मंदिर का दृश्य

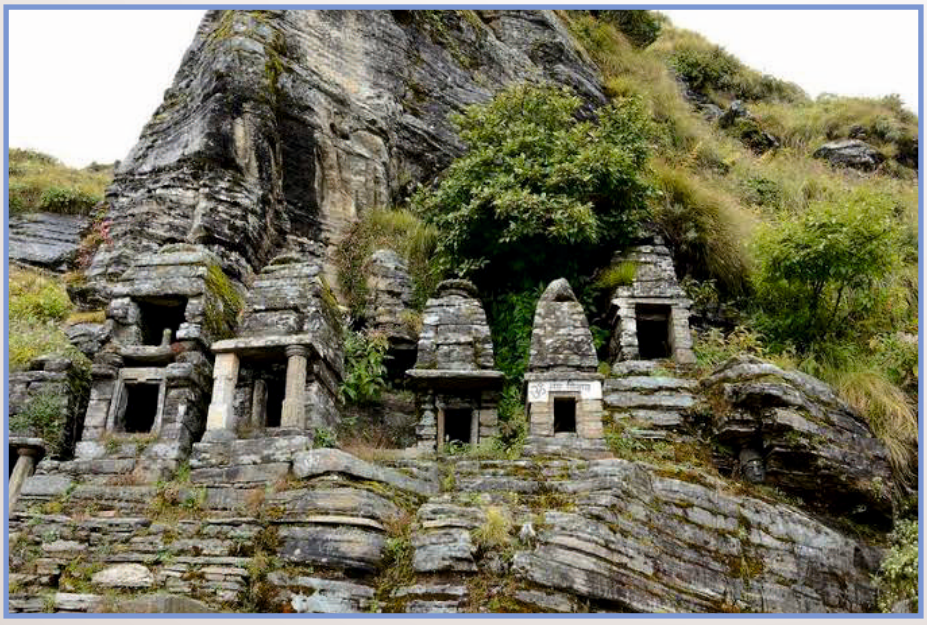
आरती उतारते हैं। बणतोली, खुन्नू, खटरा, कुनटट्टी होते हुए 12 कि. मी. पैदल रास्ता तय करके डोली सुबह देवदर्शनी पहुंचती है जहां अल्प विश्राम व परंपराओं के निर्वहन के उपरांत डोली अपने मंदिर परिसर पहुंचकर मंदिर की तीन परिक्रमा करती है। इसके बाद डोली को परिसर में विराजमान किया जाता है। धाम पहुंचकर वहां मौजूद ताम्रपत्रों का निरीक्षण आराध्य करते हैं। डोली में विराजमान आराध्य ने मंदिर की तीन परिक्रमा के दौरान परिसर में रखे अपने एक–एक पात्र का जायजा लेते हैं। मंदिर में भगवान के ताम्रपत्र मौजूद हैं जिसमें आचमन कलश से लेकर बड़े–बड़े बर्तन हैं। कपाट बंद होने व खुलने के समय आराध्य स्वयं अपने पात्रों का निरीक्षण करते हैं अगर कोई



चतुर्थ केदार धाम रूद्रनाथ मंदिर का दृश्य

बर्तन नहीं दिखाई देता है तो तब तक डोली आगे नहीं बढ़ती है।

फिर विधि–विधान व वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूर्वाह्न 11 बजे तय लग्न पर मदमहेश्वर के कपाट खोले जाते हैं। पुजारी आराध्य की भोग मूर्तियों को डोली से उतारकर मंदिर के गर्भगृह में विराजमान करते हैं। इस अवसर पर कपाट के बंद होने के दौरान स्वयं भू लिंग पर चढ़ाये गये पुष्प, चंदन, अक्षत को प्रसाद के रूप में श्रद्धालुओं को बांटा जाता है।



केदारनाथ में रूद्र गुफा का दृश्य

मान्यतानुसार छह मास तक ग्रीष्मकालीन पूजा–अर्चना के दौरान स्वर्ण मुकुट भगवान को पहनाया जाता है जबकि शीतकाल में रावल स्वर्ण मुकुट स्वयं धारण करते हैं। रावल बोलांदा यानि बोलने वाले केदार के रूप में पूजनीय हैं। उनके मुंह से निकले वचन देवतुल्य होते हैं।

मदमहेश्वर धाम के कपाट नवंबर की सुबह शीतकाल के लिए बंद होते हैं। कपाट बंद होने के दिन परंपरानुसार विधि विधान से मंदिर में पूजा अर्चना के पश्चात श्रद्धालु दर्शन करते हैं। तत्पश्चात पुजारी स्वयं भू शिवलिंग का समाधि पूजा शुरू करते हैं। उसके बाद शिवलिंग को समाधि देते हैं।

तत्पश्चात मंदिर के कपाट बंद होने पर मदमहेश्वर की चल विग्रह उत्सव डोली मंदिर की परिक्रमा कर प्रथम पड़ाव गौंडार गांव को प्रस्थान करती है। उत्सव डोली प्रथम रात्रि प्रवास गौंडार गांव से करती है।

अगली सुबह पुजारी विधि विधान से पूजा अर्चना कर भोग लगाते हैं। तत्पश्चात डोली अपने दूसरे पड़ाव रांसी के लिए रवाना होती है। दोपहर में डोली के रांसी गांव पहुंचने पर स्वागत होता है। इसके अगले दिन उनियाणा, राऊलैक, बुरवा व मनसुना होते हुए गिरिया गांव पहुंचती है। गिरिया गांव में पूजारी सुबह 8 बजे पंचांग पूजन के साथ मध्यमदेश्वर की विशेष पूजा अर्चना कर आरती उतारते हैं। तत्पश्चात श्रद्धालु दर्शन करते हैं। अगले दिन फाफंज, सलामी, मंगोलचारी, ब्राह्मणखोली व डंगवाडी होते हुए शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ पहुंचती है। चल विग्रह डोली, फाफज, सलामी यात्रा पड़ावों से स्वागत के साथ मंगोलचारी पहुंचती है जहां स्थानीय वाद्य यंत्रों की मधुर धुनों से डोली का स्वागत होता है व जयकारे लगाए जाते हैं। पौराणिक परंपराओं के अनुसार मंगोली के ग्रामीण भगवान को सामूहिक अर्ध्य लगाते हैं व छत्र इत्यादि चढ़ाकर क्षेत्र के खुशहाली की कामना करते हैं। इसके बाद ब्राह्मण–खोली में ग्रामीण पुष्प वर्षा से डोली का स्वागत करते हैं। दोपहर में डोली ओंकारेश्वर मंदिर पहुंचती है। मंदिर की एक परिक्रमा कर भोगमूर्ति को गद्दीस्थल में विराजमान किया जाता है। इसके बाद रावल के प्रतिनिधि केदार लिंग मदमहेश्वर धाम के प्रधान पुजारी का छह माह तीर्थ में रहने का संकल्प तोड़ते हैं।

वर्षभर में बैसाखी पर्व व मदमहेश्वर की डोली के कैलाश से ऊखीमठ आगमन सहित केवल दो दिन ही बूढ़ा मदमहेश्वर के दर्शन की परम्परा है। डोली ओंकारेश्वर मंदिर की पांच परिक्रमा कर भगवान अपने स्थान पर विराजमान होते हैं। मंदिर को सजाया जाता है। डोली आगमन से कई दिन पहले से ही मंदिर को सजाया जाता है।

भगवान की चल विग्रह उत्सव डोली के आगमन व ओंकारेश्वर मंदिर में विराजमान होने पर रूद्रप्रयाग जनपद में अवकाश भी घोषित किया जाता है। इस दिन यहां मदमहेश्वर मेला जुटता है।

तृतीय केदार भगवान तुंगनाथ की शीतकालीन गद्दीस्थल मार्कण्डेय मंदिर मक्कूमठ में पूजारी अठूल पूजा सम्पन्न करते हैं व यात्रा की कुशलता के लिए महायज्ञ में आहुतियां दी जाती है। इसके उपरांत हुड्डू व अखोड़ी गांव के जमाणियों द्वारा भगवान तृतीय केदार की चल उत्सव विग्रह डोली का श्रृंगार किया जाता है। सोलह विशेष पूजाओं के बाद भोग मूर्तियों की आरती उतारी जाती है। इसके बाद विधि–विधान से आराध्य की भोग मूर्तियों को चल उत्सव विग्रह डोली में विराजमान किया जाता है। सुबह दस बजे आराध्य द्वारा शीतकालीन गद्दीस्थल माकण्डेय मंदिर की परिक्रमा के बाद धाम के लिए प्रस्थान करते हैं। बाबा तुंगनाथ की डोली का पोखणी तोक पहुंचने पर वहां के सभी परिवार एकत्रित नये अनाज से बने भोग आराध्य को भेंट करते हैं। यहां विश्राम के बाद देर शाम डोली रात्रि प्रवास के लिए भूतनाथ मंदिर पहुंचती है। अगले दिन भूतनाथ मंदिर से प्रस्थान कर पाब गांव में सभी ग्रामीणों की तरफ से आराध्य को अर्ध्य लगाया जाता है। यहां से चल उत्सव विग्रह डोली, चल्याखोड़, बनियाकुंड होते हुए दोपहर डेढ़ बजे लगभग रात्रि प्रवास हेतु चोपता पहुंचती है। धाम पहुंचने पर डोली अपने अधीनस्थ मंदिरों की परिक्रमा करती है। तत्पश्चात डोली को मंदिर परिसर में विराजमान किया जाता है और शुभ–लग्न पर तृतीय केदार तुंगनाथ धाम के कपाट खोले जाते

हैं। तत्पश्चात मंदिर के गर्भगृह में पंचपुरोहितों की मौजूदगी में वेद–मंत्रोच्चारण के साथ बाबा को समाधि में जगाने का आह्वान किया जाता है। इसके बाद मक्कू के हक–हकूकधारी, ब्राह्मण पूजा–अर्चना करते हुए मूर्तियों को गर्भगृह में स्थापित करते हैं।

समुद्रतल से लगभग 11808 फीट की ऊंचाई पर चतुर्थ केदार रूद्रनाथ धाम स्थित है जो केदारनाथ वन्य जीव प्रभाग के सेंचुरी क्षेत्र में आता है। रूद्रनाथ के अलावा नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर व इंडोनेशिया में ही भगवान शिव के मुख दर्शन का सौभाग्य मिलता है।

चतुर्थ केदार भगवान रूद्रनाथ की डोली मई माह में विधिवत पूजा–अर्चना के बाद गोपेश्वर स्थित गोपीनाथ मंदिर परिसर से कैलाश के लिए सुबह आठ बजे रवाना होती है। आभूषणों व फूलों से सजी उत्सव डोली पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ रवाना होती है। गंगोल गांव होते हुए इसी दिन उत्सव डोली पनार बुग्याल पहुंचती है। मंडल घाटी में प्रवेश करने पर गंगोलगांव, सगर, ग्वाड़ गांव के लोगों द्वारा डोली का स्वागत किया जाता हैं। रूद्रनाथ मंदिर तक की दूरी चौबीस कि.मी. है, जिसे पैदल तय किया जाता है। श्रद्धालु पुंग, ल्वींठी, पनार व पित्रधार जैसे सुरम्य बुग्यालों से होते हुए यहां पहुंचते हैं। कपाट खुलने पर भगवान का प्रथम स्नान स्वर्गद्वारी और नारद कुंड के प्राकृतिक जल से होता है। इसके बाद रूद्रनाथ जी की अभिषेक पूजा होती है, इस दौरान वन देवता की भी पूजा होती है।

रूद्रनाथ धाम जो केदारनाथ वन्य जीव प्रभाग के सेंचुरी क्षेत्र में आता है। वर्ष 2019 तक पर्यटक व श्रद्धालु प्लास्टिक कचरे को सेंचुरी क्षेत्र के आसपास ही छोड़ देते थे पर वर्ष 2020 से वन्य जीव प्रभाग ने इस क्षेत्र में प्लास्टिक को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया। इसका कड़ाई से पालन हेतु जिला मुख्यालय गोपेश्वर के पास सगर गांव व यहां से दस कि.मी. की दूरी पर स्थित पनार बुग्याल में वन विभाग ने चौकियां स्थापित की। प्लास्टिक सामग्री का विवरण यहां पर इकट्ठा करने के साथ सौ रूपया पाबंद शुल्क भी शुरू किया गया जिसे प्लास्टिक सामग्री को वापसी में दिखाने पर वापस लौटाया जाने लगा साथ ही पिछले वर्षों तक श्रद्धालु लाउडस्पीकर लेकर धाम तक जाते थे, इसे भी वर्ष 2020 से चौकियों पर जमा किया जाने लगा। सेंचुरी क्षेत्र में होने के कारण रूद्रनाथ धाम के आसपास दुर्लभ प्रजाति के वन्य जीव, वनस्पति व औषधीय जड़ी बूटियों, पौधों का बाहुल्य है।

पंचम व अन्तिम पंच केदारों में कल्पेश्वर धाम है जो उर्गम घाटी में है।



पंचम केदार कल्पेश्वर धाम मंदिर का दृश्य

चेहरे.....



सुश्री वंदना एस
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय ऑडिट भवन, बी–ब्लॉक, बैंगलूरू

क्या आपने कभी अकेलेपन का सुख महसूस किया है? वैसे तो यह माना जाता है कि अकेले में इंसान दु:खी हो जाता है। लेकिन अकेले यात्रा करने का जो सुख है वह वर्णन से परे है। न किसी का इंतज़ार, न किसी का सुनना, न किसी से कुछ कहना। एक तरह की खामोशी चारों तरफ घिरी हुई होती है जिसमें अपने आप से एक गहरे संबंध की गर्माहट महसूस होती है। यात्राएं हमेशा मुझे आकर्षित करती हैं। भले ही हम किसी जगह का दर्शन करने के लिए जा रहे हों, वास्तव में यात्राओं से सुंदर तो वे राहें होती हैं जो पहली नजर में अनजान फिर जीवन भर एक याद बनकर दिल में समा जाती हैं।

काफी दिनों के बाद लगने लगा था कि एक यात्रा का समय आ गया है। कोई कितने दिनों तक अपनी व्यस्त दुनिया में उलझकर रह सकता है? मगर जाऊं कहाँ? लंबे समय की जद्दोजहद के बाद एक सुंदर तस्वीर आंखों के सामने प्रकट होने लगी ''मनाली''। एक ऐसी जगह जो हर तरह के यात्रियों को अपनी ओर खींच लेती है, विशाल हिम–पर्वतों को दिखाकर तन–मन को शीतल कर देती है, लंबे–चौड़े देवदारू के पेड़ों की छाया से असीम शांति प्रदान करती है। इन सबके बावजूद भी मन में एक चीज़ खटकती रही कि अकेले जाऊं कैसे? क्योंकि हमारा समाज इतना भी आगे नहीं बढ़ पाया कि एक अकेली लड़की जहां मन करे वहां जा सके। अचानक एक मलयालम सिनेमा (रानी पद्मिनी) का दृश्य दिमाग में आया जिसमें नायिका (मंजु वारियर) कहती है कि 'अकेले सड़क पर घूमने से जो मुसीबतें एक लड़की के जीवन में आ सकती हैं वे तो घर में बैठने से भी आएंगी, चार दीवार के भीतर भी हमेशा वह सुरक्षित नहीं होती।' मेरे लिए सबसे आसान यह था कि जो भाषा वहां पर बोली जाती हैं वह तो मुझे आती हैं। अब क्या सोचना? उठाया अपना फोन और कांटेक्ट लिस्ट पर नज़र डाली तो एक पुराने दोस्त का नाम दिखाई दिया। 12वीं के बाद उससे कभी मिली नहीं थी लेकिन इतना ज़रूर पता था कि वह मेरे से भी बड़ा घुमक्कड़ है। इस तरह एक दशक के बाद पुनः उससे मेरी बात हुई और किस्मत को देखिए कि

कभी–कभी वह भी कैसा खेल खेल जाती है। मेरा दोस्त उन दिनों मनाली में ही रह रहा था। चूंकि वह चित्रकार है इसलिए मौसम के हिसाब से वह अपना स्थान बदलता रहता है। जनवरी से मार्च तक मनाली में ऐसे–ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं जिन्हें देखकर मुझे लगने लगा था कि अगर ये सब नहीं देखा तो क्या ही जीवन जिया? अपने दोस्त को फोन लगाया और उसकी खुशी की तो सीमा ही नहीं थी। मार्च का महीना था, पूरी दुनिया कोविड के कब्जे में थी, दूसरे लॉकडाउन की गुंजाइश महसूस हो रही थी, लेकिन जाना मेरे लिए सबसे जरूरी था। सोच–सोच कर व्यर्थ में समय बीत जाने से पहले ही मैंने एयर टिकट बुक कर दिया।

शाम के 6 बजे दिल्ली से मनाली के लिए बस थी। खिड़की वाली सीट तो मुझे हमेशा से पसंद है क्योंकि बड़े–बड़े कांच की खिड़की वाली बस में बैठकर दुनिया को देखने की एक अलग ही खूबसूरती होती है। रात का समय था इसलिए ज्यादा कुछ देख भी नहीं पा रही थी। लेकिन इस उम्मीद में कि कल की सुबह सबसे सुंदर होगी, मैंने आंखें मूंद लीं। इंतज़ार उस सुबह का था जिसका सपना कई दिनों से देखा जा रहा था। शायद इसीलिए वह रात मुझे बहुत लंबी लग रही थी।

सूरज की हल्की–हल्की गरम किरणें न जाने कब से मेरी आँखों को छूने लगी थीं, देखा तो सामने मनाली के हिम–पर्वत सीना तानके खड़े थे। टूटी–फूटी सड़कों से नाचती–गाती बस अपने लक्ष्य–स्थान की ओर बढ़ रही थी। सहयात्री से मालूम हुआ कि अभी मनाली आई नहीं है और मैं तो इन राहों को देखकर ही फूलें नहीं समा रही थी। सुदूर केरल में रहने वाली एक लड़की को हिम–पर्वत, देवदारू, सेब, चेरी के पेड़ आदि कभी बिना आकर्षित किए कैसे रह सकते हैं? तापमान 13 डिग्री सेल्सियस के आसपास था। ठंड़ से निपटने में थोड़ी–सी दिक्कत हो रही थी लेकिन मज़ा भी तो खूब आ रहा था। कारवां फिल्म का 'छोटा सा फ़साना' गाना बार–बार सुन रही थी क्योंकि उस यात्रा के लिए उससे बेहतर गाना कोई हो ही नहीं सकता था।

लगभग 10 बजे मनाली पहुंची, अपने दोस्त को फोन लगाया तो पता चला कि वह पहले से ही मेरा इंतज़ार कर रहा था। रहने की व्यवस्था पहले से ही हो चुकी थी, अब बस वहां पहुंचने की देरी थी। 'ओल्ड मनाली' – यहां बहुत कम लोग जाते हैं। क्योंकि लोगों को वहीं जाना होता है जो मशहूर होता है ताकि उस स्थान की तस्वीरें खींचकर सोशल मीडिया में अपलोड कर सके। उसमें कोई बुराई नहीं है मगर इस दौरान वे अपनी आंखों से दुनिया देखना भूल जाते हैं। अपनी आंखों से देखने वाले दृश्य अधिक सुंदर होते हैं जबकि कैमरा तो इंसान की बनाई हुई मशीन है। रहने का स्थान एक पहाड़ की चोटी पर था। बचपन में जिस पहाड़, उगते सूरज, बहती नदी, उड़ती पंछियों और फूलों से लदे पेड़ों के जो चित्र बनाया करती थी वे सब आज मेरी आंखों के सामने खड़े थे – जीवंत रूप में। स्वागत के लिए और क्या ही मांगती मैं? पहाड़ की चोटी पर दो मंज़िल वाला एक छोटा–सा कॉटेज। दोस्त और मेरा सफ़र बस यहीं तक था, आगे मुझे अकेले

बढ़ना था। आंगन में कदम रखते ही हस्की जैसा लगने वाला एक कुत्ता मेरे पास आया और अपनी पूंछ हिलाकर मेरे इर्द–गिर्द घूमने लगा जैसे कि वह भी मेरा इंतज़ार कर रहा था। उससे हाथ मिलाकर जब आगे बढ़ी तो वहां पर चार–पांच लोग और दिख गए जिनको देखते ही मैं समझ गई कि ये अपने जीवन में कितने खुश हैं। मुस्कुराते चेहरे से वे मेरा स्वागत कर रहे थे जो मेरे लिए बिलकुल अनजान थे। 20–22 साल का एक लड़का मेरे लिए गरम–गरम चाय लेकर आया और उस चाय के साथ हम उस आंगन में बैठ गए। बस चेहरे नए थे, बातों से कभी लगा नहीं कि हम एक दूसरे को जानते ही नहीं हैं। आश्चर्य तो तब हुआ जब पता चला कि ये सब कभी मेरे जैसे मनाली घूमने आए थे और वापस गए ही नहीं। यहीं पर छोटा–मोटा काम करते–करते एक दूसरे से मिले, दोस्त बने और बाद में यह कॉटेज खरीदकर अपनी जीविका चलाने लगे। अपने कॉटेज में रहने के लिए जो आते हैं उनसे वे पैसा नहीं मांगते, बस इतना कह देते हैं कि ''आपको जितना ठीक लगता है उतना देके जाइए और फिर कभी आना हुआ तो ज़रूर आइएगा।'' उम्र में मुझसे बड़ा कोई नहीं था वहां पर और कुछ ही क्षणों में मुझे अहसास हुआ कि ये सब अपने जीवन में कितने खुश हैं? भले ही उनके पास बहुत ज्यादा पैसे नहीं हैं मगर उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं है। पैसे तो उनके लिए जीवन चलाने का साधन मात्र है, जीवन तो कुछ और ही चीज़ है।

शाम होते–होते ठंड बढ़ने लगी। इतनी ठंड सह पाना मेरे लिए थोड़ा–सा कठिन था पर उसमें भी मुझे अपार खुशी का अनुभव हो रहा था। अंधेरा होते ही मनाली एक अलग रूप धारण कर लेती है। चट्टानों को सहलाती हुई बहती नदी की मीठी ध्वनि के साथ बहुरंगी बल्ब से सजे छोटे–छोटे जलपानगृहों से गूंज उठने वाले हिंदी फिल्मों के गानों से मनाली और उत्साहित लगती है। उस दिन आया हुआ एक नया दोस्त भी हमारे साथ जुड़ गया जो जन्म से ही प्रतिभा संपन्न गायक था। बर्फी सिनेमा का ''फिर ले आया दिल'' जब वह गाने लगा तो शायद उसको नहीं पता था कि मेरे मन में गानों की एक बहुत लंबी सूची उसका इंतजार कर रही है। तापमान और भी घट गया था और जलती लकड़ियों की गर्मी उस ठंड को चीर नहीं पा रही थी। लेकिन उस रात की जो मेरी खुशी थी उसका कोई छोर नहीं था, क्योंकि इतने लोगों के साथ रहकर भी मैं स्वयं को देख पा रही थी, मन में लग रहा था कि इस दुनिया को उसके बाहर बैठकर मैं देख रही हूं। उनके चेहरे पर अनंत खुशी की जो चमक दिखाई पड़ रही थी वह आज तक मैं कहीं और नहीं देख पाई। बड़े–बड़े नगरों–शहरों से दूर देश के एक कोने में बैठकर वे अपना जीवन बिना किसी दबाव के जी रहे हैं।

पुरानी मनाली की गलियों से चलते समय लग रहा था कि यह दुनिया इतनी सुंदर कैसे हो सकती है? नए दोस्त मुझे उस गली में स्थित एक दुकान में ले गए जहां चाचाजी रहते हैं। जो भी वहां जाता है, वे उसके चाचाजी बन जाते हैं। सुदूर केरल से अकेले घूमने के लिए आई इस लड़की का भी उन्होंने भरपूर स्वागत किया और उसके लिए भी

वे चाचाजी बन गए। महंगे पत्थरों का व्यापार है उनका। पर्वतों पर जाकर स्वयं पत्थर तोड़कर बड़े–बड़े महंगे पत्थर लाकर बेचना उनका काम है, साथ–साथ ऊन के कपड़े भी बेचा करते हैं। लंबे समय की बातचीत के बाद जब लौटने लगी तो उन्होंने मुझसे जन्म–कुंडली के बारे में पूछा। लेकिन मेरे पास उसके लिए कोई जवाब नहीं था, पर वे छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। जन्म का समय, दिन, वर्ष आदि पूछकर आखिर उन्होंने बता ही दिया कि मेरी कुंडली के हिसाब से रूबी का पत्थर पहनना मेरे लिए हितकर होगा। जाते–जाते एक चांदी की अंगूठी में रूबी लगाकर उन्होंने मेरे हाथ में पहनाई और कहा कि 'मुस्कुराते हुए तुम अच्छी लगती हो, जीवन चाहे जैसा भी हो बस खुश रहना और अगली बार जब आओगी तो ज़रूर चाचाजी से मिलने आना।' आंखे नम हो गई थीं और कहने के लिए मेरे पास कोई शब्द भी नहीं था। एक बार गले लगकर मैं वहां से निकल गई।

''वशिष्ठ मंदिर'' जिसे याद करते ही एक सुखद गर्माहट तन को छू जाती है जो उस दिन वहां की बहती धाराओं में जीवन में पहली बार मैंने महसूस की थी। मनाली शहर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह मंदिर अपनी पवित्र ऊष्म जलधाराओं के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उन धाराओं में किसी भी बीमारी को ठीक करने की शक्ति होती है। स्त्री–पुरूष के लिए अलग–अलग स्नानगृह बनाए गए हैं जहां जाकर लोग अपने तन–मन की कठिनाइयों को दूर करते हैं। सबके साथ जाकर स्नान करने में थोड़ा–सा अजीब लग रहा था पर उस गरम पानी में नहाती छोटी बच्चियों की किलकारियां, भगवान से प्रार्थना करती महिलाएं आदि को देखकर मेरा मन मुझे खींचकर ले गया। 'पहला कदम' – आज भी मुझे याद है, वैसे तो सदियों में गरम पानी से नहाने की आदत है पर यह बिलकुल अलग था, इसकी गरमी में कुछ खास बात थी। ये धाराएं मन को बाहर से गरम और अंदर से ठंडा कर रही थीं। उस गरम पानी में कठोर से कठोर ठंड को भी चीर–फाड़ने की ताकत है। बस एक बार उतरने की देरी थी, वापस आने के लिए मन मान नहीं रहा था। उस गर्मी को दिल में संजोकर देवदारू पेड़ों की शीतल छाया से होकर मैं अपने निवास–स्थान की ओर बढ़ने लगी।

एक सप्ताह के बाद अब वापस जाने का समय आ गया तो मैं बिलकुल चाहती नहीं थी क्योंकि शहर के जीवन से कई गुना ज्यादा मैं इस ज़िंदगी से प्यार करने लगी थी जो अकेले होने के बाद भी अकेलापन का दुःख नहीं देती, सबके साथ रहकर भी खुद से बात करना सिखाती है, 'मैं क्या हूँ?'' का जवाब देती है। मनाली और मुस्कुराते हुए चेहरों ने मुझे जीवन जीने की कला सिखाई। आई अकेले थी मगर वापस ढ़ेर सारी यादों का एक बड़ा–सा पिटारा लेकर जा रही थी। आज भी मुड़कर देखती हूँ तो फिर से वह गर्माहट महसूस होने लगती है, दिल में अपार खुशी का अनुभव होता है और वे मुस्कुराते चेहरे याद आते हैं। वादा उनसे यही किया था कि ''फिर मिलेंगे'' और उसी दिन का इंतज़ार है अब मुझे।

आशीर्वाद



सुश्री सोनिया बाफिला
मकान नं. जी–3, 905 भारत सिटी,
नियर टीला मोड़, गाजियाबाद (लोनी)

पुराने समय की बात है, देवभपुर नामक राज्य में एक राजा राज करते थे। वे बहुत ही दयालु, कर्मठ और ईश्वर में विश्वास रखने वाले थे, राज्य खुशहाल और वैभवपूर्ण था। प्रजा अपने राजा से संतुष्ट थी। राजा का जीवन भी बड़े ही शांति पूर्ण ढंग से चल रहा था, कमी केवल एक संतान की थी। कई वर्ष बीत जाने के उपरांत भी राजा–रानी को कोई संतान की प्राप्ति नहीं हुई। अनेक यज्ञों, अनुष्ठानों के फलस्वरूप राजा जी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। संपूर्ण राज्य में मानो दीपावली का उत्सव मनाया गया। राज्य तथा महल को फूलों और दीयों से सजाया गया। राजा–रानी सहित प्रजा की प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त कर पाना बहुत कठिन था। गरीबों, जरूरतमंदों में राजा तथा रानी द्वारा दान–दक्षिणा का वितरण किया गया।

नामकरण का दिन आया और बड़ी धूमधाम, उल्लास के साथ नामकरण संस्कार कराया गया। राजकुमार श्रीकृष्ण की उपमा ले रहे थे एवं हर किसी के मन को मोह कर आनंदित कर रहे थे, नाम सुनाया गया ''वैभव''। राजकुमार का नाम ''वैभव'' हर मुख में मक्खन सा घुल रहा था। इसी खुशी के माहौल के बीच राजा ने जब पंडित जी को चिंतित देखा तो उन्होंने पंडित जी से उनकी चिंता का कारण पूछा। पंडित जी राजकुमार की जन्मपत्री दिखाते हुए बोले कि ''हे राजन! जन्मपत्री के अनुसार राजकुमार का जीवन केवल ग्यारह वर्ष का ही है, यह सुन कर राजा जी स्तब्ध रह गये उनका तो मानो संसार ही लुट गया हो, परंतु धैर्य रखते हुए बोले कि पंडित जी इस समस्या का कोई उपाय तो होगा, जिससे राजकुमार की अल्पआयु दीर्घआयु में परिवर्तित हो सके। पंडित जी बोले इसका समाधान तो केवल कोई सिद्ध पुरूष ही बता सकते हैं।

कई वर्षों तक खोज जारी रही कि कोई तो ऐसा मिले जो इसका समाधान निकाल सके। अब राजकुमार दस वर्ष के होने को थे और राजा की चिंता का स्तर असीम पर जा पहुंचा, किंतु ईश्वर में अटूट विश्वास होने के कारण उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया।

अब राजकुमार ने ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश कर लिया था। एक दिन राजा ने अपनी खोज में एक ऋषि को देखा।

ऋषिवर को देखते ही राजा को विश्वास हो गया कि ये ही उनकी समस्या का निवारण कर सकते हैं। राजा ने अपनी समस्या ऋषि के सामने रखी। ऋषिवर ने राजा से राजकुमार का जनेऊ संस्कार करवाने को कहा और कहा कि जनेऊ संस्कार में अधिकाधिक लोगों को आमंत्रित करने को कहा, राजा जी ने बिना किसी तर्क–वितर्क के ऋषिवर की आज्ञा का पालन किया क्योंकि जहां विश्वास होता है वहां कोई तर्क शेष नहीं रह जाता है।

राजा ने बहुत पारंपरिक ढंग से राजकुमार का जनेऊ संस्कार कराया। ऋषि ने राजकुमार से भावपूर्वक और आदर के साथ आए हुए सभी अतिथियों के पैर छू कर आशीर्वाद लेने को कहा। राजकुमार ने बड़ी विनम्रता से सभी लोगों से आशीर्वाद लिया और इस तरह कार्य संपूर्ण हुआ।

इस प्रकार ग्यारहवां वर्ष बीत जाने पर भी राजकुमार स्वस्थ थे और अपना जीवन आनंद से व्यतीत कर रहे थे। राजा यह देखकर बहुत प्रसन्न थे और ऋषिवर का धन्यवाद करने के लिए उनके आश्रम पहुंचे। वहां



पहुंचकर ऋषि के चरणों को पकड़ लिया और आभार व्यक्त किया। राजा बोले "हे ऋषिवर! आपको कोटि–कोटि नमन, आपके कारण मेरा पुत्र आज जीवित है, आपके द्वारा कराये गये जनेऊ संस्कार के कारण ही मेरा पुत्र अल्पआयु से दीर्घआयु प्राप्त कर रहा है। आपका बहुत–बहुत आभार।" ऋषि ने राजा को उठाया और आसन पर बैठने को कहा और कहा "हे राजन! जनेऊ संस्कार तो माध्यम था परंतु राजकुमार को आशीर्वाद के फल के कारण दीर्घआयु प्राप्त हुई है। राजकुमार का खुशहाल जीवन उस आशीर्वाद का परिणाम है जो उन्हें उन लोगों से मिला है जिन–जिन के पैर राजकुमार ने श्रद्धा भाव से छुए हैं।" राजन इस संसार में आशीर्वाद से जो मिल सकता है वह किसी और साधन से नहीं मिल सकता है। यह सब सुन और प्रत्यक्ष देखकर राजा जी को आशीर्वाद की महिमा का ज्ञान हुआ और उन्होंने इसके लिए ऋषि को पुनः आभार व्यक्त किया।

किसी के पैर आप अपने हित के लिए छूते हो, जिसके पैर आपके द्वारा छुए जाते हैं उनके भाव और आपके भावों में समानता आ जाती है प्रेम की समानता परंतु फल आपको अधिक मिलता है। कहते हैं जिनके सिर पर बड़ों के आशीर्वाद का हाथ हो वे जीवन की हर कठिनाइयों को बड़ी ही सहजता से पार कर लेते हैं।

जीवन में हर कदम पर
लटकी मुश्किलों की तलवार रहे
छू लू तेरे पैरों की धूल तो
मेरे हाथों पे खुशियों की पतवार रहे।

मनसुख का दुर्भाग्य



श्रीमती राजकुमारी शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी
एम–143, साउथ सिटी–1, गुरूग्राम

हाय–हाय रे मनसुख चल बसा। यही आर्तनाद चारों तरफ चीत्कार के साथ सुनाई दे रहा था। मनसुख के छोटे से घर में लोग इकट्ठा हो गए थे। आज मनसुख का निस्तेज शरीर पृथ्वी पर बेज़ान पड़ा था। कोई सोच भी नहीं सकता था कि इतनी कम उम्र में उसे यूं दुनियां छोड़कर जाना पड़ेगा। वह अपनी असहाय पत्नी तथा छोटे–छोटे तीन बच्चों को अधर में लटका कर छोड़ गया था। मनसुख का दुर्भाग्य अंत तक साये की तरह उसके साथ रहा। इन सब विचारों में खोए हुए मनसुख की जीवन यात्रा की तस्वीरें आंखों के आगे घूम गयीं।

मनसुख का जन्म उत्तर प्रदेश के एक गांव में हुआ था तथा वह अपने चार भाईयों में सबसे छोटा था। माता–पिता का दुलारा होने के साथ मनसुख बड़े तीन भाईयों का भी लाड़ला था। इसी लाड़–प्यार में मनसुख इतना अधिक बिगड़ गया कि उसने पढ़ने में भी रुचि लेना छोड़ दिया। आए दिन स्कूल में टीचर मनसुख को सजा देते या उसके घरवालों को बुलाकर उसका पढ़ाई में ध्यान न देने पर उनको सावधान किया करते थे। माता–पिता तथा बड़े भाईयों ने उसे बहुत समझाया कि पढ़ाई का महत्व उसे बड़ा होने पर पता चलेगा जब उसके सारे संगी–साथी पढ़ लिखकर अच्छी तनख्वाह कमायेंगे और अच्छी जिंदगी जिएंगे। उस पर किसी की बातों का बिल्कुल असर नहीं होता था। उस पर बुरी संगति का असर होने लगा तथा उसके सभी दोस्त गलत संगति वाले थे।

यहीं से शुरू हुई उसके दुर्भाग्य की दास्तान। उसकी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही हुई। आगे की पढ़ाई करने से उसने इंकार कर दिया। उसने तो अपने माता–पिता से यहां तक कह दिया कि वे अपने पैसे बरबाद करना चाहते हैं तो करें परंतु वह आगे की पढ़ाई नहीं करेगा। गांव में खेती की जमीन भी नहीं के बराबर थी। अब इतने कम पढ़े–लिखे आदमी को नौकरी भी कौन देता। उसकी गुजर–बसर होने का कोई साधन नहीं था। उम्र बढ़ने के साथ–साथ भाईयों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। संगी–साथी भी उससे किनारा करने लगे। इसी बीच माता–पिता ने भी अपना फर्ज़ निभाते हुए उसकी शादी कर दी। शादी के लिए बड़ी मुश्किल से एक गरीब आदमी अपनी कन्या मनसुख के साथ ब्याहने के लिए तैयार हुआ। एक बेरोजगार कम पढ़े आदमी के लिए कौन अपनी बेटी की जिंदगी बरबाद करेगा। शादी होने के बाद

उसका खर्चा बढ़ गया। पहले तो वह अकेला था किंतु अब दो आदमियों की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ गई। इसी बीच माता–पिता भी चल बसे। बड़े तीनों भाईयों की भी अपनी–अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारियां बढ़ गई तथा सभी ने मनसुख की किसी भी प्रकार की सहायता करने से मुख मोड़ लिया। वैसे भी कहा गया है कि बुरे वक्त में कोई साथ नहीं देता। अपने–पराए की परख बुरे वक्त में ही इंसान को होती है। समय बीतते–बीतते शादी के बाद चार वर्ष के अंतरात में उसके तीन बच्चे हो गए। दो बड़े पुत्र थे तथा एक छोटी कन्या थी। जिम्मेदारियों का बोझ मनसुख के कंधों पर बढ़ता ही चला जा रहा था।

इसी उहापोह तथा उधेड़बुन में पड़ा मनसुख सोचने लगा कि कोई काम करना चाहिए। क्यों न पास के शहर में जाकर कोई छोटा–मोटा काम कर लिया जाए जिससे दो वक्त की रोटी तो उसके परिवार को नसीब हो जाएगी। उसने शहर में जाकर छोले–भठूरे की रेहड़ी लगाने का सोचा क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे तथा उसमें कम पूंजी लगाने की जरूरत थी और दूसरे छोले–भठूरे का कारोबार सही चलने वाला था। उसने अपने भाई से दस हजार रुपए का कर्ज़ लिया तथा पत्नी व बच्चों के साथ शहर की तरफ प्रस्थान किया। वहां एक घटिया सी कॉलोनी में चार हजार रुपए में एक कमरा किराए पर लिया। बचे हुए छह हजार रुपए में उसने छोले–भठूरे का काम शुरू किया। छोले तो उसकी पत्नी उबाल देती थी तथा भठूरे वह बाजार से रेडीमेड खरीद लाता था। उसका कारोबार इतना चलने लगा कि महीने की गुजर–बसर किसी तरह होने लगी। उसने अपने बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूल में करवा दिया। ऐसा प्रतीत होता था मानो उसकी तरह उसके बच्चों के भाग्य में भी अधिक विद्या प्राप्त करना नहीं लिखा था। कहावत है कि पढ़ाई भी हर किसी के भाग्य में नहीं होती। उसके दोनों बेटे मुश्किल से 10वीं कक्षा तक ही पढ़ पाए। बेटी ने भी किसी तरह गिरते पड़ते बी.ए. पास कर लिया।



समय बीतने के साथ मनसुख को यह बिलकुल आभास नहीं था कि दुर्भाग्य ने अभी तक उसका पीछा नहीं छोड़ा है। किसी तरह दिनचर्या चल रही थी परंतु एक दिन न जाने क्या हुआ कि वह बेहोश हो गया। घरवालों ने मनसुख को सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा दिया जहां डॉक्टरों ने मनसुख के सभी टैस्ट करवाने की सलाह दी। उसके गले में एक छोटी सी गांठ थी जिसमें मनसुख को हल्का दर्द रहता था। डॉक्टरों ने उसकी भी बायोपसी कराने की सलाह दी। सभी टैस्ट कराए गए तथा बायोपसी के लिए गांठ का एक भाग निकालकर जांच हेतु मुम्बई भेजा गया। भगवान की दया

से सभी जांच रिपोर्टें तो सही आईं परंतु बायोपसी की रिपोर्ट में कैंसर की शुरूआत बताई गई। मनसुख के परिवार पर पुनः कष्टों का पहाड़ टूट पड़ा। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि क्यों दुर्भाग्य उसके पीछे पड़ा हुआ है। वह अपनी जीविका कमाए या अपना इलाज कराए। उसके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था। थक–हारकर उसने जो थोड़ी–बहुत पूंजी बचाई थी उससे अपना इलाज कराने का निर्णय लिया। क्योंकि कहा भी गया है कि जान है तो जहान है। भले ही इलाज सरकारी अस्पताल में चल रहा था परंतु जीविका के बंद होने तथा इलाज व परिवार के भरण–पोषण पर समस्त जमा पूंजी समाप्त हो गई। आर्थिक तंगी तथा बदहाली ने एक बार फिर मनसुख की कमर तोड़ दी। हालत ऐसी हो गई कि भाई–बंधुओं ने भी इस डर से मनसुख का हालचाल पूछना बंद कर दिया कि कहीं मनसुख का परिवार कोई आर्थिक सहायता न मांग ले। अब 5 व्यक्तियों का परिवार अपने दुर्भाग्य को कोसने लगा। इसी हालात के चलते–चलते एक दिन ऐसा भी आया जब मनसुख इस दुनियां को अलविदा कह गया और उसका परिवार देखता ही रह गया। उसने सदा के लिए आंखें मूंद लीं और सभी समस्याओं से निजात पा ली। परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि उनके पास इतने पैसे भी नहीं थे कि मनसुख का क्रियाकर्म ढंग से कर दिया जाए। खैर गली–मुहल्ले तथा आसपड़ोस के लोगों ने चंदा इकट्ठा किया तथा उसका क्रियाकर्म कराया।

अब आगे की जिंदगी के बारे में परिवार को चिंता हुई। परिवार के दोनों लड़के निकम्मे निकल गए। न तो दोनों लड़कों ने ढंग से पढ़ाई–लिखाई ही की तथा न ही उनको मेहनत करने की आदत थी। अपना कोई कारोबार चलाने का भी उनका मन नहीं था। पिता के छोले–भठूरे बेचने का कारोबार संभालने से दोनों ने साफ मना कर दिया क्योंकि छोले–भठूरे की रेहड़ी लगाने में उन्हें बेइज्जती महसूस होती थी। केवल एक लड़की ही ऐसी थी जो कुछ समझदार थी। एक तरफ तो उसे अपने पिता की असामयिक मृत्यु का गम खाए जा रहा था तथा दूसरी तरफ अपने दोनों भाईयों के भविष्य की चिंता सताती रहती थी। इन सबके बीच वह तनावग्रस्त तथा अवसादग्रस्त रहती थी। उसे न तो नींद आती थी, न ही उसका कुछ खाने–पीने का मन करता था तथा किसी भी चीज़ में उसकी कोई रुचि नहीं थी। खैर घरवालों तथा आसपड़ोस के लोगों के समझाने–बुझाने पर उसको समझ आई। उसने हिम्मत जुटाई तथा नौकरी के लिए आवेदन करना शुरू किया। आजकल अच्छे पढ़े–लिखे लोगों को भी नौकरी नहीं मिलती जिसमें उसके पास कामचलाऊ शैक्षिक



योग्यता थी। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी तथा एक कम तनख्वाह वाली नौकरी कर ली। अब हालत यह हो गई कि भाई बहन की कमाई पर पलने लगे तथा वे और अधिक कामचोर हो गए।

समय का चक्र चलता रहता है तथा कुछ भी सदा एक समान नहीं रहता। न सदा सुख रहता है तथा न सदा दुःख ही रहता है। समय बीतने के साथ बहन की शादी हो गई तथा वह अपने ससुराल चली गई। ससुराल वाले इतने खराब स्वभाव के थे कि उन्होंने उसे अपने मायके वालों की आर्थिक मदद करने से मना कर दिया। वह हर समय कुढ़ती रहती परंतु लाचार थी। चाहकर भी वह अपने भाईयों की कुछ मदद नहीं कर पा रही थी। उसे अपने ससुराल में बिगाड़ना नहीं था। यही सब सोचते हुए उसने अपने भाईयों को सलाह दी कि वह अपने पैरों पर खड़े हो जाएं। खुद को तथा मां को भी संभाले बिना काम किए जिंदगी की नैया पार नहीं होगी।

समय बड़ा बलवान है। वह बड़ी फुर्ती से करवट लेता है। जब सही समय आता है तब इंसान की बुद्धि भी सही काम करती है। हर किसी के जीवन में भगवान अच्छा समय जरूर देता है। लगता था कि उसके भाईयों का अच्छा समय आ गया था। बहन की बात भाईयों की समझ में आई तथा उन्होंने मिलकर रेडीमेड कपड़े बेचने का व्यापार शुरू कर दिया। शुरू में तो व्यापार की शुरूआत छोटे स्तर पर की परंतु धीरे–धीरे उसको बढ़ा लिया। उन्होंने मदद के लिए पांच नौकर भी अपने यहां रख लिए। आज के दिन सही समय के होने से दोनों भाईयों का व्यापार इतना चल रहा है कि वे दोनों अच्छी स्थिति में हैं। दोनों के अच्छी कॉलोनी में अपने–अपने मकान हैं। उनके बच्चे भी शहर के अच्छे स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनकी बहन भी अब सुकून भरी जिंदगी जी रही है कि चलो भाई अब सही सैट हो गए हैं। उनका परिवार अच्छी जिंदगी जी रहे हैं तथा बच्चे भी अच्छे स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अब मां का हिसाब यह हो गया है कि उसने दुनियादारी से संयास ले लिया है तथा सांसारिक जिम्मेदारियां अपने दोनों बेटों को सौंप दी हैं। अभी भी वह अपने बेटों के सलाह मांगने पर घर के कार्यों में सलाह देती रहती है।

चलो अंत में यही कहा जा सकता है कि मनसुख की पत्नी को अपने पति के जीते जी तो चैन भरी जिंदगी जीने को नहीं मिली परंतु लड़कों ने अपनी मां को बुढ़ापे में आराम वाली जिंदगी जीने का अवसर दिया है। इसे ही कहते हैं समय का खेल। समय बलवान है। इसके आगे अच्छे–अच्छे, बड़े–बड़े आदमी भी झुक जाते हैं।



अनुभूति

भाग–2 (कड़ी को जोड़ने के लिए कृपया पिछले अंक 141वें को देखें)



बी.एस. चौहान
मीडिया सलाहकार
1809, महागुन मेपल, प्लॉट एफ–26, सेक्टर–50, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था और उसके पास के घर में रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

उसे नींद नहीं आ रही थी। रात के लगभग एक बजे, उसने अनु का दरवाजा फिर से खटखटाया।

दरवाजा खोलते हुए अनु ने पूछा– क्या कोई समस्या हैं?

आनंद – मुझे ठंड लग रही है और मैं सो नहीं पा रहा हूँ। मुझे यकीन है, अगर मुझे हीटर या रजाई नहीं मिली तो मैं बीमार पड़ जाऊंगा।

रजाईयां तो दो थीं लेकिन बहुत ठंड होने के कारण ये दोनों ही रजाईयां अनु इस्तेमाल कर रही थीं। उसने आनंद को अंदर आने के लिए कहा।

आनंद – मुझे खेद है कि मैने इतनी देर रात आपको परेशान किया। मैं बस एक कप चाय पीना चाहता हूं जोकि मैं खुद बना लुंगा आप जा कर सो जाओ।

अनु – कोई बात नहीं, मैं चाय बना देती हूँ। मैं भी आपके साथ चाय पी लूंगी। वास्तव में, मुझे भी नींद नहीं आ रही है और मैं आपके बारे में अधिक जानना चाहती हूं। तुम भटक क्यों रहे हो? आप ऐसा क्या खोज रहे हैं जिसे आप दिल्ली में नहीं खोज सकते?

दोनों ने एक कप चाय पी। उन्होंने एक–दूसरे के बारे में बहुत सारी जानकारी साझा की। बातचीत के दौरान आनंद ने पाया कि अनु फिर से पारिवारिक जीवन में नहीं जाना चाहती थी क्योंकि वह अपने भविष्य के बारे में कई आशंकाओं से घिरी हुई थीं। उसने महसूस किया कि अनु बहुत ही रहस्यपूर्ण सी थी।

लंबी बातचीत और बातों को साझा करने के बाद अनु ने सुझाव दिया कि वह दोनों एक ही रजाई शेयर कर सकते हैं। एक–दूसरे से बात करते उन्हें समय का पता ही नहीं चला और एक ही रजाई में रात बिता दी। नींद तो वास्तव में केवल एक ही घंटे के लिए आई थी।

करीब एक घंटे की गहरी नींद के बाद जब आनंद सुबह जागा तो उसने पाया कि अनु पहले ही जा चुकी है। उसने इधर–उधर देखा लेकिन वहां कोई नहीं था। वास्तव में गांव में कोई नहीं था। वह रसोई में गया और पाया कि चाय तैयार है, उसे अनु द्वारा लिखा गया एक पत्र मिला। वह बहुत उत्सुक हो गया और पढ़ना शुरू कर दिया।

"प्रिय आनंद,

'आनंद' शब्द का अर्थ अपने आप ही कई भावनाओं को दर्शाता है। लगभग पिछले 15 घंटों से तुम्हारे यहां रहने के दौरान मैंने महसूस किया कि यह पहली बार है जब मैं एक ऐसे व्यक्ति के साथ, जिससे मैं पहले कभी नहीं मिली थी, अपनी बहुत निजी पलों और घटनाओं को साझा कर सकी।

इससे पहले कि आप इस पत्र को आगे पढ़ें, कृपया अपनी चाय का

आनंद लें। यह स्थानीय पत्तों से बनी है जिसमें मैंने बहुत कम गुड़ डाला है। दूध नहीं था। वह कल ही खत्म हो गया था और इसलिए उसकी पूर्ति नहीं की जा सकी। लेकिन सूखे हुए दूध का पाउडर था जिसका मैंने इस चाय बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया है।

मुझे आशा है कि आप मेरे सरल अनुरोध पर अमल कर रहे हैं और इस पत्र को पढ़ते हुए आप अभी चाय का आनंद ले रहे हैं।

मैं यहां सिर्फ एक दिन के लिए आई थी और संयोग से एक रात भी रुकी। जैसे आप जीवन के लक्ष्य की खोज करने आए हैं, मेरे भी कुछ ऐसे ही उद्देश्य थे। मैंने अपने मामा के साथ कुछ औपचारिकताओं को पूरा करने में सहयोग करते हुए भी शादी नहीं करने का फैसला किया है ताकि वे संतुष्ट हो जाएं कि उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया, हालांकि वे सफल नहीं हो सके।

मैं जा चूकी हूँ। कृपया मुझे खोजने का प्रयास न करें। मैंने एक बार सोचा कि तुम्हें जगा दूं, लेकिन मैंने पाया कि तुम गहरी नींद में हो। इसलिए मैंने तुम्हें परेशान नहीं किया।

मुझे खोज पाना संभव नहीं है। मैं इस शाम को और तुम्हारे साथ बिताई हुई इस रात को जीवन भर याद रखूंगी। मुझे आशा है कि आप भी ऐसा ही अनुभव करेंगे।

मुझे हिन्दी कवयित्री महादेवी वर्मा का एक श्लोक याद आ रहा है। उनका लेखन बल्कि रहस्यवादी है। मैं आपके उपकार के लिए इस श्लोक को साझा कर रही हूं।

'मिलन का मत नाम ले रे,
मैं विरह में चिर रहूं।
चिर तृप्ति कामनाओं का
कर देती अविसत जीवन।
बुझते ही प्यास हमारी,
पल में विरक्ति जाती बन।'

इसका अर्थ है कि हमें कुछ ऐसा नहीं मिलना चाहिए जो बहुत महत्वपूर्ण और बहुत कीमती है और हमें इसके लिए अपनी गंभीर खोज जारी रखनी चाहिए। क्योंकि जो खुशी हमें इसे प्राप्त करने की कोशिश में मिलती है, वह उस क्षण गायब हो जाती है जब हम इसे प्राप्त कर लेते हैं और तब हम उसमें वह रुचि नहीं दिखा पाते।

बर्फ से ढके पहाड़ों, जंगल के पेड़ों विशेष रूप से उनकी पत्तियों, खिलते और मुस्कुराते हुए फूलों और पास की झील को देखते रहें, आप अपनी खोज में सफल होंगे।

अलविदा! अपने जीवन का लक्ष्य ढूँढने के लिए शुभकामनाएं।

आपकी – 15 घंटे की दोस्त

खोज (अनुभूति)

इस पत्र को पढ़कर आनंद कुर्सी पर बैठ गया और सोचने लगा।

उन्होंने नौदी गांव के लिए अपनी यात्रा शुरू की। उसने उस गांव में रहने और अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य का पता लगाने का फैसला किया।

एक दिन आनंद सुबह–सुबह एक लंबी सैर के लिए निकला और उसे एक पेड़ मिला जो सुंदर फलों से लदा हुआ था। आनंद को इस फल की किस्म के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। यह मानकर कि फल पक गए हैं, उसने उनमें से दो को तोड़ लिया जोकि बहुत ही आकर्षक लग रहे थे। उसने एक फल खाने का सोचा और दूसरे फल को दिखाने के तौर पर ड्राइंग रूम में रख दिया। उसने सोचा कि ये फल उसकी शान हैं। अपने घर आकर उसने जमींदार को वह फल दिखाया और उस फल के खाने के फायदे और स्वाद के बारे में जानना चाहा। जमींदार ने उसे चेतावनी दी कि उसे इसे खाने के बारे में सपने में भी नहीं सोचना चाहिए, क्योंकि यह वास्तव में जहरीला था। फिर आनंद ने उस फल को नष्ट कर उसे इस आशंका के साथ कूड़ेदान में डाल दिया कि कहीं उसके घर आने वाला कोई वरिष्ठ नागरिक गलती से उसका सेवन न कर ले। आनंद जिसे यह फल इतना सुंदर और आकर्षक लग रहा था, अब उसे नापसंद करने लगा। फल के प्रति उसकी धारणा कुछ ही क्षणों में बदल जाती है।

क्रमशः अगले अंक में.....

इस समय में उस समय की बात नहीं

सुश्री पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
उत्तराखण्ड, देहरादून

पता नहीं क्यों नहीं जँचते हैं मुझे
इस दौड़ भाग की जिंदगी के झमेले
हाँ मुझे मनभावन बड़े लगते थे,
वो गाँव के छोटे–छोटे से मेले।।
कहाँ मज़ा है इसमें कि
बच्चे खेलते रहे ऑनलाईन गेम्स अकेले,
मज़ा तो उन खेलों में था,
जहाँ गाँव की मिट्टी में बच्चे एक दूजे को धकेले।।
ए.सी. की ठंडी हवा में, मलमल के गद्दों पर भी,
नींद आज आती नहीं,
पता नहीं क्यों वह गाँव की खरहरी खाट की याद,
ज़हन से जाती नहीं।।
पाँच सितारा होटलों के खाने में भी,
वो स्वाद मुझे मिल पाता नहीं,
कच्चे आँगन में रखे, सिलबट्टे पर पिसी,
चटनी का स्वाद, जबान से मेरी जाता नहीं।।
गर्मियों की छुट्टियों के लंबे दिन,
आज बीत जाते हैं अमेजोन, नेटफिलिक्स
की वेब सीरीजे देखने में,
पता नहीं कब गर्मियों की छुट्टियाँ बीत जाती थी हमारी,
गाँव के खेतों में दौड़ने में, खरबूजे तरबूजे खरीदने के।।
शहरों के पिक्चर हाल में कैद हो,
पिक्चर देखने में बात वो मिलती नहीं,
मिलकर पूरा मोहल्ला देखता था
एक ही टीवी पर – रामायण और महाभारत
क्या कहूँ ऐसी तस्वीर भी देखने को अब मिलती नहीं।।
वे शादियों में घर पर बने मसालों की खुशबू,
बैलगाड़ी घोड़े–गाड़ी पर चढ़कर, घूमना पूरे गाँव में,
वह मीठी यादें, जहन से मेरे जाती नहीं हैं।।
बर्गर, पिज्जा, कोलड्रिंक्स, आईसक्रीम
खाने में मजा वो आता नहीं
कच्ची कैरी इमली पर नमक लगा खाने का स्वाद,
जुबान से मेरी जाता नहीं।।
काश, काश कुछ ऐसा हो, वो सुनहरे दिन वापस आ जाएँ,
काश कुछ ऐसा हो, खेतों में दौड़ना
पगडंडियों पर चढ़ना, फिर से हो
काश फिर से मेरे गाँव की हवा मुझे सहला जाए।।
काश कभी ऐसा हो कि
फिर से मेरे आँगन के नीम पर,
झूला में झूल पाऊँ।।
काश कुछ ऐसा हो कि फिर से मैं
नंगे पैर दौड़ती पाठशाला को जाऊँ।।
काश कुछ ऐसा हो, जहाँ न हो दौड़ धूप आधुनिकता की,
ना हो शोर शराबा इन वाहनों का, कारखानों का,
बस कुछ, ऐसा हो जाए,
फिर से सो जाऊँ मैं आँगन में बिछी खाट पर
और कर बंद अपनी आँखे बस सुनती रहूं,
मैं गीत तीज और सावनों का।।
बस ख्वाहिश है मेरी कि फिर से एक बार
मेरा गाँव मुझे भर ले अपने आँचल में,
और यदि प्राण मैं त्यागूँ तो त्यागूँ बस,
अपने गाँव की मिट्टी, उसी के धरातल में,
उसी के धरातल में।।

चलो कुछ पेड़ लगाये



कुमार भास्कर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
बेंगलूर–560001

देखो पेड़ कितने निराले – अलबेले हैं,
कुछ छोटे, कुछ विशाल सजीले हैं,
देते हैं हमें अनुपम उपहार,
जीवन से अपने सिखाते परोपकार।।

मीठे फल और सुगंधित फूल,
प्राणवायु से रखते वातावरण अनुकूल,
औषधियों की इनमें भरमार,
इनसे सीखो जीने का व्यवहार।।

झुरमुठ पर इनके चिड़ियों के रैन बसेरे,
छाया में इनके सुकून पाते जीव–जंतु बहुतेरे,
बादलों को रिझा कर वृष्टि करवाते,
मजबूत जड़ों से मृदा–क्षरण रोक पाते।।

धरती माँ कर रही पुकार,
अब और ना मेरा परिवेश उजाड़,
बनो मेरे संरक्षण में भागीदार,
सुख–समृद्धि को करो अंगीकार।।

इससे पहले कि जब कुछ बिगड़ जाए,
चलो मिलजुल कर कुछ पेड़ लगाएँ,
एक तुम लगाओ और एक हम लगाएँ,
पेड़ों से इस धरा को उपवन सा बनायें।।

गजल



धर्मवीर भारती
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
दक्षिण मध्य रेलवे, सिंकदराबाद

कोई दिल से नहीं मिलता, किसी से दिल नहीं मिलता,
आजकल कोई प्यार के काबिल नहीं मिलता
डूब जाती है जिंदगी उलझनों के भँवर में,
गर आ गए तूफाँ तो साहिल नहीं मिलता।
कहने को तो कितनी ही हैं बातें हौसला अफजाई के,
गर मुकद्दर न हो तो मंजिल नहीं मिलती।
जिसे देखा है सरेआम कत्ल करते हुए सभी ने,
क्या अचंभा है कि वो कातिल नहीं मिलता।
जमाने गुजर गए उसकी कोई चिट्ठी मिले हुए,
अब तो बताने वाला उसका कोई हाल–ए–दिल नहीं मिलता
क्यूं बताएं गैरों को हाल अपने जख्म का,
अपनों के लिए जख्म का कोई मरहम नहीं मिलता।
हर चेहरा है मायूस, एक मनहूसियत सी छाई है,
खिलखिला कर हंस सके, वो जिंदादिल नहीं मिलता।
डूब जाएँ सभी यारों के साथ अपनी मस्ती में,
ऐसा कोई आज महफिल नहीं मिलता
आज का सच
सब अपनी ही राह निहारे,
किसको राह दिखाए कौन? अपनी धुन में मस्त सभी हैं,
दूसरे को समझाए कौन?
दोस्ती–यारी, सलाह–मशवरा, बातें अब बेगानी हैं।
कौन सुनेगा, किसे सुनाएँ,
सब की यही कहानी है।।
किस को फुर्सत मिलती है अब, अपनी दुनियादारी से,
रिश्ते–नाते छूट गए सब, ऑनलाइन की बीमारी से।
पहले पूछा करते थे – मित्र, कहां हो? कैसे हो ...
हमें नहीं अब मतलब कोई, किसी भी रिश्तेदारी से।
फेसबुक और इंस्टाग्राम से मिलती अब कब फुर्सत है?
सब कुछ है सोशल मीडिया पर, मित्र की किसे जरूरत है?
हर लाइक को देख–देख कर गर्व उसी पर करते हैं
पर सच्चा वह मित्र कहां है ...
साथ खड़ा जो मुसीबत में।
ऐसे दोस्त कहां मिलते अब?
होते ना सबकी किस्मत में।
एक बार चलो हम मिलते हैं
बचपन के उन सच्चे यारों से,
शायद वह भी ढूँढ रहा हो,
गांव में गलियारों में .....

महंगाई



सुश्री मीना कुमारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(खाद्य, कृषि एवं जल संसाधन)
नई दिल्ली–110002

हाय, हाय, हाय रे
ये महंगाई–महंगाई–महंगाई।
ठीक से जीने भी नहीं देती है ये महंगाई,
थोड़े ही दिनों बाद बढ़ जाती है महंगाई,
महंगाई ने गरीब लोगों की नींद है चुराई,
अक्सर घर में होती है रोज लुगाई से लड़ाई,
बच्चों की भी इस चक्कर में हो जाती है पिटाई,
अब तो पूरी नहीं पड़ती वेतन की कमाई,
महंगाई से बेरोज़गारी हर तरफ है छाई,
जिसकी कहीं नहीं होती है कोई भी सुनवाई,
महंगाई से बढ़ती जा रही है देश में बुराई,
अब तो जहान से जा रही है अच्छाई,
इंसानों के दिलों से ख़त्म होती जा रही है सच्चाई,
बे–लगाम होती जा रही है महंगाई,
महंगाई से हो गया है जीवन बहुत दुखदाई,
कई बार तो पत्नी से भी हो जाती है जुदाई,
महंगाई से बचने के कोई तो उपाय करो रे मेरे भाई,
पेट्रोल, डीज़ल व एल.पी.जी. पर लगाम कसो रे भाई,
इस की ज़रा भी पड़े न हम पर धूप और परछाई,
महंगाई की जल्दी से करो रे अंतिम विदाई,
नहीं तो हर घर पर होती रहेंगी इस प्रकार लड़ाई,
हाय, हाय, हाय रे
ये महंगाई–महंगाई–महंगाई!!

सदाचार



डॉ. प्रवीण सोनी
73/318–ए, टैगोर लेन
शिप्रा पथ, मानसरोवर
जयपुर–302020

सदाचार बढ़ि का जगत? सदाचार सुख सार।
आयु बढ़ावत मनुज की, ये जीवन आधार। (1)

वैभव लक्ष्मी सब मिले, जो चाहै सो पाइ।
या बिनु कोऊ जगत में कैसे हरि गुन गाइ? (2)

या बिनु संकट ना कटें, या बिनु कस पावित्र?
जीवन कौ सिंगार ये गंध उड़ति जनु इत्र।। (3)

या बिनु सबई त्यागते या बिनु का पहचान?
नर वपुरौ जब भ्रमित हो तब भूलतु–भगवान।। (4)

दुराचार निंदित सदा घिर्‌यौ रहै नर रोग।
कछु काम न आइंगे अभिमानी के भोग।। (5)

चार दिना नर जिंदगी ज्यों उजियारी रात।
सदाचार जो छोड़तौ सो पाछे पछतात।। (6)

दुःख भोगै कटु वचन सह सदाचार ते हीन।
राजी कैसे रह सकै गहरे जल बिनु मीन? (7)

धर्मसफल आचार ते, धन रूपी फल देत।
सम्पति प्राप्त करात है सकल अशुभ हर लेत।। (8)

जा कुल कुनबा हू बड़ौ गैय्यन की भरमार।
सदाचार वंचित अगर सब कछु ही बेकार।। (9)

जा कुल धन हू ना अधिक विद्यमान आचार।
अच्छा कुल कहलात है यश मिलतौ – संसार।। (10)

जदपि नीच कुल जनम हो सदाचार भरपूर।
जिन सुमनन में गंध है, भ्रमर रहत कब दूर? (11)

धर्म प्रकट आचार ते, ता स्वामी भगवान।
नर–चोला है पुण्य–फल, समझि अरे इंसान।। (12)

'सत', को मतलब साधु है, साधु सदा निर्दोष।
दोष–दोष सब त्यागि नर, क्यों फिरतौ मदहोश? (13)

अनाचार जो नर करै सो निंदित संसार।
परलोकहु दुःख पावतौ, करिए कछु विचार।। (14)

सदाचार बढ़ि जग कहा? शूद्र पाय सम्मान।
सदाचार बिनु जग कहा? सदाचार सुखखान।। (15)

मेरा पेट मेरी शान



आकाश त्रिवेदी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएँ, मध्य मकान, प्रयागराज

कितना सीधा साधा है ये, कितना भोला भाला है,
पता नहीं था ये पेट मेरा, इतना आगे निकलने वाला है।

अब निकल ही गया तो इसकी सफलता से क्यूँ जलूं भला,
जब चिड़िया चुग गई खेत तो हाथ क्यूँ मलूं भला।

इसलिए अब मुझे अपने पेट से बहुत प्यार है,
फायदे भी तो आखिर इसके एक नहीं हजार है।

जैसे आराम से रख सकता हूँ हाथ इसमें जब होता हूँ परेशान,
या जब ढूँढना होता है कोई समाधान।

दिखता हूँ खाते पीते घर का, मानो किसी सेठ खानदान का,
आखिर कारण भी तो है ये कई जगह मेरी शान का।

कुछ भी खाने से पहले मुझे सोचना नहीं पड़ता,
और खाने के बाद पचाने के लिए दौड़ना नहीं पड़ता।

किसी गीत को गुनगुनाते हुए इसे तबले सा बजा लेता हूँ,
जानता न होऊं सुर–ताल मगर ऐसे ही मजा लेता हूँ।

बस–मेट्रो की भीड़ में कोई भी मेरे पास नहीं आ पाता है,
मेरा पेट मेरे लिए खूब जगह बनाता है।

सम्हालने को हो कार की स्टेयरिंग या छोटे बच्चे
ये हमेशा आगे रहता है,

फोटो के वक्त सांस रोकूँ तो पीछे हटने का
गम भी बेचारा सहता है।

लेकिन इन खूबियों में खामियों को छुपाते हैं हम,
और जब हो जाती है देर तो पछताते हैं हम,

हुआ वही जब एक रोज मुझे पड़ा दिल का दौरा,
हाथ पैर फूल गये मेरे दिमाग गया बौरा,

एहसास हुआ इसके आगे आने से हम कितना पीछे जाते हैं,
प्रत्येक इसके बढ़ते कदम से लाखों बीमारियाँ बुलाते हैं।

जिंदगी की ऐश में सब कुछ खाक हो जाता है,
धीरे–धीरे सारा शरीर राख़ हो जाता है।

निष्कर्षतः चलना है हमें और इसे पीछे रखना है,
ज़िंदगी की मिठाई को थोड़ा–थोड़ा चखना है।।

आज़ादी की कहानी



नवीन 'एकान्त' दैया
निजी सचिव
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

आओ तुम्हें सुनाऊँ आज़ादी की एक कहानी।
मैंने भी सुनी इसे बड़े बुजुर्गों की जुबानी।।
कि केसरिया चोला पहन निकले भारत माँ को छुड़ाने।
स्वतंत्रता का पहला बिगुल, बजाया था मंगल पाँडे ने।।

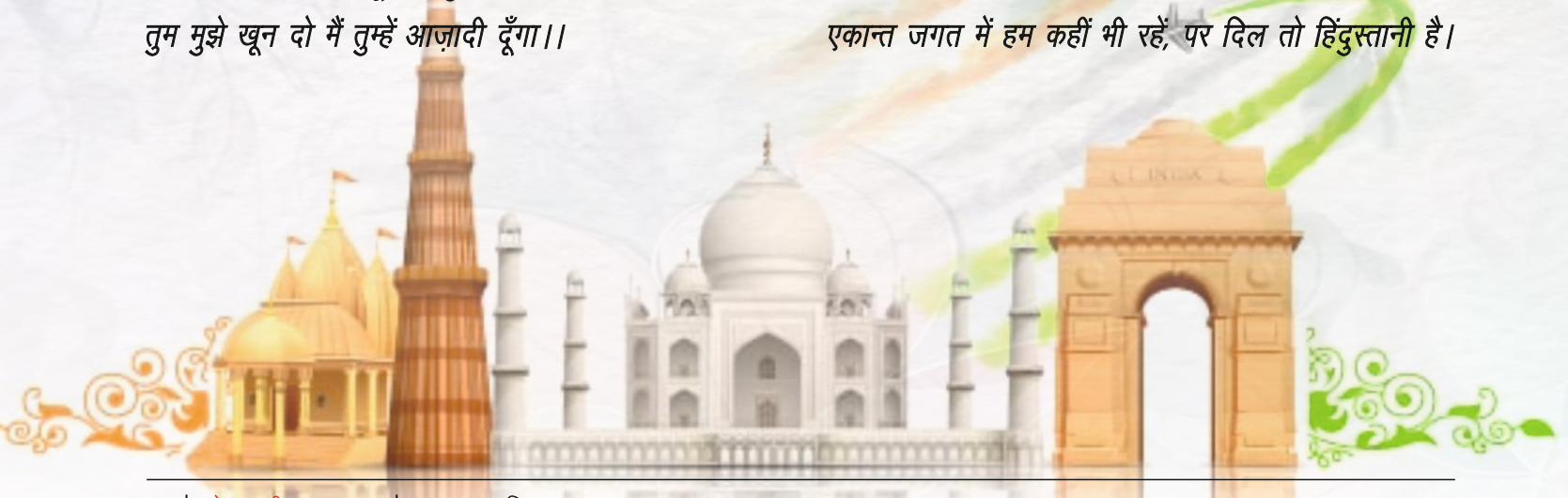
दुश्मन के दाँत खट्टे करने, निकल पड़ी थी झाँसी की रानी।
1857 में ही पटकथा लिख दी आज़ाद भारत की कहानी की।।
नरम और गरम तरीकों से, लड़ने की बन गई दो टोली।
सबका मकसद था आज़ादी राहे जुदा चाहे हो ली।।

गोली खाई कोड़े खाये, खेली रक्त की होली।
इंकलाब जिंदाबाद का नारा गूँजा भगतसिंह की थी वो बोली।।
आज़ादी की कीमत लहू था, सुभाषचंद्र ने माँगा।
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।।

जलियाँवाले शहीद हुए थे, काम डायर ने किया था गंदा।
राजगुरु, सुखदेव ने भगत संग चूमा, फाँसी का फंदा।।
चंद्रशेखर ने मशाल जलाई क्रांति का था झण्डा ऊँचा।
आज़ाद आज़ाद ही था, द्वार मौत के खुद ही पहुँचा।।

लाला जी भी शहीद हुए थे और कितनों ने दम तोड़ा।
सत्याग्रह की राह दिखाई, रुख बापू ने भी मोड़ा।।
सत्य अहिंसा के चरखे ने दुश्मन का दिल तोड़ा।
आज़ादी मिली आखिर, पर विभाजन का मिला एक रोड़ा।।

आओ संकल्प करें मिल के देश का गौरव बढ़ायेंगे।
भारत माता की मर्यादा के लिये, कोई भी कीमत चुकायेंगे।।
देशहित की बात न करे जो, रगों में उसके पानी है।
एकान्त जगत में हम कहीं भी रहें, पर दिल तो हिंदुस्तानी है।



आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका

लागोस के आखिरी दिन क्या कुछ नहीं हुआ

भाग-5 (कड़ी जोड़ने के लिये कृपया पिछले 141वें अंक को देखें)



कमलजीत सिंह रामुवालिया
प्रधान निदेशक
रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

लोकल परंपरागत बाजार, लागोस

शुक्रवार 3 अप्रैल का दिन, नाइजीरिया के शहर लागोस में हमारा आखिरी दिन था। एयरपोर्ट पर शाम को जाने से पहले दोपहर तक के समय को हमने स्थानीय भ्रमण के लिए चुना।

अतः पूर्वाह्न में हम एक लोकल परंपरागत बाजार में गए। यहाँ लकड़ी और पत्थर के हस्तनिर्मित शिल्प मिलते हैं। यहाँ पर तराशे हुए पत्थर, चाबियों के छल्ले, केनवस और कपड़े पर हाथ से बनाई पेंटिंग तथा विभिन्न प्रकार की विशिष्ट कलाकृतियाँ बेचने वाली कुछ दुकानें हैं। बाजार में दुकानें ठीक से पंक्तिबद्ध थी परन्तु गलियां कच्ची थी, कोई टाईल या फर्श नहीं लगाया गया था। यह बाजार सख्त सूखी मिट्टी पर बना हुआ था, जो वर्षा के मौसम में हो रही बारिश के पानी से भर जाता होगा। वस्तुओं की कीमत पता करने पर पता लगा कि यहाँ पर सौभाग्य रत्न पत्थर काफी सस्ते मिलते हैं। मैंने मुख्यतः एक छोटा मूंगा पत्थर खरीदा जोकि सिर्फ 250 रुपये भारतीय मुद्रा की कीमत का था। इसकी कीमत मेरे अनुमान में भारत में दो से तीन हजार तक होगी, परन्तु यहाँ पर यह बहुत सस्ता था। इस यात्रा के दौरान श्रीमती चौधरी भी हमारे साथ थीं जिन्होंने हल्की–फुल्की खरीदारी करवाने में हमारी मदद की क्योंकि वह कई दुकानदारों से पहले ही भली–भांति परिचित थीं। उन्होंने बताया कि इस इलाके में उन्हें आने का मौका तभी मिलता है जब कभी कोई मेहमान आते हैं और वह ऐसे अवसरों का सदुपयोग बखूबी से करती हैं।





लागोस के लोकल परंपरागत बाजार में कलाकृतियों का प्रदर्शन



बिना बिजली से गाना सुनाने वाला एक प्राचीन ग्रामोफोन जो आज भी सही हालत में बज रहा था।

दोपहर के भोजन की मेजबानी श्रीमती और श्री चौधरी द्वारा की गई। उन्होंने विक्टोरिया द्वीप पर स्थित वायसराय रेस्टोरेंट में भोज की दावत आयोजित की। होटल बहुत ही शानदार एवं साफ–सुथरा था तथा सफेद पेंट और टेक्सचर्ड वाल पेपर्स से सजाई गई दीवारों को देखकर एक खुल्ली–खुल्ली सी जगह का



वायसराय रेस्टोरेंट में विदाई दावत पर श्रीमती एवं श्री चौधरी के साथ।

अहसास हो रहा था। परोसा गया भोजन काफी स्वादिष्ट था। नाईजीरिया में चूंकि अधिकांश भाग में वाणिज्य और व्यापार का लेन–देन नकदी में होता है, इसलिए यह आश्चर्य की बात थी कि खाने के भुगतान के लिए विभिन्न मूल्यवर्गों के नोटों की एक मोटी बंडल दी गई थी। नाईजीरिया की मुद्रा नायरा का खरीद मूल्य बहुत कम है जोकि उस वक्त भारतीय करंसी से 30 गुणा रेट पर थी।

होटल से एयरपोर्ट :

आधी रात का एक किस्सा

होटल वापिस आकर हमने अगले सफर की रवानगी की तैयारी शुरू की। हमारी अगली मंजिल तनजानिया



रवानगी से पहले होटल इंटर कॉन्टिनेंटल, लागोस के कमरे में आखिरी पल।

का शहर 'दार अस सलाम' था। वहाँ जाने के लिए लागोस से कोई सीधी फ्लाईट नहीं थी, इसके लिए हमें बरास्ता कीनिया के शहर नैरोबी होकर जाना था। लागोस में हमने कोई विशेष बड़ी शॉपिंग नहीं की थी। इसलिए हवाई यात्रा दौरान सामान के भार संबंधी कोई खास चिंता नहीं थी पर, हाँ कुछ जरूरी कागजात साथ लेकर जाने थे जिसकी वजह से भार बढ़ सकता



लागोस एयरपोर्ट का बाहरी दृश्य।

था। इसलिए हमने बहुत सारे कागज–पत्रों की पी.डी. एफ. बना ली थी। इसलिए कुछ भार निर्धारित सीमा के अंदर ही रहा।

हम लोगों ने शाम 7 बजे होटल इंटर कांटिनेंटल, विक्टोरिया द्वीप, लागोस से चेक–आउट किया और मुर्तला मुहम्मद हवाई अड्डे, लागोस की ओर एक जापानी कम्पनी निसान की बनी हुई एस.यू.वी. में प्रस्थान किया। यह एक ताकतवर खुली जगह वाली बड़ी गाड़ी थी।

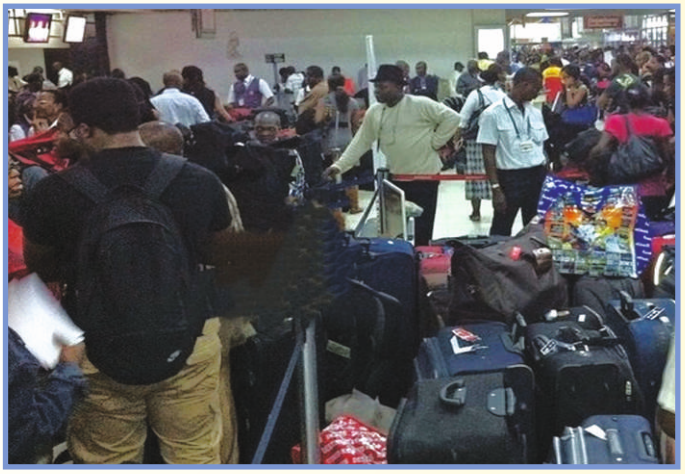
हवाई अड्डे के प्रवेश द्वार पर पहुंचने से काफी पहले एक दो किलोमीटर रास्ते में ही मुख्य सड़क पर यातायात अवरोध बहुत अधिक था क्योंकि प्रत्येक



मुर्तला मुहम्मद एयरपोर्ट, लागोस पर पहुँचने का दृश्य।

वाहन की बारीकी से जांच की जा रही थी और इसमें बहुत समय लग रहा था।

हमारा कार चालक काफी चुस्त था और लोकल ट्रैफिक की पेचीदगियों से भली–भांति परिचित था। वह किसी तरह वहां से दाएँ–बाएँ करके गाड़ी निकालने में कामयाब रहा और किसी तरह हम लोग एयरपोर्ट की ड्रॉप लाइन तक पहुंच गए। श्री चौधरी के साथ एयरपोर्ट में प्रवेश के बाद, हम एयरवेज उड़ान काउंटर पर गए क्योंकि हमारी उड़ान संख्या प्रदर्शित ही नहीं की गई थी, जबकि अन्य आस–पास की उड़ानों की संख्या प्रदर्शित की गई थी। पूछताछ करने



एयरपोर्ट के अन्दर कुछ इस तरह की भीड़–भाड़ थी।

पर, हमें बताया गया कि कोई बात नहीं, आपका चैक–इन यहीं से होगा। काफी जटिल प्रक्रिया के तहत प्रत्येक बैग, हैंड बैग की खोल–खोल कर गहनता से जांच की जा रही थी और कीनिया एयरवेज काउंटर पर सभी जाने वाले यात्रियों को सेवा प्रदान करने के लिए केवल दो ही व्यक्ति थे। सीमा शुल्क विभाग द्वारा जांच घोंघे की चाल के समान धीमी गति से चल रही थी। इससे लग रहा था कि मुसाफिरों की फ्लाईट छूटने की नौबत आ सकती है।

श्री चौधरी ने सीमा शुल्क के अधिकारियों को बताया कि हम लोग आधिकारिक अथवा राजनयिक कार्य हेतु

यहां पर आए हैं, हमें प्राथमिकता देते हुए अन्य यात्रियों से पहले जाने की अनुमति दी जा सकती है, वह सहमत तो हो गये परंतु अनिच्छापूर्वक। लेकिन इस समय तक लगभग एक घंटे का वक्त पहले ही बीत चुका था। इसके बाद यात्रा दस्तावेजों की जांच और आंखों की पुतलियों को कैमरे में कैप्चर करवाना था। यह बायोमैट्रिक जांच का हिस्सा था।

चूंकि कीनिया एयरलाइन में केवल दो चैक–इन बैगेज की इजाजत थी तथा 23 किलोग्राम से अधिक वजन प्रति चेक इन बैगेज की अनुमति नहीं थी, लिहाजा मुझे प्रति चैक–इन बैगेज वजन के अनुसार दो बैगों में अपने सारे सामान को फिर से समायोजित करना पड़ा। केबिन में 10 किलोग्राम तक के एक बैग के साथ एक अतिरिक्त लैपटॉप बैग की अनुमति थी। अब हमें अप्रवासन काउंटर की ओर प्रस्थान करना था। यहाँ पर कंटरी चैक–आउट करने की मोहर लगनी थी।

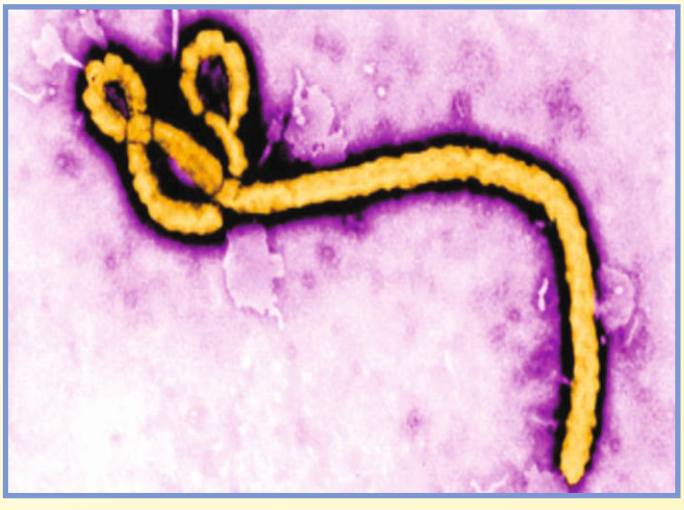
यहां काफी लंबी चक्करदार कतारें लगी हुई थी जिसमें खड़े होकर क्लियरेंस लेने में एक घंटे से अधिक का समय लग सकता था। श्री चौधरी ने कुछ आधिकारिक परिचितों से संपर्क किया और उन्हें फास्ट ट्रैक लेन के माध्यम से क्लियरेंस सुविधा मुहैया कराने हेतु अनुरोध किया। वहां भी यह जितना त्वरित होना चाहिए उसके विपरीत काफी धीमा था। यहाँ तैनात कर्मचारियों ने बताया कि हमें इबोला क्लियरेंस लेने की आवश्यकता है।

इबोला वायरस

हमारी यात्रा से पहले पश्चिम मध्य अफ्रीका के कई देशों में इबोला बीमारी का खतरनाक वायरस फैला हुआ था जोकि बहुत जल्दी संक्रमित करने की क्षमता रखता है। कुछ देशों जैसे कि नाइजीरिया जोकि हमारी यात्रा का पहला पड़ाव था, को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इबोला वायरस से मुक्त होने की घोषणा कर दी थी। अगर ऐसा न होता तो हमारा नाइजीरिया जाना रद्द हो सकता था।

इबोला एक दुर्लभ, लेकिन घातक वायरस है जो बुखार, शरीर में दर्द, दस्त और कभी–कभी शरीर के अंदर और बाहर खून बहने का कारण बनता है। यह संक्रमित जानवर की त्वचा या शारीरिक तरल पदार्थ, जैसे बंदर, चिम्पांजी, या फलों के चमगादड़ के संपर्क में आने से लोगों में फैलता है। फिर यह उसी तरह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को लग जाता है। अक्सर इसकी पकड़ में वो भी आ जाते हैं जो लोग किसी बीमार व्यक्ति की देखभाल करते हैं या किसी ऐसे व्यक्ति को दफनाते हैं जो बीमारी से मर गया हो।

जैसे ही वायरस शरीर में फैलता है, यह प्रतिरक्षा प्रणाली और अंगों को नुकसान पहुंचाता है। अंततः यह रक्त–थक्के कोशिकाओं के स्तर को गिराने का कारण बनता है। इससे गंभीर, अनियंत्रित रक्तस्राव होता है। शुरू में इस बीमारी को इबोला हेमोरेजिक फीवर के नाम से जाना जाता था लेकिन अब इसे इबोला वायरस के नाम से भी जाना जाता है। इससे जो संक्रमित होते हैं उनमें से 90% लोग मर जाते हैं। इबोला का अभी कोई इलाज नहीं है, हालांकि शोधकर्ता इस पर काम कर रहे हैं।



इबोला वायरस



एयरपोर्ट में आधी रात के वक्त सन्नाटा था। विमान कब आयेगा, इसकी कोई सूचना नहीं थी।

इबोला से संबंधित विवरण भरने के लिए हमें कुछ कागज दिए गए। इस प्रक्रिया में एक लेजर गन को आंखों के समक्ष रख कर शरीर के तापमान को मापना था और फिर इसे फार्म पर नोट किया जाना था।

इसी बीत श्री चौधरी ने यह जानकारी दी कि आपकी उड़ान का प्रस्थान दो घंटे की देरी से होगा, अर्थात् यह 11.30 की बजाय अब 1.30 बजे होगी। क्योंकि वक्त काफी बीत गया था और रात का अंधेरा पूरी तरह छाया हुआ था। हम अपने नाइजीरिया प्रवास के दौरान और लागोस हवाई अड्डे पर श्री चौधरी के सभी प्रयासों और समर्थन हेतु उन्हें धन्यवाद देकर अलविदा कहा। उन्होंने भी अगले सफर की सुरक्षित यात्रा और कार्य के लिए शुभकामनाएं देकर हमें विदा किया।

नाजुक समय में इमीग्रेशन प्रक्रिया

इमीग्रेशन के लिए जब हम कतार में और आगे बढ़े तो देखा कि वहाँ केवल दो ही इमीग्रेशन अधिकारी थे, एक पुरुष और एक महिला। एक सामान्य कतार में लगे यात्रियों के लिए और दूसरा फास्ट ट्रैक कतार में लगे यात्रियों के लिए। यहाँ पर भी काफी भीड़ थी और इंतजार करना पड़ा। आगे अभी सुरक्षा द्वार में सामान और व्यक्तिगत जांच होनी थी। एक बार फिर से यहाँ पर भी बहुत कड़ी सुरक्षा व्यवस्था देखने को मिली। सभी को सुरक्षा जांच के लिए अपने कोट, बैल्ट, पर्स इत्यादि के साथ जूते भी उतारने थे। केवल एक प्रवेश द्वार ही संचालित था।

यहाँ पर मैंने यह भी देखा कि कतारों में लगे लोग अगर किसी कारणवश जैसे कि फ्लाईट के जाने का टाईम कम हो या फ्लाईट छूटने का डर हो, ऐसे हालात में कुछ यात्री जांच–पड़ताल करते अधिकारी को गुपचुप तरीके से पैसे देकर लाईन जंप भी कर रहे थे। यहाँ हमारे केबिन बैगेज को पुनः स्कैन किया गया। हमने राहत की सांस ली लेकिन यह राहत अधिक देर तक नहीं रहने वाली थी। इसके बाद वहाँ लगी टी.वी. स्क्रीन पर उड़ान संख्या और इसके प्रस्थान के संभावित समय की जानकारी ही नहीं थी, जिसके कारण हम सभी असमंजस की स्थिति में पड़ गये। एयरपोर्ट पर सुरक्षा की इतनी पेचीदा और थकाने वाली प्रक्रिया का कारण संभवतः नाइजीरिया के उत्तरी भाग में कानून व्यवस्था की हालत खराब होना भी हो सकता है। पिछले कुछ समय से वहाँ पर सैकड़ों की गिनती में लड़कियों को चर्मपंथी गुटों द्वारा अगवा कर लिया गया था तथा हालात काफी नाजुक थे।

शून्य ही शून्य में हंसी का मंज़र

रात का समय धीरे–धीरे बढ़ रहा था, रात के लगभग 11.30 बज चुके थे, उड़ान के संभावित समय के बारे में



आधी रात को आखिरकार नाईजीरिया से कीनिया यात्रा के लिए हमारा विमान आ ही गया।



लागोस–नैरोबी यात्रा के लिये बोइंग 737–800 विमान के अंदर का दृश्य

किसी को कोई जानकारी नहीं थी और न ही वहाँ कोई घोषणा हो रही थी। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। हमें संतुष्टि केवल इस बात की थी कि विमान रद्द होने की घोषणा भी अभी तक नहीं हुई थी। इससे हमें यह उम्मीद थी कि रात्रि 1.30 बजे के बाद विमान किसी भी समय प्रस्थान करेगा। इंतजार करते–करते आधी रात निकल गई थी। यहाँ तक कि जो महिला कर्मचारी गेट पर यात्रियों की चैकिंग के लिए ड्यूटी पर तैनात थी वो भी थक चुकी थी तथा वे वहीं यात्री का सामान चैक करने वाले काउंटरों पर ही लेटकर आराम करने लगी। कोई सार्वजनिक सूचना की घोषणा नहीं हो रही थी। एयरपोर्ट लगभग शांत हो चुका था। अब सिर्फ एक ही ध्वनि सुनाई दे रही थी और वह थी उन कर्मचारी महिलाओं की जो आराम के लिए लेटते ही जोर–जोर से खर्राटे मारने लग गई थी। इस नजारे से हमारे सभी के चेहरों पर एक मुस्कराहट तो जरूर आ ही गई थी।

रात के वक्त प्रसाधन कक्षों में सफाई बिल्कुल ही नहीं थी और ना ही टॉयलेट रोल थे। हाँ नलों में पानी थोड़ा–बहुत आ रहा था। यह एक बेहद तकलीफ झेलने वाला अनुभव था। यह प्रसाधन कक्ष महिला यात्रियों के लिए तो और भी तकलीफदेह रहा होगा। सूचना स्क्रीन पर फ्लाईट की कोई जानकारी नहीं थी। हम सभी चिंतित हो रहे थे कि विमान कब लैंड करेगा और कब प्रस्थान करेंगे। अंततः रात्रि 2.10 बजे, कीनिया एयरवेज का एक प्रतिनिधि हमारे पास आया तथा उसने प्रस्थान में हो रही देरी के लिए क्षमा मांगते हुए सूचित किया कि विमान जल्द ही प्रस्थान करेगा। हम एक बार फिर से अंतिम प्री–बोर्डिंग स्क्रीनिंग के लिए कतार में लग गये। खैर, किसी तरह विमान के अंदर पहुंचे। यह बोइंग 737–800 विमान काफी अच्छा था जिसमें 3x3 सीटों की दो कतारें थीं। इसमें 162 यात्री सवार हो सकते थे। इस विमान में ज्यादातर अफ्रीकी मूल के लोग यात्रा कर रहे थे और कुछेक भारतीय लोग और उनके परिवार भी इसमें सवार थे।



लागोस–नैरोबी हवाई यात्रा का रूट।

विमान लगभग पूरी तरह भरा हुआ था। उमस भरी गर्मी में आज का आधा दिन और लगभग पूरी रात का समय इस विमान तक पहुंचने के लिए ही लग गया था। आज की हुई खजल–खुआरी के कारण हुई थकावट से चूर–चूर हुए, मुझे बैठते ही नींद का आभास होने लगा। मैंने समय देखा, घड़ी पर रात्रि के 2.30 बजे से अधिक का समय हो रहा था और जल्द ही हम लागोस एयरपोर्ट से जोमो केन्याटा अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट, नैरोबी, कीनिया के लिए प्रस्थान हेतु तैयार थे। और मेरे लबों पर सुरक्षित यात्रा की प्रार्थना थी।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय मुख्य अतिथि को शील्ड प्रदान करते हुए।

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124